आमुखम्

सुहृद्वर पण्डित रामशरण जी शास्त्री ने जब एक दिन अकस्मात् आकर अपनी सर्वप्रथम काव्यकृति 'जवाहर-जीवनम्' की पाण्डुलिपि देखने को दी, तो उन्हें एक कवि-रूप में पाकर आश्चर्य ही हुआ। संस्कृत के एक विद्वान् के रूप में तो वे पहले से ही परिचित थे।

कोई व्यक्ति अपने प्रथम प्रयास में ही यदि इस कोटि का काव्य—गाथा-काव्य, खण्ड काव्य, महाकाव्य लिखने की क्षमता पा जाता है, तो यह मानना होगा कि उसमें एकाएक किसी नैसर्गिक प्रतिभा का उदय हुआ है, उसकी मानसिक स्थिति सहसा उन्नीत हुई है, उसका चित्त किसी ओर समाहित हो गया है, अथवा किसी महान् करुणा या वेदना से उसका हृदय द्रवित होकर छन्दों में स्पन्दित हो उठा है।

महर्षि वाल्मीकि का तापस-हृदय भी कभी करुणा विगलित हो छन्दों में प्रवाहित हो उठा था। वेदना का वही पुण्य प्रस्तर आदि-काव्य के नाम से आख्यात हुआ। निश्चय ही काव्य, कला अथवा संगीत का जन्म सुख या विलास की भूमि नहीं, वह वेदना की मर्मस्थली ही है।

प्रस्तुत काव्य की प्रेरणा भी कवि की स्वीकारोक्ति के अनुसार कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय-हार, राष्ट्र के कर्णधार और समस्त विश्व के परम-प्रिय, लोक-नायक प० जवाहरलाल नेहरू का एकाएक तिरोधान और तज्जन्य कवि-मानस की पीड़ा ही है।

भारत का जो एक महायुग अभी-अभी पार हुआ है, उसमें महात्मा गांधी, भगवान् तिलक, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, प० मदन मोहन मालवीय, विश्वकवि रवीन्द्र, योगी अरविन्द, देश रत्न राजेन्द्र, राष्ट्र-संघटक लौहपुरुष पटेल, अनुपम सेनानी सुभाषचन्द्र बोस आदि जैसे अनेक पुण्य श्लोक विभूतियां अवतरित हुईं। इन अनेक नामों के साथ जन-प्रिय पण्डित जवाहरलाल नेहरू का नाम भी उज्ज्वलतम नक्षत्रों की ही भांति इतिहास के पृष्ठों पर सदा दिपता रहेगा। ऐसे पुण्य चरितों को अपने समर्थ स्वर, संगीत और भाषा में गाकर कौन-सा व्यक्ति धन्य न होगा? ऐसी पावन स्पृहा वाले गायक, जिनकी कृतियों में हम अपने युग-पुरुषों का दर्शन

और सान्निध्य प्राप्त कर सकते हैं, अवश्य ही हमारे आदर और प्रेम के पात्र रहेंगे।

'जवाहर-जीवनम्' का गायक अपने प्रथम प्रयास मे ही ऐसा सुन्दर, प्राञ्जल और प्रौढ काव्य देने मे समर्थ हुआ है, इसके लिए वह स्नेह और धन्यवाद का पात्र है। उसका सम्बत राष्ट्र मे प्रति पुनीत भावना, सस्कृत के प्रति एकान्त निष्ठा और अपने चरित नायक के प्रति असीम श्रद्धा है। काव्य के (तथा कथित) उत्तम गुणो—छन्दो, अलकारो, चमत्कारो की ओर उसका कोई विशेष आग्रह नही दीखता और सभवत इसीलिए उसकी काव्य कृति मे सरल सवेदन-शीलता, सहज प्रेषणीयता और निर्बाध रसोपलब्धि अकुण्ठित रूप से विद्यमान है। यो सुधी जनो की सूक्ष्म दृष्टि काव्य के स्थल विशेषो की मार्मिकता, विदग्धता, अलकारिता और अर्थ गरिमा तक भी अवश्य जायेगी, ऐसा विश्वास है और काव्य के उक्त गुणो का प्रस्तुत कृति मे अभाव है, ऐसा भी नही कहा जा सकेगा।

यहाँ 'जवाहर-जीवनम्' काव्य का सर्वांगालोचन मेरा अभीष्ट नही है और न मैं इसके लिए सक्षम ही हूँ, किन्तु पाठको के दिग्दर्शन मात्र के लिए इसके कुछ मार्मिक स्थलो सन्दर्भों का उल्लेख कर देना उचित समझता हूँ।

'जवाहर जीवनम्' मे कवि धर्म और सस्कृति के पवित्र पृष्ठाधार पर पण्डित नेहरू की जीवन यात्रा अकित करता है। इसमे नेहरू परिवार के पूर्व-पुरुषो का काश्मीर से दिल्ली आगमन पश्चात् आगरा-प्रयाग मे उनका प्रवास, प० मोतीलाल जी का वर्चस्व, आनन्द-भवन वर्णन, जवाहर-जन्म आदि से लेकर उनके महा प्रस्थान तक की घटनाओ का रोचक, इतिवृत्तात्मक चित्रण है।

कवि की रचना-शैली पर वाल्मीकि-व्यास जैसे आर्ष कवियो का ही प्रभाव विशेष रूप से लक्षित है और काव्य का अधिकाश उन्ही की आर्ष शैली मे, अनुष्टुप छन्दो मे प्रणीत हुआ है। हाँ, कही-कही काव्य का रूप महाकवि कालिदास और बाण की रागिमा मे भी स्नात होकर निखरा है—और वहाँ वह अधिक कमनीय हो उठा है।

स्थल-विशेष पर कवि के भाव स्वत ही अनुष्टुप की लघु सीमा को अस्वीकृत कर अपने अनुरूप समर्थ भाषा और अभिव्यक्ति का विस्तार पा गए है। इन स्थलों पर कवि का रूप 'हर्ष चरित' के राजोद्यान एव 'कादम्बरी' के कल्पना वन के महनीय कवि बाण के समान ही अपना वैभव पा गया है।

इस सन्दर्भ में 'कमला-परिणय', 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी' और 'स्वर्गारोहणम्' के अध्याय द्रष्टव्य है।

काव्य के प्रारम्भ मे मगलाचरण के रूप मे भारत-माता की वन्दना करता हुआ कवि इसकी सम्पूर्ण आध्यात्मिक, प्राकृतिक, धार्मिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक विभूतियो को नमन करता है। 'जवाहर-वन्दनम्' का उत्तरार्द्ध बहुत ही सुन्दर कविता है।

इसी प्रकार 'काश्मीर-सुषमा' की कुछ पक्तियाँ सचमुच ही काव्य की नैसर्गिक शोभा से मण्डित हो उठी हैं :—

" वहन्तमनिलैर्मन्दैर्दहन्त मदनानलैः।
पूजितं पुष्पराशैश्च केकी कोकिल-कूजितम्॥
रम्योद्यानैः पयोयानैर्गानैस्तानैश्च गुंजितम्।
फल फुल्लैश्चलदलैः सलिलैः कल-कलायितम्॥ "

और लगता है—निम्नलिखित कुछ पक्तियाँ जैसे कवि-कुल-गुरु कालिदास की उपमा-समृद्ध निरुपम पक्तियों से उपमित होने को आकुल-उत्कण्ठ हो रही हो :—

" शूर-गौरव-नीरं हि गौर-पाटीर-सौरभम्।
शुभ्रं क्षीराब्धि-डिण्डीरं हंसं मानस-तीरजम्॥
स्वल्प-बुद्धिरहं जातो लेखने चातिदुस्तरे।
परमत्राफलोऽप्येवं भविष्यामि प्रशंसितः॥
चरित्रगौरवेणैव प्रयासः सफलो मम।
दन्तभंगोऽपि नागानां श्लाघ्यो गिरि-विदारणे॥"

जवाहर-जन्म की कथा एक जन-श्रुति पर आधारित है। इस प्रसग मे कवि ने बडी ही कुशलता से एक ब्रह्मलीन तपस्वी का उत्क्रमण और श्री जवाहर के रूप मे उसका अवतरण अकित किया है :—

"जातो जवाहरो योगी राजग्रह-समन्वितः।
मुक्तारत्नैः (मोती लालैः) समुद्भूतो मणिरूपो जवाहरः॥"

प० मोतीलाल नेहरू और स्वरूपा रानी का राजा दिलीप और सुदक्षिणा के रूप अकन भी बहुत ही समीचीन है। कवि ने वाल्मीकि, व्यास, कालिदास प्रभृति महाकवियो द्वारा निर्दिष्ट धार्मिक मर्यादाओं का पुनराकलन

पर अपने लोकनायक के प्रादुर्भाव को कठिन तपश्चर्या और पुण्य सञ्चय का ही फल उद्घोषित किया है —

" गुरोर्धेनु वशिष्ठस्य दिलीपो नन्दिनीं यथा ।
अहर्निशमन्वगच्छन्मोतीलालस्तथैव हि ॥

प० नेहरू का बाल्य जीवन जिस धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पर समृद्ध हुआ—उसका उल्लेख करते हुए कवि ने लिखा है

जातो जवाहरोऽस्माकं प्रियो विश्व प्रकाशक ।
कुलोपरीत संस्कार आर्य सम्भार धारक ॥

पर माता स्वरूपा तु जवाहर-परायणा ।
गंगा यमति स्नानार्थं सत्संगार्थं दिने दिने ।
प्रभु भक्ति रता नित्य दान पुण्य रता शुभा ॥"

राष्ट्र शोक' अध्याय मे कवि अपनी तीव्रतम संवेदना के सघात मे जैसे घूर्णिवात से उत्प्रेरित हो एक अकल्पित ऊचाई पर पहुँच जाता है। उसके सभी पूर्वाग्रह सभी आस्थाएँ निष्ठाएँ बिखर गयी हैं। वह जैसे अपने समस्त धार्मिक साम्प्रदायिक सामाजिक और जातीय पक्षपात के शृंखल से मुक्त एवं निष्पक्ष द्रष्टा साक्षी और भोक्ता के रूप मे एक महा विभीषिका का लोमहर्षक चित्र आंक रहा है—यहाँ उसका स्वर एक रस सिद्ध कवि का है और वह महाकाव्य की भाषा बोल रहा है —

हा पुत्र ! पुत्रि ! क्वासि त्वं हा प्राणनाथ ! पाहिमाम् ।
पद ताल ! स्वसा ! मात क्व गता मम बान्धवा ॥
रक्ष मां पाहि मां दुःखी दीना शरणमागताम् ।
गुरुधामवतारणां पीठानामपि मेदिराम ॥
मानद्वारे गुरुद्वारे कश्चार्थिन समन्विताम् ।
गिरिजा मस्जिदसु चापेशागुमावुपाभिराम् ॥

• •

किं श्रोतो दीन पालोऽसि किं धर्मोऽधर्मसाधित ।
किं पन्थ कुपथ यात विभीषोऽभीशतां गत ॥
किं राम कृष्ण गुरवो बुद्धवीरौ सुरा क्षिता ।
देवो गुरुध्मद सर्वे दुराचार प्रवर्तका ? ॥'

'स्वर्गारोहणम्' में कवि की वेदना चरम परिणति पर है। दिल्ली से दूर रहते हुए भी जैसे उसने अपनी अन्तर्दृष्टि से सम्पूर्ण दृश्यावली का प्रत्यक्ष किया है और जैसे लक्ष लक्ष हृदयों में पिरोया हुआ, उसने इस परम दुःख को आत्मसात् किया है। यहाँ उसकी लेखनी सर्वाधिक धन्य हुई है। उसका कवि-मानस शोक-संकुल मानव लोक से ऊपर उठकर उस दिव्य-लोक की भी परिक्रमा करता है, जो मानव-कण्ठों की समवेत वन्दना-स्वर से स्फुट हो अश्रु-पुष्पों की वर्षा करता है और जहाँ करुण-कातर मेघों का अन्तर एक गुरु-गंभीर रुदन स्वर से गूँज उठा है :—

" जवाहरोऽमरो नित्यं पितृभ्योऽप्यमरोऽस्मि वै ।
इति घोषमृगैर्देवैर्वर्यं स्वर्गे कृतम् ॥
आश्वासनार्थं लोकानां सलिलाम्बुलक्षं कृतम् ।
मेघैर्गर्जनव्याजेन नादो रोदनजः कृतः ॥"

'श्रद्धाञ्जलयः' में विश्व के मनीषियों, चिन्तकों, नेताओं और महापुरुषों के निश्छल श्रद्धा गद्गद् उद्गार हैं, जो स्वयं अमर काव्य के अंश हैं। कवि ने उन्हें मात्र अपनी भाषा का शृंगार अर्पित कर सम्मुख रखा है।

कोई भी महच्चरित स्वयमेव महाकाव्य होता है और उसका सम्यक्-रूपेण चितेरा भी कोई महाकवि ही हो सकता है। युद्ध-सन्नद्ध कौरव पाण्डव-सैन्य-समूह के बीच संशय-विमूढ़ अर्जुन को भगवान् कृष्ण ने क्या उपदेश दिया, इसका अभिज्ञाता और व्याख्याता महर्षि व्यास जैसे व्यक्ति ही हो सकते हैं। इसी प्रकार, पण्डित नेहरू जैसे चरित का बाह्य आकलन और ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण उतना दुष्कर न भी हो, किन्तु ऐसे व्यक्ति के आन्तर जीवन का अंकन उतना सुगम भी नहीं है। उनकी स्वयं की लिखी 'मेरी कहानी' की मार्मिकता महान्-से महान् कवि के लिए भी स्पर्द्धा की वस्तु है। ऐसा सृजन काव्य विश्व साहित्य में भी कितने विरल हैं! तो, इस दृष्टि से 'जवाहर-जीवनम्' का मूल्यांकन कवि के प्रति अन्याय होगा। वह हमारे अभिनन्दन का पात्र इसलिए तो है कि वह इस साधु प्रयास में अग्रसर हुआ है और अप्रत्याशीत रूप में सफल भी।

आशा है, कवि का यह श्रद्धा-पुष्प गुरुजनों एवं सुहृद्वरों को अवश्य ही पुलकित करेगा और संस्कृत-साहित्य के नन्दन-वन में उसके इस शिशु-उन्मेष का मधुर आलाप सदा अम्लान रहेगा! इति शम्

दिल्ली,
कार्तिक पूर्णिमा, २०२३ वि०

—प्रभुदेव शास्त्री

विषय-सूची

परिशिष्टम् पृष्ठ

चित्र-सूची



कुछ सम्मतियाँ

श्री रामशरण शास्त्री जी द्वारा लिखित "जवाहर-जीवनम्" नामक संस्कृत काव्य के कतिपय महत्वपूर्ण स्थलों का मैंने निरीक्षण किया। प्रस्तुत काव्य राष्ट्रनायक स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू के जीवनचरित के आधार पर लिखा गया है। सुमधुर शैली और प्रांजल भाषा में यह बहुत ही प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्हें इस प्रयास के लिए बधाई देता हूँ।

डा० मंडन मिश्र,

दिल्ली — महामंत्री, अ०भा० संस्कृत साहित्य-सम्मेलन एवं

६ अगस्त, १९६६ — निर्देशक, अ०भा० संस्कृत-विद्यापीठ, दिल्ली



मैंने श्री प० रामशरण शास्त्री का लिखा "जवाहर जीवनम्" नामक ग्रन्थ यत्र-तत्र पढ़ा, चित्त प्रसन्न हुआ। श्री जवाहरलाल जी का चरित्र सरल संस्कृत गद्य-पद्यों में लिखकर शास्त्री जी ने संस्कृत भाषा की तो सेवा की ही है, देश की सेवा भी की है, इस पुस्तक को पढ़कर संस्कृत के छात्र भी प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। आशा है यह पुस्तक सम्मान प्राप्त करेगी।

दिल्ली — परमेश्वरानन्द,

११-८-६६ — महामहोपाध्याय—साहित्य-व्याकरणाचार्य



मैंने श्री प० रामशरण शास्त्री-विरचित संस्कृत काव्य "जवाहर जीवनम्" का अनुशीलन किया। राष्ट्र-नेता स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के चरित्र को महाकाव्य की शैली से प्रस्तुत करने वाला यह ग्रन्थ बड़ी मनोहारी शैली में लिखा गया है। सुबोध और सरल संस्कृत में रचित नेहरू का यह जीवन-चरित संस्कृत-प्रेमियों को अवश्य ही रुचिकर होगा, इसमें सन्देह का अवकाश नहीं है। श्लोकों के साथ स्थान-स्थान पर प्रवाहमयी प्रांजल संस्कृत गद्य का भी इसमें प्रयोग है, जो चरित-वर्णन तथा विशिष्ट प्रसंग-वर्णन में सौष्ठव उत्पन्न कर देता है। मुझे विश्वास है कि विद्वत्समाज में "जवाहर जीवनम्" का सम्मान होगा। इसके द्वारा संस्कृत भाषा के प्रचार में भी योग मिलेगा।

विजयेन्द्रस्नातक,

रीडर, हिन्दी-विभाग,

दिल्ली १०-८-६६ — दिल्ली-विश्वविद्यालय



शुभाशीर्वादाः

राष्ट्रपति भवन
नयी दिल्ली–४
दिनाक १३ अगस्त, १९६६

प्रिय श्री शास्त्री,

आपका पत्र मिला, मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि आपने हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू के सम्बन्ध मे श्री "जवाहर-जीवनम्" नाम का सस्कृत काव्य लिखा है और उसे आप प्रकाशित करने जा रहे है। मुझे इसमे सन्देह नही कि आपके काव्य का सस्कृत जाननेवाले लोगो द्वारा विस्तृत अध्ययन होगा। शुभ कामनाओ सहित, भवदीय,

स० राधाकृष्णन्

•

उपराष्ट्रपति, भारत, नई देहली
अगस्त २२, १९६६

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनाक १९ अगस्त, १९६६ का प्राप्त हुआ, धन्यवाद। मुझे यह जान कर खुशी हुई कि आपने स्व० प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू के जीवन पर सस्कृत काव्य लिखा है। मै आपके काव्य की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

—जाकिर हुसैन

•

२८ अक्टूबर, १९६६ ई० दिन शुक्रवार को श्रीमान् कविरत्न पण्डित रामशरण शास्त्री जी ने श्री 'जवाहर-जीवनम्' पुस्तक की टाइप लिपि दिखायी जिसको पढ कर आपके विशेष पुरुषार्थ पर हर्ष हुआ। आशा है देश विदेश के मनीषी जन इसका हार्दिक अभिनन्दन करेंगे।

स्वामी अच्युतानन्द, परमहस, उदासीन
गीता भवन—बरनाला

•

श्री रामशरण शास्त्री ने नेहरू जी पर संस्कृत में कुछ पद्यमय रचना है। मैंने कही-कही से उसे देखा है। अच्छा प्रयास सुबोध संस्कृत में किया मुझे विश्वास है कि इस रचना का आदर होगा। मैं शास्त्री जी के प्र को बधाई देता हूँ।

नई दिल्ली, प्रकाशवीर शास्
१०-८-१९६६ एम० पी०

●

भारत के भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री पंडित श्री जवाहरलाल जी की जीव संस्कृत मे लिख कर प्रकाशित करने का श्री रामशरण शास्त्री जी का उद् श्लाघा-योग्य है। इस आदि काल की भाषा की उन्नति का यह पग आप योग्यता प्रकट करता है।

श्री भैणी साहिब, श्री सतगुरु
८ आश्विन, २०२३ वि० जगजीत सिंह जी महाराज

●

श्रीयुत प० रामशरण जी शास्त्री द्वारा विरचित 'जवाहर जीवनम् नामक काव्य सुबोध एवं सरल संस्कृत मे पद्यमय देखने का अवसर मिला यत्र तत्र अनुशीलन से सुन्दर मालूम हुआ। उसके साथ हिन्दी भाषा मे अनुवा भी उपादेय है। संस्कृत साहित्य की इतिहास-शृंखला मे यह भी एक कड़ी क कार्य करेगा।

राजपण्डित डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल शास्त्री
एम ए, पी एच डी ज्योतिषाचार्य
प्रधानपण्डित—बिरला मंदिर, नई दिल्ली।

Raj Bhavan
Srinagar
19th Sept 1966

Shri Ram Sharan Shastri
Ramashram,
Barnala (Sangroor),
Punjab,

Dear Sir,

I am desired by the Governor Dr Karan Singhji to send you his good wishes for your 'Jawahar Jeevanam' that you have written in Sanskrit

Yours faithfully,
*sd/*Jalal Din,
Secretary to the Governor

आत्म-निवेदनम्

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

२८ मई, सन् १९६४ को राजकीय उच्चविद्यालय, बरनाला में प्रधानाध्यापक श्री सदानन्द जी ने प्रातःकालीन दैनिक सभा (उस दिन की शोक-सभा) में आपतित आकस्मिक वज्रपात पर कुछ कहने का आदेश दिया। खड़े होते ही अचानक मेरे मुख से यह पंक्ति निकली—"हर लिया तूने जवाहर हे हरे! अब धरा में क्या धरा है रह गया!" तब से निरन्तर मन में भाव प्रगट करने की टीस उठती रही। पर अवसर न मिलने से—"मन ही मन पीर पिरीत्रै करै।"

आगे ग्रीष्मावकाश अगस्त मास में, छोटे भाई श्री राम लालजी शर्मा, एम० ए० के यहाँ चैल (शिमला) में १५-१६ दिन ठहरने का अवसर मिला, तभी अपने हार्दिक उद्‌गारों को इन शब्दों के रूप में प्रकट कर सका हूँ।

अपनी शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता एवं परिस्थिति को जानते हुए भी अप्रलिखित विशेष आधारों के आश्रय से उत्साह दिखा रहा हूँ—

१—जिस महापुरुष ने अपने भाषण एवं लेखन की समस्त क्षमता राष्ट्र की स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए समर्पित करदी, उन्हीं के विषय में कुछ लिखने में मैं क्यों संकोच करूँ?

२—श्री पं० जवाहर लालजी का पंजाब में सर्व-प्रथम बन्धन मेरे जन्म-ग्राम जैतो में अकाली-आन्दोलन में हुआ था, तभी से—बाल्य-काल से ही मेरे मन में उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति के संस्कार चले आ रहे थे।

३—माँ-बाप, बहिन-भाई तथा प्रिय स्वजन बन्धुओं द्वारा तोतली बोली बोलनेवाले अबोध बालकों के बोलने पर सब प्रबुद्ध लोग रुचिपूर्वक सुनते एवं प्रसन्न होते हैं। इस आधार से भी मैं अबोध इस रचना-कार्य में प्रवृत्त हुआ हूँ। पाण्डित्य या कवित्व का अधिकार न होते हुए भी पण्डितों तथा विज्ञ कवियों के चरणों का उपासक बनने की मेरी हार्दिक अभिलाषा आरम्भ से ही रही है।

४—माँ सुर-भारती के नन्दन-वन में इधर-उधर घूम फिर कर वहाँ के शुभसौरभ पूरित सुमन-गुच्छों से पावन जीवन पवन को प्राप्त करूँ तथा पूज्य समर्थ विद्वानों के चरणों में निवेदन करूँ कि वर्तमान महा-पुरुषों के जीवन-चरित्रों को अमर वाणी संस्कृत में लिखकर जहाँ उनके जीवन-प्रवाह द्वारा भावी समाज को सत्प्रेरणा के अजस्र स्रोत दें वहीं पर संस्कृत-पयोनिधि में भी कुछ अमूल्य रत्न भर जायें। निरन्तर महा नदियों के सम्मिलन से ही रत्नाकर का लोक-उपकारी रूप बना रह सकता है। वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, दर्शन-शास्त्र, पुराण, स्मृति, धर्म, नीति, अर्थशास्त्र, ज्ञान-विज्ञान एवं अन्य महत्वपूर्ण ऐहिक तथा आमुष्मिक मार्ग-प्रदर्शक विषयों का मूल-स्थान संस्कृत कल्प-वृक्ष ही है।

पुराण पुरुषोत्तम भगवान् श्री रामचन्द्र जी के समकालीन अथवा बाद के ऋषि-महर्षियों ने उनकी अथवा उनसे सम्बन्धित कल्याण-प्रद गाथाओं की सरयू बहाकर, त्रिभुवन पावनी, सुहावनी, मनभावनी सरस सुर-भारती के चमत्कारों द्वारा ही विश्व को अमृत-कलश दिये। नन्द-नन्दन आनन्द-कन्द भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र के पवित्र चरित्रों एवं तत्सम्बन्धी आख्यानों की कालिन्दी की शीतल मन्द सुगन्धित तरंगों की भंगिमाओं का स्वरूप भी देव वाणी संस्कृत द्वारा ही आजतक संसार को त्रिविध-तापों एवं पंच-क्लेशों से मुक्ति दिला रहा है।

महाभारत एवं अन्य पुण्यश्लोक ऋषि-महर्षि, भक्त, शूर-वीर, दानी नरेशों तथा पवित्र-चरित्र पतिव्रता वीरांगनाओं के महिमा-रस की सुर-सरिता भी सुर-वाणी द्वारा ही बहाकर ऐहिक एवं पारलौकिक लक्ष्य-लाभ का मार्ग निर्देश किया गया है।

अश्वघोष, कविकुल-गुरु कालिदास, बाण, भारवि, माघ, दण्डी, मम्मट, उव्वट, कैय्यट, पण्डितराज जगन्नाथ तथा अन्य प्रातर्वन्दनीय स्वनाम-धन्य महाकवियों ने गद्य-पद्य-मय प्रवाह से माँ सरस्वती की स्निग्ध ऊर्मियों के उत्तुंग कल्लोलों से उत्थित हिमावह सीकरों में न केवल भारत को ही अपितु विश्व के सहृदय मनीषियों को आकल्प आल्हादित होने का अक्षय भाण्डार दिया है। यही नहीं, संस्कृत वाणी के समुद्र से अनेकों भाषाओं के घन-मण्डलों ने उठ-उठ कर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में सदा सुखद अमृत-वर्षा की है। तब फिर सम-सामयिक ऋषि-कल्प पण्डित-मण्डल भी इधर से उदासीन न रहे, यह भी मेरे प्रयास का निवेदन प्रकार एवं उद्देश्य है। शेष रही—दृष्टिकोण या विचार-साम्य की बात। सो यह तो त्रिकाल में भी असम्भव है। कुछ हितैषी सज्जनों ने श्री पं० जवाहरलालजी से धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक मत-

भेद होते हुए भी मुझे यथावसर सुझाव दिये, किन्तु उन सज्जनों से मेरा यही विनम्र निवेदन है कि –गिल्ली-डण्डे के खेल में रम मग्न बालक को हितैषी माता पिता कई प्रकार के अवगुण बताकर उससे निवृत्त होने तथा हितावह गृह-कार्य में प्रवृत्त होने को कहते रहते हैं। परन्तु वह बालक तो अपने खेल के धुन में ही मस्त-रमलीन रहता है। इसी प्रकार इस अपने खेल में मुझे आकर्षण है। पर, हाँ, मेरा यह उद्योग खेल होते हुए भी समाजघाती दुर्व्यसन जुए का खेल नहीं है।

मेरी इस रचना में व्याकरण, छन्द, अलङ्कार, गुण एवं अन्य काव्य-लक्षणों के अन्वेषी विद्वत् समाज को तो केवल निराशा ही मिलेगी। अन्त में एक बार पुनः पूज्य सहृदय वृद्ध विद्वत् समाज से शुभाशीर्वाद की कामना करते हुए, बड़े सकोंच से उनके चरणों में उपस्थित होने का साहस कर रहा हूँ, क्योंकि "खद्योतस्तु विकम्पते प्रचलितु मध्येऽमितेजस्विनाम्।" इति शम्।

नमोऽस्तु सर्वदेवेभ्यः

—रामशरण शास्त्री





परम्परा

"मैं इस बात के प्रति भी जागरूक हूँ कि मैं भी सभी की तरह उस अटूट शृंखला की एक कड़ी हूँ जो इतिहास के उषाकाल से युगों-युगों से चली आ रही है। यह शृंखला मैं तोड़ना नहीं चाहता क्योंकि मैं इसे धरोहर मानता हूँ और इससे प्रेरणा प्राप्त करता हूँ। अपनी इस इच्छा के साथ और हमारी महान सांस्कृतिक विरासत के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में मैं यह अनुरोध करता हूँ कि मेरी मुट्ठी भर भस्मी इलाहाबाद की गंगा में प्रवाहित की जाय, जो गंगा में प्रवाहित होकर उस महासमुद्र में जाय, जो हमारे देश के पांव पखारता है।"

—जवाहरलाल नेहरू

सादर-समर्पणम्



या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
शुद्ध-विद्या गुण ग्रामा रमावत् रम्य सम्पदा ।।
यथानुकूला कल्याणी सर्व-जीव सुखावहा ।
प्रधान मन्त्रिरूपेण देश पालन तत्परा ।।
कमला-जवाहराधारा सारा भारत-धारिणी ।
नित्य सत्यगता श्रीनिरिन्दिरेति गति प्रदा ।।
तस्यै समर्प्यते चैतत् 'श्री जवाहर जीवनम्' ।
शास्त्रिणा रामपूर्वेण शरणेनातिभावतः ।।

नेहरू-बाल-दिवस



क्षमा, प्रेरणा और वात्सल्य की पवित्र मूर्ति, लेखक की पूज्य माता श्रीमती हरदेवी श्रद्धालु-सेवक पड़ोसी परिवार के बच्चों को गोद में लिये हुए।

श्रीमती इन्दिरा देवी, धर्म-पत्नी वैद्यराज श्री मिलखी रामजी, लोक-सेवक औषधालय, बरनाला (बैठी हुई बायें) पण्डित जी के जन्म-दिन पर बाल-दिवस के उपलक्ष्य में प्रेम से बच्चों को भोजन कराती हुई। आप सदा बच्चों तथा विद्वानों की सेवा में श्रद्धा-भक्तिपूर्वक तत्पर रहती है।

जवाहर-जीवनम्

वन्दे भारत-मातरम्

शङ्ख-चक्र-गदाधारामुज्ज्वलां सौम्यरूपिणीम् ।
अमलाङ्कमलाभासां वन्दे भारतमातरम् ॥१॥
शङ्खेन स्वर-संयुक्तां, चक्रेण गति-शालिनीम् ।
गदया शक्ति-सम्पन्नां वन्दे भारतमातरम् ॥२॥
कमलैः कोमलां हृद्यां हासिनीं सुमनोहराम् ।
सुवासां च विकासाङ्गां वन्दे भारतमातरम् ॥३॥
गुण्या पुण्या शौर्यरूपा, दिव्या वन्द्या सुसस्कृताम् ।
लक्ष्मी सरस्वती दुर्गां वन्दे भारतमातरम् ॥४॥

अर्थ—शंख चक्र, गदा, पद्म को धारण करने वाली, उज्ज्वल सौम्य रूप वाली तथा निर्मल कान्तिवाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

शंख से वेदादि अनन्त शब्द ब्रह्मवाली, चक्र से सदा ही अनन्त गति-सामर्थ्य-सम्पन्न, गदा से अमित शक्ति-युक्त भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

कमल से कोमल, हृदय को सुखद, प्रसन्न, मनोहर, सुवसना और खिले हुए अंगोंवाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

अच्छे गुणों वाली लक्ष्मी, पुण्यों वाली सरस्वती और शौर्य वाली दुर्गा, दिव्य, वन्द्य और श्रेष्ठ भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

सुजला सुफला शस्य-श्यामलामतिगौरवाम् ।
सुमुक्ता-मणि-सम्पन्ना वन्दे भारतमातरम् ॥५॥
ज्ञान-शौर्य-चरित्रादियुक्तैः पुत्रैरुपासिताम् ।
धृत्यादि-गुण-धर्मा हि वन्दे भारतमातरम् ॥६॥
सुबुद्धा सुजिना स्वामिदयानन्दान्विता बुधाम् ।
रामकृष्णविवेकादिरामतीर्थैः सुधाम्बुदाम् ॥७॥
लाल-पाल-दयालैश्च राजेन्द्रैरतिरंजिताम् ।
सठाकुरा सपटेला वन्दे भारतमातरम् ॥८॥
मालवी-मोदमधुरा, टण्डनैरतिमण्डिताम् ।
आजाद-भक्त-दत्ता हि वन्दे भारतमातरम् ॥९॥
मोती-जवाहरैर्ऋद्धा गान्धिना तिलकान्विताम् ।
सारविन्दा स-सुभाषा वन्दे भारतमातरम् ॥१०॥
अनेक-शास्त्र-संयुक्ता वेदधर्मानुमोदिताम् ।
सुसाहित्या सेतिहासा वन्दे भारतमातरम् ॥११॥

अर्थ—अच्छे जल, फल और खेती से हरित, अति प्रतिष्ठित, अच्छे मोती-मणियों से सम्पन्न भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

ज्ञान, शौर्य, चरित्रादि युक्त, पुत्रों से उपासित, धृत्यादि गुण-धर्म-सम्पन्न, भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

भगवान् बुद्ध, जिन, स्वामी दयानन्द से गौरवान्वित, आत्मज्ञान से आलोकित, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द तथा रामतीर्थ के अमृत से अभिसिंचित भारतमाता को प्रणाम करता हूँ ।

श्री लाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और वल्लभभाई पटेल से पूर्ण शोभित भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

श्री पं० मदनमोहन मालवीय जी के यश से मधुर, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जी से अलंकृत, श्री चन्द्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह और दत्त वाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

श्री पं० मोतीलाल, जवाहरलाल, गांधीजी, तिलक, अरविन्द और सुभाष जी की महानता से समृद्ध भारतमाता को नमस्कार करता हूँ ।

अनेक शास्त्र-संयुक्त, वेद-धर्मानुमोदित, अच्छे साहित्य और इतिहास-युक्त भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

विद्योद्योगैर्महाभागैः राधाकृष्णन् महोदयैः ।
पूज्या दर्शनतत्त्वज्ञा वन्दे भारतमातरम् ॥१२॥
शास्त्रिणा रक्तवीरेण धीरेणातिमनस्विना ।
पूजितामजिता नित्यं वन्दे भारतमातरम् ॥१३॥
सकस्तूरा सस्वरूपा सविजया ससरोजिनीम् ।
सकमलामिन्दिरायुक्ता वन्दे भारतमातरम् ॥१४॥
विनोबावामनेनात्र त्याग-वैराग्य-शोभिताम् ।
सर्वोदयेन-सन्तुष्टा वन्दे भारत-मातरम् ॥१५॥
गंगा-सरस्वती-पूता कालिन्दी-सुविभूषिताम् ।
हिमालय-किरीटां हि वन्दे भारतमातरम् ॥१६॥

अर्थ—महाभाग राधाकृष्णन् महोदय जैसे विद्वानों के सहयोग से विश्व-वन्द्य, दर्शन-विद्या की आदि जननी भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

अति मनस्वी, धीर श्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा पूजित और शत्रुओं से सर्वथा अजेय भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

माता कस्तूरबा, स्वरूपरानी, विजयालक्ष्मी, सरोजिनी, कमला तथा इंदिरा जैसी मातृ शक्ति-युक्त भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

पूज्य वामनरूपी श्री विनोबा द्वारा त्याग-वैराग्य से शोभित, सर्वोदय से सन्तुष्ट भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

गंगा, सरस्वती, यमुना से पवित्र और विभूषित, हिमालय के मुकुट वाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।



श्रीगान्ध्यष्टकम्

सत्य-व्रत धर्म-रत अहिंसा-धन-साधनम् ।
विश्ववन्द्य महात्मान गान्धिन प्रणमाम्यहम् ॥१॥
समृद्धे गौरदेशेऽपि गत्वा कौपीन-धारिणम् ।
धृतोपवस्त्रं सामान्यदेश-वेश-विभूषितम् ॥२॥
सयमेनोपवासैश्च कृशमात्मबल परम् ।
गौरेयैर्दुर्जय नित्य सत्याग्रह-परायणम् ॥३॥
अल्ला-रामादि-भेदेषु, निर्भेद गतमत्सरम् ।
दीनानाथ-सहायार्थं सर्वथा विहितत्वरम् ॥४॥
जातिवर्ण-विभेदाना नीचोच्चाना भयप्रदम् ।
वैषम्य नाशयित्वा तु सर्व-जीवाभयप्रदम् ॥५॥
क्लेश हरिजनाना वै हरणार्थं दृढव्रतम् ।
कृत्वा वास तदा तेषु, तेषामुद्धार-तत्परम् ॥६॥
बिरला-बन्धुसदृशं श्रद्धा-भक्ति-समन्वितम् ।
उन्नेतु कुटुम्बं हि तेषा गृहमुपागतम् ॥७॥
राष्ट्र-पितर विश्व-हित विरत जीवतापत ।
ज्ञानवृद्ध सदाबुद्ध गान्धिन प्रणमाम्यहम् ॥८॥

अर्थ—सत्य-व्रत, धर्मरत, अहिंसा-धन से साधनवान्, विश्व-वन्द्य श्री महात्मा गांधी को प्रणाम करता हूं।

समृद्ध इंग्लैण्ड में जाकर भी, भारतीय वेशभूषा, सामान्य चद्दर और कौपीन को धारण करने वाले, सयम व उपवासो से शरीर से निर्बल भी, बलवान्, अंग्रेजों से दुर्जय, सत्याग्रह-परायण, अल्ला रामादि भेदों में निर्भेद निर्मत्सर दीन अनाथो की सहायता के लिए सर्वथा शीघ्रता करने वाले नीच-ऊंच, जाति-वर्ण विभेदों के भयप्रद, विषमता को नष्ट करके सर्वजीव अभयप्रद, हरिजनो के कष्टों को हरने के लिए दृढ-व्रत, उनकी बस्ती में रह कर उनके उद्धार में तत्पर, श्रद्धा-भक्ति समन्वित बिरला बन्धुओं के सदृश कुटुम्ब को उन्नत करने के लिए उनके भवन (बिरला हाउस) में आने वाले, राष्ट्र के आश्रय, विश्व हितैषी, जीवो का सब प्रकार के कष्ट हरने से विरत, ज्ञान में वृद्ध तथा सदा जागरूक महात्मा गांधी को प्रणाम करता हूं।

श्रीजवाहर-वन्दनम्

भारताराति-विध्वंस-कारकं क्लेश-हारकम् ।
कृष्णा-विजयाग्रज वीरं कमलाकर-धारकम् ॥१॥
जवा(पा) कुसुम-सकाश मोतीलालात्मज हरम् ।
लाल स्वरूपा-सम्भूत वन्दे लाल जवाहरम् ॥२॥
बाल-लील वृद्धशील यौवने जव-भावनम् ।
धृतोत्साह कृतोद्योग वन्दे लाल जवाहरम् ॥३॥
दीनाधीन विश्व-वन्द्य सर्व-भूत-सुहृत्तमम् ।
सत्याग्रह सत्यव्रत वन्दे लाल जवाहरम् ॥४॥
सदा सदानन्द-कर असदानन्द-हारकम् ।
गौरेयानाचार-हर वन्दे लाल जवाहरम् ॥५॥
बालाना शिशु-लीलाना पठता बल-शालिनाम् ।
पितृव्य-पदवी-यात वन्दे लाल जवाहरम् ॥६॥
जवाहरो जयत्वद्य बाल-सौम्य-विधायक ।
हरो हरिजनोद्धारो रक्षक क्षण-दायकः ॥७॥

अर्थ—भारत के शत्रुओ के विध्वसक, पाप हर, कृष्णा और विजया के अग्रज, कमला के स्वामी, जवा (पा) कुसुम के समान दीप्तिमान, मोतीलाल के दु ख हर सुपुत्र माता स्वरूपा के लाल श्री जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ।

बाल-लीला प्रिय, वृद्धो के समान अनुभव-शील, यौवन मे प्रगतिशील भावना वाले, उत्साही और उद्योगी जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ।

दीनो के अधीन, विश्ववन्द्य, सर्व जीव-प्रिय, सत्य-आग्रह और सत्यव्रत जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ।

सत्पुरुषो को सदा आनन्द देने वाले, दुष्टो के सुख को हरने वाले, तथा अंग्रेजो के अनाचार हर जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ।

शिशु लीला करने वालो और अध्ययनरत बलशाली युवको के चाचा बने जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ।

बाल सुखदाता, सर्व दु ख हर, हरिजनोद्धारक, रक्षक, आनन्ददाता जवाहर की जय हो।

जकारं तु जगन्नाथात् वासुदेवाद्धि वाक्षरम् ।
हरं हरि-हरान्नीत्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥८॥
गौरा हि राक्षसा नित्य पीडयन्ति महीमिमाम् ।
दृष्ट्वा सुर-पुरं हित्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥९॥
धृत्यादीन् धर्म-नियमान् मनुराज-निदर्शितान् ।
गान्ध्युपदिष्टान् गृहीत्वैव रक्षकोऽभूज्जवाहरः ॥१०॥
गान्धी-गीता-रहस्य वै श्रुत्वाऽहिंसा प्रदर्शिते ।
सत्याग्रह-महायुद्धे रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥११॥
रूसामेरिकनामभ्या वर्गद्वय विभाजितम् ।
जात विश्व-विनाशाय रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१२॥
ब्रिटेना फ्रासदेशीया मिश्रा युद्धाय तत्परा ।
स्वेजाख्ये विषये तत्र रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१३॥
परीक्षणमाणविक माणवक-विनाशनम् ।
प्रतिक्षण रण मत्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१४॥

अर्थ—जगन्नाथ से ज, वासुदेव से व तथा हरि-हर से हर वर्ण लेकर जवाहर भारत के रक्षक बने ।

अंग्रेज राक्षस नित्य इस भूमि को दुःखी करते है, यह देख सुरपुर को छोड़ जवाहर भारत के रक्षक बने ।

श्री मनुराज-निर्दशित, गांधी जी द्वारा उपदिष्ट, धृत्यादि धर्म-नियमों को ग्रहण कर श्री जवाहर भारत के रक्षक बने ।

अहिंसा-निर्दिष्ट सत्याग्रह के महायुद्ध मे गांधी-गीता के रहस्य को सुन कर श्री जवाहर भारत के रक्षक बने ।

रूस और अमेरिका नाम से बटे हुए दो वर्ग विश्व विनाश कर रहे थे, तब श्री जवाहर विश्व के रक्षक बने ।

ब्रिटेन, फ्रांस तथा मिश्र के लोग स्वेज नहर के विषय मे युद्ध-तत्पर थे, तब श्री जवाहर विश्व-रक्षक बने ।

अणु शक्ति के परीक्षण को मानव-सन्तान-विनाशी तथा प्रतिक्षण युद्धोत्पादक जान श्री जवाहर विश्व-रक्षक बने ।

अथ गाथारम्भः

अवतरणिका

दिल्ल्यामतिविशालायां यावनं रतिभावनम् ।
शासनमभवत्पूर्वं सुखदं प्रतिभावनम् ॥१॥

फर्रुखसियरस्तत्र राजाभून्न्याय-लोचनः ।
धृत्यादि-धर्मसम्पन्नः योग्य-धर्म-विरोचनः ॥२॥

एकदा शुभ-वेलायां काश्मीरं गतवानयम् ।
देशाटनं शासकानां प्रण-रक्षण-लक्षणम् ॥३॥

अलौकिकं हि सौन्दर्यं तत्रत्यमतिशोभनम् ।
दृष्ट्वाभून्मोहितः स्वर्ग्यं यथैन्द्रं नन्दनं वनम् ॥४॥

काश्मीर-सुषमां वक्तुमक्षमोऽस्मि समासतः ।
अशेषेणापि निखिलां सृष्टखलां स्वर्गसन्तते ॥५॥

चतुर्दशानां विद्यानां रत्नानामपि सुन्दरम् ।
स्थानं चानुपमं रम्यं पुण्योदर्क-समन्वितम् ॥६॥

नद्यद्रि-भरितं भूरि, तडागोदर-संस्थितम् ।
उद्यानोद्रेक-हरितं कला-कौशल-पेशलम् ॥७॥

अर्थ—पहले अति विशाल दिल्ली में प्रेम, सुख तथा प्रतिभा का देने वाला यवन राज्य था। वहाँ पर न्याय दृष्टि से देखने वाला, धृत्यादि धर्म-सम्पन्न, योग्य धर्म से विभूषित, श्री फर्रुखसियर राजा था। एक दिन शुभ वेला में वह काश्मीर गया, क्योंकि देशाटन ही शासकों के जन-रक्षात्मक प्रण की रक्षा का लक्षण है। स्वर्ग में इन्द्र के नन्दन वन के समान वहाँ के सौन्दर्य को देख राजा मोहित हो गया।

इतने संक्षेप में स्वर्ग की सन्तान काश्मीर की सुषमा को अदा से भी वर्णन नहीं कर सकता, सारी को तो बात ही क्या है। चतुर्दश विद्या

विद्वद्भिर्मानवैश्चापि ज्ञान गौरव मण्डितम ।
संस्कृते संस्कृतेनैव फारसी-सरसी कृते ॥८॥
आयुर्वेदेतिहासादि ज्योतिः शास्त्र-विशारदैः ।
काव्य साहित्यमर्मज्ञैर्नीतिधर्म भृते शुभे ॥९॥
सबलैर्विपुलाकारैर्देव - लक्षण - लक्षितैः ।
महोत्साहैर्महोदारैः पण्डितैरतिमण्डितम ॥१०॥
ऋषिणा कश्यपेनैव कृत सर्व समृद्धिमत ।
काश्मीरसंज्ञामभजत काश्यपाख्य पुर पुरा ॥११॥
अमदान दमन्दोहैः पूरितो नर भूषण ।
विद्वत्प्रिय फरुखसीय्य रत्नान्वेषणतत्पर ॥१२॥
तत्र दृष्ट्वा महाप्रज्ञ राजकौलाख्यपण्डितम ।
सादर प्रतिपूज्याह भगवन ! विनय मम ॥१३॥
श्रुत्वा नाथ मया सार्द्ध गन्तुमर्हति माधव ।
दिल्ली प्रति यथाशक्ति पूजयिष्यामि सर्वश ॥१४॥

तथा रत्नों का अनुपम सुन्दर स्थान पुष्प फलों से भरपूर रम्य नदियों पर्वतों वाला नालाबों झीलों से शीतल उर्वरा बहुलता से हरित सरोवरों से ... संस्कृत से परिष्कृत फारसी से सरस विद्वान् मानवों द्वारा ज्ञान गौरव से अलंकृत आयुर्वेद इतिहास ज्योतिष आदि शास्त्रों में विशारद काव्य साहित्य ममज्ञ नीति धर्म के धारने से शुभ बलवान विशाल आकार वाले देव लक्षणों से युक्त महा उत्साही महा उदार पण्डितों से अलंकृत काश्मीर था। कश्यप ऋषि द्वारा सर्वसमृद्धि सम्पन्न बनाया हुआ यह पहले कश्यपपुर नाम से प्रसिद्ध था फिर काश्मीर नाम से जाना जाने लगा।

विद्वान् आनन्द समूह से पूजित विद्वत्प्रिय नर भूषण फर्रुखसियर राजा भी रत्नों की खोज में लगा रहता था। वहाँ पर उन्होंने महाप्राज्ञ राज कौल पण्डित को देख सादर पूजा कर कहा कि हे भगवन् ! मेरी विनय सुन आप महानुभाव मेरे साथ दिल्ली चलें हे नाथ ! मैं आपकी हर प्रकार से पूजा करूँगा।

इस प्रकार बादशाह द्वारा पूजित सत्कृत सविनय आमन्त्रित श्री राज कौल पण्डित काश्मीर से दिल्ली आगए। कुल्या (नहर) के किनार

एवं यवनराजेन सत्कृताः पूजिता भृशम् ।
आमन्त्रिताः सविनय काश्मीरादागता इह ॥१५॥
कुल्यास्तीरे कृतावासा भास्वरे राजमन्दिरे ।
नेहरू पदवीभाजो जाता विश्व-विभूषणाः ॥१६॥
राजकौलाः पूर्वप्रख्याः श्रीमन्त पूज्यपण्डिताः ।
फारसी-सस्कृताभिज्ञा विद्या-वैभव मण्डिता ॥१७॥
लुप्तकौलोपनामा हि नेहरूरिति विश्रुताः ।
फारस्या नहरप्रख्या कुल्यास्तीरे निवासतः ॥१८॥
लक्ष्मीनारायणस्तेषा वंशे जातः सुबुद्धिमान् ।
वाक्कीलो यावने राज्ये सभाया कम्पनीकृत ॥१९॥
भ्रष्टे विभवसम्भारे कथचित् कार्य-साधकः ।
सुयोग्यः काल-मर्मज्ञो, मोतीलाल-पितामह ॥२०॥
गगाधरस्तस्य पुत्रो यो दिल्ल्या कोट-पालकः ।
चतुस्त्रिंशवर्षोऽल्पायुर्यौवनेऽमरता गतः ॥२१॥
नष्टा परम्परा तेषा परिवारस्य विप्लवे ।
राज्याधिकार-पत्राणि विप्लुतानि तदैव हि ॥२२॥

सुन्दर राजमहल मे निवास करने से विश्व विभूषण पण्डित, नेहरू पद स सुशोभित होने लगे । फारसी-सस्कृत विशेषज्ञ, विद्या वैभव-मण्डित, श्रीमान् पूज्य पण्डित पहले कौल उपनाम से प्रसिद्ध थे । फारसी म नहर नाम से कही जाने वाली कुल्या के तट पर निवास से कौल उपनाम लुप्त होकर नेहरू नाम से प्रसिद्ध हो गये ।

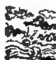
उसी कुल मे हुए सुयोग्य बुद्धिमान् श्री लक्ष्मीनारायण जी को ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने यवन राज-दरबार मे अपना वकील नियत किया था । उनकी सन्तान श्री मोतीलाल के पितामह कारणवश वैभव नष्ट होने पर किसी तरह कार्य चलाते रहे । उनके पुत्र दिल्ली के कोतवाल श्री गगाधर जी चौंतीस वर्ष की अल्पायु मे हो स्वर्ग सिधार गये । इस प्रकार उनकी शासन परम्परा सन् १८५७ की क्रांति के समय समाप्त हो गयी और राज्याधिकार-पत्र भी खो गये । तब यह परिवार सब कुछ क्रान्ति मे खोकर बहुत से और परिवारो के साथ दिल्ली को छोड कर आगरे आ गया ।

विप्लवे गत-सर्वस्वो दिल्ली त्यक्त्वागरे गत ।
कुटुम्बैर्बहुभि साकं विप्लवाप्लुष्ट वैभवैः ॥२३॥
तेषा वशे पुण्य-भूमौ मोतीलालस्त्वजायत ।
विद्या-वैभव-सम्पन्न शौर्योत्साह-समन्वितः ॥२४॥
अभिवक्ता सदुद्योगी विजेता राज-सभदि ।
रूपवान् गुणवान् वाग्मी वाक्कील-कुल-कीलक ॥२५॥
सफलोधनी शुभाचारो मित्र-मण्डल-सत्कृत ।
उदारो विविधाधारः प्रभावी लोक-नायक ॥२६॥
पूर्वमग्रेजभक्तो हि विलासी बहु-गौरव ।
पश्चाज्जवाहरोद्योगैरतिमात्र जनप्रिय ॥२७॥
वशीधरनन्दलालावग्रजौ यौवन गतौ ।
स्वर्गते पितरि चाथ मोतीलालस्त्वजायत ॥२८॥
आगरावास-काले द्वावग्रजौ कृत-पौरुषौ ।
पालयामासतुरेव गृह विप्लव पीडितम् ॥२९॥
वशीधरो नियुक्तस्तु न्यायभागेऽधिकारिभि. ।
नन्दलालोऽप्यमात्योऽभूद्राज्ये खेतडी नामके ॥३०॥
दशवर्ष कृत तत्र कार्यं सम्यक् सुधीमता ।
न्यायस्याध्ययन कृत्वा वाक्कील आगरे गत. ॥३१॥

अर्थ—उनके पवित्र वश म—विद्या वैभव सम्पन्न, शौय उत्साह-युत, अभिवक्ता, सदुद्योगी, राज-सभा विजेता, रूप-गुणवान्, वाग्मी, वकीलो के समूह को कीलने वाले, सफल, धनी, शुभाचार, मित्र मण्डल सत्कृत उदार, विविध आधारवान्, प्रभावी लोकनायक, पहले अग्रेज भक्त विलासी अत्यत आत्माभिमानी तथा बाद मे श्री जवाहर के उद्योगो से अति लोकप्रिय श्री मोतीलाल जी हुए। वशीधर तथा नन्दलाल जी जवान हो चुके थे, तब पिताजी क स्वर्गवास के कुछ दिन बाद श्री मोतीलालजी का जन्म हुआ। आगरावास काल म दोनो बडे भाई उद्योग मे विप्लव पीडित कुटुम्ब को पालना करते रहे। तत्कालीन शासको ने श्री वशीधर जी को न्यायाधिकारी बनाया तथा श्री नन्दलाल जी खेतडी राज्य म मन्त्री बन। बुद्धिमान् श्री नन्दलाल जी ने दस वष वहाँ बडा अच्छा कार्य किया, फिर कानून पढकर आगरे म वकालत करने लगे।

हीन-शक्ति यवनराज्यमवलोक्य महानयम् ।
कुटुम्बः प्रयागमचलत् पुण्यतीर्थं तदा शुभम् ॥३२॥
मोतीलालोऽवमत्तत्र नन्दलालमुपाश्रितः ।
लालितः पालितस्तेन वात्सल्येनाग्रजेण वै ॥३३॥
सर्वेषामनुजो मोतीलाल सम्वर्द्धित सुखम् ।
पितामह्यास्तत स्वाङ्के प्रेम्णा सलापितो मुदा ॥३४॥
समर्थस्तु कृतोद्वाहः कार्य-साधन-तत्पर ।
तस्य पत्नी तदाधारा तदाचारा तपस्विनी ॥३५॥
धृति-क्षमा-दया-युक्ता पतिव्रत-परायणा ।
पितृ-देवातिथीनाञ्च पूजने दत्तजीवना ॥३६॥
सर्वहिता धर्मरता नित्य लोकोपकारिका ।
स्वरूपा शुभ-रूपा हि सदैवामृत-भाषिणी ॥३७॥

अर्थ—तब यवन राज्य को निर्बल जान, यह महान् कुटुम्ब सदा शुभ, पवित्र तीर्थ प्रयाग की ओर चला। प्रयाग में श्री मोतीलाल जी श्री नन्दलाल जी के पास प्यार-दुलार में पोषित होते रहे। सबसे छोटे श्री मोतीलाल जी दादी की गोद में स्नेहपूर्ण लोरियों से पलकर बढ़ रहे थे। कार्य-समर्थ होने पर उनका विवाह पति को ही आधार मानने वाली, उन्हीं के निमित्त आचार वाली, तपस्विनी, धृति, क्षमा, दयायुक्त, पतिव्रत-परायणा, पितृ-देव अतिथियों के पूजन में समर्पित-जीवन, सर्व हितैषी धर्म में रत, नित्य लोक-उपकारिणी, शुभ तथा सुन्दर रूपवाली, अमृत-भाषिणी स्वरूपा रानी से हो गया।



आनन्द-भवन-वर्णनम्

कारितं मोतीलालेन प्रयागेऽतिमनोरमम् ।
आनन्द-भवनं रम्यं प्रासादं सर्वसाधनम् ॥३८॥
अनेकागार-द्वारैश्च शोभितं यान-भूषितम् ।
कूपोद्यान-तडागैश्च क्रीडा-क्षेत्रैः समन्वितम् ॥३९॥
यौरुपीयैश्च सम्भारैर्महर्घैरतिरञ्जितम् ।
अश्व-मोटर शालाभिर्वर्द्धितञ्चातिशोभितम् ॥४०॥
बहुभिर्दास-दासीभिः साधितञ्चाति वेतनैः ।
आङ्ग्लैरध्यापकैर्नर्सै डाक्टरैरतिसेवितम् ॥४१॥
धनिकैर्गुणिभिश्श्रेष्ठैर्राजवैभवरोचितम् ।
मल्लैः संगीत-कारैश्च नटैर्भट्टैः सुभाषितम् ॥४२॥
धेनूनां महिषीणाञ्च दधि-दुग्धैः सुभोजनम् ।
कविभिः सुग्रन्थैर्विज्ञैः कृत-साहित्य-सम्भृतम् ॥४३॥
विदूषकैः कलाकारैश्चाटुकारैश्चमत्कृतम् ।
मणि-मुक्तैरनेकैश्च धन-धान्यैः सुपूरितम् ॥४४॥
दैवज्ञैर्वैद्य-वर्यैश्च नीतिज्ञैर्नायकैर्नतम् ।
तदयभिः काष्ठ-कारैश्च-स्वर्णकारैरलङ्कृतम् ॥४५॥

अर्थ—श्री पं० मोतीलाल जी ने प्रयाग में अति मनोरम, रम्य, भव्य सर्व साधन-सम्पन्न अनेक भवन तथा द्वारों से शोभित, विविध यान-भूषित, कूप, उद्यान, तडाग और क्रीडा-क्षेत्रों से अलंकृत, बहुमूल्य योरोपीय सामान से सुन्दर, अश्व मोटरशालाओं से सजे हुए बहुवेतन दास दासी, अंग्रेज अध्यापकों, नर्सों एवं डाक्टरों से सेवित, धनिक, गुणी तथा विशेष श्रेष्ठ व्यक्तियों के राजवैभव से विभासित, मल्लों, संगीतकारों, नटों तथा भट्टों की सूक्तियों से सुभाषित, गौ-भैंसों के दधि-दूध-निर्मित पदार्थों से सुन्दर भोजन-युत, कवि विज्ञ, ग्रन्थकार लोगों से रचित साहित्य से सम्पन्न विदूषकों, कलाकारों एवं चाटुकारों से चमत्कृत, अनेकों मणि मुक्ता एवं धन धान्यों से सम्पन्न, विद्वान्-दैवज्ञ, वैद्य तथा नीतिज्ञ नायकों से

सूदैर्मिष्टान्न-कारैश्च   कृत-भोज्यादि-सद्गुणम् ।
चतुरैर्भोजकैर्नित्य   कृतातिथ्य   सुमंगलम् ॥४६॥
राजतैर्हेमपात्रैश्च   भाण्डागारैर्निनादितम् ।
अत्युत्तमैरलंकारैरनर्घ्यैरभिवर्द्धितम्   ॥४७॥
चत्वरैर्यज्ञशालैश्चातिथिशालैरुपासितम्   ।
घृतावर्तैस्तैल पूर्णैश्च   विद्युद्दीपैश्च   दीपितम् ॥४८॥
चन्दनागुरु-गन्धीभिर्दिव्यैर्धूपै   सुवासितम् ।
सुचित्रैर्मूर्तिमद्भिश्च   प्रकोष्ठैर्निचित्रितम् ॥४९॥
स्वरूपाकारिते   पाठैर्वेद-मन्त्रैस्तु   गुञ्जितम् ।
विद्वद्भ्यो दीन हीनेभ्यो दत्तैर्दानैस्तु सस्तुतम् ॥५०॥
सारिका-शुक-मायूर-हंस-कोकिल-कूजितम्   ।
बालाना नरनारीणा पृथगागारैः सुगुम्फितम् ॥५१॥
स्नान-भोजन-शैय्याना शालाभिस्पशालिनम्   ।
स्वरूपा, विजया, कृष्णा कमलं सजवाहरम् ॥५२॥
इन्दिरा-बाल लीलाभिर्लास्यैर्लेभित-लोचनम्   ।
लीलासु बाल-बालाना दोलान्दोलन दोलितम् ॥५३॥
कृतोपकारैरद्वारैर्वृद्धै पूज्यैर्मुदेक्षितम्   ।
विपदि-दत्त-माहात्म्यैरार्यैर्भद्रै   शुभेप्सितम्   ॥५४॥

नमस्कृत, खानी, राज तथा स्वर्णकारो से अलकृत, सूदो तथा हलवाइयो से बने सुन्दर भोजनो से सुवासित, नित्य ही चतुर भोजको द्वारा कृत आतिथ्य से सुमगल, चादी सोने के भाण्डागारो से निनादित, अत्युत्तम अनर्घ्य अलकारो से अभिवर्धित, चबूतरा, यज्ञशाला तथा अतिथिशालाओ से उपासित, घृत, तैल एव विद्युत्-दीपो से सुदीपित, चन्दन, अगर की सुगन्धवाली दिव्य धूपो से सुवासित, सुन्दर चित्र एव मूर्तियोवाले प्रकोष्ठो से चित्रित स्वरूपा द्वारा आयोजित वेद मन्त्रो के पाठो से सुगुंजित, विद्वान तथा दीन हीनो को दिये दानो से स्तुत, सारिका, शुक, मोर, हस तथा कोकिल स्वरो से कूजित, बाल, नर एव नारियो के पृथक् पृथक् भवनो से सुगुंफित, स्नान, भोजन तथा शयनागारो से सुशोभित, स्वरूपा, विजया, कृष्णा, कमला तथा जवाहर से मन हर, इन्दिरा की बाल-लीलाओ तथा नृत्य-गीतो से नयनानन्दद, बच्चे बच्चियो के खेलो से झूलो के

मङ्गलोचित-गीतैश्च गुरुभिः कृत-मङ्गलम् ।
अङ्गना-मङ्गलैर्गानैस्तानैश्चातीव-रञ्जनम् ॥५५॥
रङ्गानां रञ्जितैरङ्गैस्तोरणैरतिरञ्जितम् ।
उत्तोलितपताकाभिर्बहुभिर्महदुन्नतम् ॥५६॥
आगतागत लोकानां समूहैरतिमोहितम् ।
अभियोग जयार्थं वै भूपैर्भूयोऽभिलक्षितम् ॥५७॥
जाति-देश-समाजानां हितकारिभिराश्रितम् ।
राजनीत्या पीडितानां जनानां दृढमाश्रयम् ॥५८॥
कारागार-गतानाञ्च पश्चादुच्चसहायकम् ।
चन्द्र-सूर्य-निभं नित्यं ताराणामिव भास्वरम् ॥५९॥
पवित्रं धवलाकारं सारं भारत-भूमिजम् ।
आनन्द-भवनं भव्यं रम्यं काम्यमतिप्रियम् ॥६०॥
रजकैः सूचिकारैश्च मालाकारैरुपाश्रितम् ।
ग्रन्थागारैः सर्वविधैर्ज्ञान-गौरव-गर्भितम् ॥६१॥
पुनस्तु मोतीलालेन दत्तं देश-हिताय वै ।
स्वराज्य-भवनं जातं प्रसिद्धमतिसुन्दरम् ॥६२॥

सूतों से सम्मानित, पुत्र उत्पत्ति के उत्सव पर आए हुए पुण्यवृद्धों द्वारा प्रसन्नता से दृष्ट, विपत्तियों में दी सहायताओं के कारण भद्र आर्यजनों द्वारा शुभ काम-नाओं से चाहा हुआ, मङ्गलोचित गीतों में गुरुजनों द्वारा कृत-मङ्गल, अङ्गनाओं के मङ्गल-गीतों की तानों से बहुत रञ्जक, अनेक रंगों से रंगे तोरणों से सुन्दर, ऊपर उड़ रही उन्नत पताकाओं से बहुतुङ्ग, आने जाने वाले लोक-समूहों से अति मोहित, अपने अपने मुकद्दमों में विजय के लिए भूपों से बारम्बार देखा गया, जाति-देश समाज के हितकारियों से आश्रित, राजनीति-पीड़ित लोगों का दृढ़ आश्रय, कारागारों से मुक्त लोगों का अच्छा सहायक, चन्द्र सूर्य की तरह सदा चमकने वाला, ताराओं-सा भास्वर, पवित्र धवलाकार, भारत-भूमि का सार, रम्य, भव्य, काम्य, अतिप्रिय, धोबी, दर्जी तथा मालियों द्वारा उपाश्रित एवं सर्वविध ग्रन्थागारों के ज्ञान-गौरव से गर्भित, आनन्द भवन बनाया। बाद में यह उन्हीं के द्वारा देशहित के लिए दान कर 'स्वराज्य भवन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बाल जवाहर.



कृतोपवीत-सस्कार : आर्य सम्भार-धारक

पटचत्वारिंशदेकोनविंश विक्रम-वत्सरे ।
मार्गशीर्षे कृष्णपष्ठ्या मध्यरात्रे शुभग्रह ॥
आश्लेषायां कर्कं लग्न सचन्द्रेम्वस्थिते गुरौ ।
जातो जवाहरो वीर मर्त्य सद्गुण भूषण ॥

उक्त हि वृहत्पाराशरे राजयोगाध्याये

दिनार्द्धञ्च निशार्द्धञ्च पर सार्द्धद्विनाडिका ।
शुभावेला तदुत्पन्न राजास्यात्तत्समोऽपि वा ॥



मार्गीसाक्षी महाभागो [illegible] इव [illegible] ।
[illegible] हि नौरेषु धारा भामगौरव ॥

जवाहर-जन्म

इत्थमानन्दमवासे सर्व-साधन-शोभने ।
सम्वरूपो मोतीलालो यापयामास वासरान् ॥६३॥

तयोः सुखेन वसतो सर्व-साधन-भुंजतो ।
अभावः सन्ततेरासीत् दिलीपे नृपतौ यथा ॥६४॥

यथा दिलीप स्वाचार्यं सदारो गतवान्सदा ।
तथैव मोतीलालोऽयमगच्छद्धि तपस्विषु ॥६५॥

नित्यान्वेषण-सलग्न श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः ।
सदा सदार पुत्रार्थी सदाचार-परायण ॥६६॥

श्रुत्वैषदा जनै क्वापि तपस्यन्त तपस्विनम् ।
वृक्षारूढमदृश्य हि सर्व-लोकातिग मुनिम् ॥६७॥

एषणा-त्रयमुत्क्रान्त दिव्यशक्ति-समन्विनम् ।
तुर्यावस्था-रत नित्य ब्रह्मलीन सदा शुचिम् ॥६८॥

मोतीलालोऽवगम्यैव सदार श्रद्धयान्वितः ।
प्रतिक्षण शुभाचारः पुनेच्छुरर्चयदृषिम् ॥६९॥

अर्थ—इस प्रकार आनन्द-भवन सब प्रकार के साधनों से सुशोभित था। श्री मोतीलाल जी स्वरूपारानी के साथ सब साधनो मे युक्त आनन्द भवन मे सुख से वास करते थे, परन्तु जिस प्रकार राजा दिलीप को सन्तान का अभाव था, जिस प्रकार पुत्रार्थी दिलीप स्वधर्मपत्नी सुदक्षिणा के साथ अपने गुरु श्री वशिष्ठ जी के आश्रम मे गये थे, उसी प्रकार श्री मोतीलालजी भी धर्म पत्नी स्वरूपा सहित, पुत्रार्थी, सदाचार परायण, नित्य जिज्ञासु, तपस्वियों के आश्रमों में जाते थे।

एक दिन मोतीलाल जी ने कहीं पर तपस्या रत, वृक्षारूढ, सर्व-लोकोत्तर, अदृश्य, तपस्वी, एषणात्रय से परे, तुर्यावस्थारत, दिव्यशक्तियुत, ब्रह्मलीन, सदा शुचि, मुनि को लोगों से सुना। इस प्रकार जान कर धर्मपत्नी सहित, श्रद्धापूर्वक प्रतिक्षण ध्यानपरायण, पुत्रेच्छु मोतीलाल जी ऋषि की

गुरोर्धेनुं वशिष्ठस्य दिलीपो नन्दिनी यथा ।
अहर्निशमन्वगच्छन्मोतीलालस्तथैव हि ॥७०॥
सेवयामास तावद्धि यावत्तुष्टोऽभवन्मुनि ।
उवाच कथमायात किमर्थमिह तिष्ठसि ॥७१॥
वद सर्व मनोराज्य यदर्थं तपसि स्थित ।
आनन्दभवन काम्य त्यक्त्वारण्यमुपागत. ॥७२॥
मोतीलालस्तदाश्वस्तस्तुष्टो लब्ध-मनोरथः ।
निवेदयामास स्वार्थं महान्त पुत्र-रूपिणम् ॥७३॥
भगवन् सर्वविज्ञोऽसि यदर्थंन्त्वागतोऽस्म्यहम् ।
पुत्रार्थी, लब्ध-सर्वार्थम् न गृहं शान्ति दायकम् ॥७४॥
पश्येयमिति कृत्वैव पादाश्रितमवेहि माम् ।
जीवन सुतनाधीनमिति मे निश्चित मतम् ॥७५॥
ऋषिराह समाधिस्थ भो भो सेवापरायण ।
नास्ति ते सन्ततेर्योग गच्छावास यथासुखम् ॥७६॥
पुन प्रसादित प्राह ऋषिरुत्फुल्ल-लोचनः ।
व्रजावास पूर्णव्रत साधयामि तवेप्सितम् ॥७७॥

पूजा मे रत रहने लगे । जैसे गुरु वशिष्ठ की धेनु नन्दिनी की सेवा मे महाराज दिलीप रहते थे, उसी प्रकार मोतीलाल जी भी दिन रात ऋषि के प्रसन्न हो॰ तक सेवा मे लगे रहे । तब मुनि ने प्रसन्न होकर कहा—तुम यहाँ क्यो आ॰ हो ? किसलिए बैठे हो ? अपनी इच्छा बताओ जिसके लिए सर्व-सुख काम्य आनन्द भवन को छोड़ वन म आ तपस्या मे लगे हो ।

तब आश्वस्त, सन्तुष्ट तथा लब्ध-मनोरथ मोतीलाल जी ने अपने पुत्र रूपी महान स्वार्थ को निवेदन किया । भगवन् आप सर्वज्ञ हैं, जिसलिए मैं आया हूँ आप सब जानते ही हैं, मैं पुत्रार्थी हूँ । सब कुछ होते हुए भी घर को शान्तिदायक नही समझता, इसीलिए आप मुझे अपने चरणों मे उपस्थित समझें । क्योंकि मैं अब पुत्र के बिना जी नही सकूँगा यह मेरा निश्चित मत है । तब ध्यान लगा कर मुनि जी बोले—ऐ सेवक ! तुम्हारे सन्तान योग नही है इसलिए घर जाकर आराम करो । फिर प्रसन्न किये हुए ऋषि ने कहा—तुम्हारा व्रत पूर्ण हुआ, घर चला जा, तेरी इच्छा पूरी करूँगा । यह सुन कर

इत्युक्तो मोतीलालो हि सस्वरूपो गृहं गतः ।
परेद्युर्लक्षितः पौरैस्तापसो गतजीवनः ॥७८॥
तदातो दशमे मासे स्वरूपा सुषुवे सुतम् ।
नवाम्बरे शुद्धऋतौ, शुभलग्ने शुभग्रहे ॥७९॥
जातो जवाहरो योगी राज्य-ग्रह-समन्वितः ।
मुक्ता रत्नैः(मोतीलालै)समुद्भूतो मणिरूपो जवाहरः ॥८०॥

बाल्य-वैभवम् प्रवृत्तयश्च

जातो जवाहरोऽस्माकं प्रियो विश्व-प्रकाशकः ।
कृतोपवीत-संस्कारः आर्ष-सम्भार-धारकः ॥८१॥
अधीत-विद्यो हिन्द्युर्दु-संस्कृतेंगलिश-प्रचारकः ।
माता-स्वरूपा-संस्कारैः रंजितस्त्यक्त-भारतः ॥८२॥
आंग्लभूमिं गतोऽध्येतुं हैरो-विद्यालये पुरा ।
वाक्कीलविद्यां सगम्य पुनः भारतमागतः ॥८३॥
मोतीलालप्रभावेण पूर्वं सर्वसुखान्वितः ।
लब्ध-विद्यो-गुणाधारः सर्व-सम्पदुपस्कृतः ॥८४॥
तपस्विवरदानेन लोकाराधन तत्परः ।
कारागारे तपस्यार्थमुवास परमोज्ज्वलः ॥८५॥

मोतीलाल स्वरूपा के साथ घर चले गये । अगले दिन लोगों ने वहाँ पर उस तपस्वी को निर्जीव देखा ।

तब से दसवें मास में नवाम्बर (नये आकाश) व नवम्बर मास में शुद्ध ऋतु, शुभ लग्न एवं शुभ ग्रहों में स्वरूपा ने पुत्र-रत्न को उत्पन्न किया । वही योगी—राज्य ग्रह-युत मोतीलाल से उत्पन्न मणि रूपी जवाहरलाल बना । हमारे प्यारे विश्व प्रकाशक जवाहर उत्पन्न हुए, यज्ञोपवीत धारण कर, ऋषियों का वेश बना, हिन्दी, उर्दू, इंगलिश, संस्कृत को पढ़, माता स्वरूपा के अच्छे संस्कारों से रंगे हुए, भारत से इंग्लैंड में हैरो विद्यालय में पढ़, वकील बन कर भारत लौटे । मोतीलाल जी के प्रभाव से पहले ही सर्व-सुख संयुक्त, अब विद्या, रूप, गुण तथा सर्व सम्पत्ति से अलंकृत हुए । तपस्वी के वर-प्रभाव से लोक

राज्य-ग्रहानुभावेन शासनासन-शोभितः ।
स्वरूपा-मातृ-संस्कारैर्दया-दम-परायणः ॥८६॥
पर-दुःख-हरः सर्व-भूत-सौख्य-विधायकः ।
बाल्येऽखिलसुखावासः पितृ-लालन-पोषितः ॥८७॥
अनेकदासी-दासेभ्यो लब्ध-सेवो ययौ मुदम् ।
लालितोऽपि विशेषेण सर्व-दुर्गुण-दूरगः ॥८८॥
सद्गुणैर्भूषितो नित्यं मातृ-मोद-करः शुभः ।
शिशु-सम्भव-क्रीडाभिर्लोक-शोकापनोदकः ॥८९॥
शिक्षणार्थं शिशोरस्य गौराः पाठन-तत्पराः ।
नियुक्ता मोतीलालेन आंग्ल-विद्या-विशारदाः ॥९०॥
मौलवी मूलतो विद्या फारसीमनुरागतः ।
पाठयन् श्रावयन् गाथा रुचि-शिक्षा-प्रदा शुभाः ॥९१॥
बोधयामास निरतं विद्या-बुद्धि-विशारदम् ।
वंशानुकूलं कुशलं सुयोग्यं शासन-प्रियम् ॥९२॥
हिन्दी-संस्कृत-शिक्षार्थं सयत्ना जननी भृशम् ।
स्वरूपादृढ-संकल्पा सफला भक्ति-भावतः ॥९३॥
मोतीलालो राजभक्तो गौर-राज्यानुसारतः ।
वर्तयामास कार्येषु राजनीतियुतेषु वै ॥९४॥

सेवापरायण पवित्र जवाहर माता के लिए सुखागार थे रहे। राज्य-ग्रहों के प्रभाव से शासन के आसन पर शोभित हुए माता स्वरूपा के संस्कारों से दया-दम परायण बने। परदुःखहर, सर्व-भूत सुखदाता, बचपन से सब सुख-भोक्ता, पिता के लाड़ प्यार से पाले गये, अनेक दासी दासों की सेवा से प्रसन्न विशेष लाड़ प्यार से पलने पर भी सभी दुर्गुणों से दूर थे। नित्य सद्गुण-भूषित, माता को खुश रखते हुए बाल-लीलाओं से सबके शोक को दूर करते थे। इस शिशु को पढ़ाने के लिए मोतीलाल ने इंग्लिश के विद्वान् अंग्रेज रखाए।

आरम्भ में मौलवी प्रेमपूर्वक रुचि तथा शिक्षाप्रद कहानियें सुनाते हुए, बुद्धि विकास वंशानुकूल अनुशासन प्रिय जवाहर को फारसी पढ़ाते थे। माता स्वरूपा भक्ति-भाव से दृढ़ संकल्प किये हिन्दी संस्कृत शिक्षा

पर जनास्तदा देश-भक्ति-श्रद्धा-समन्विता ।
स्वाधीनता-प्रचारेषु वृद्धा-बाला धृतव्रताः ॥९५॥
लोका दुःख प्रकटयन्तो नित्यं भारत-भूमिजम् ।
एषा प्रचारस्य हृदि मृदुनि वै जवाहरे ॥९६॥
प्रभावोऽभूत्प्रभूत तु देश-बन्धन-रूपजम् ।
ऐश्वर्येण विलासेन मोतीलालोऽरमत्सदा ॥९७॥
जवाहरेणालपितुं नोदितु समयो नहि ।
पर माता स्वरूपा तु जवाहर-परायणा ॥९८॥
गगा नयति स्नानार्थं सत्सगार्थं दिने-दिने ।
प्रभु-भक्ति-रता नित्य दान-पुण्य-व्रता शुभा ॥९९॥
सर्व-शिक्षासु कुशल खेला-खेलन-पारग ।
सर्वेषा मुदमातन्वन् सुदक्ष शुभलक्षण ॥१००॥
आम्रारोहणविद्याया जल-सन्तरणे तथा ।
जातो दक्ष कुमारोऽय प्रियोऽस्माक जवाहर ॥१०१॥

मे यथेष्ट रहती हुई सफल हुई। मोतीलाल राजभक्ति से राजनीतिक कार्यों मे अंग्रेजो के अनुसार ही चलते थे, पर उस समय बाल वृद्ध युवक सभी लोग देश मे श्रद्धा-भक्ति से स्वाधीनता का प्रचार करने मे लगे रहते थे। नित्य ही भारत के दुःख को प्रकट करने वालों का प्रभाव जवाहर के कोमल हृदय मे हुआ। जवाहर के मन मे तो देश-दशा का बहुत प्रभाव हुआ, पर मोतीलाल ऐश्वर्य-विलास मे मस्त रहते थे। उनके पास तो जवाहर के साथ बात करने या खेलने का भी समय नहीं था। पर माता स्वरूपा सदा जवाहर का ध्यान रखती थी। वह प्रभुभक्तिरत, नित्य दान-पुण्य व्रतो मे शुभ विचार वाली जवाहर को प्रति दिन गगा-स्नान के लिए ले जाती थी।

श्री जवाहर सर्व शिक्षा कुशल, खेलने मे पारगत, चतुर, शुभ लक्षण-सम्पन्न सबको सुख देते थे। आमों पर चढ़ने तथा जल मे तैरने मे हमारा प्रिय कुमार जवाहर दक्ष हो गया। अश्व, मोटर-यानों के चलाने मे चपल तथा निर्भय, वह सर्व मानवों से स्वाधीन व्यवहार करता था। जवाहर के मनो-विनोदार्थ सभी सर्व सुन्दर सामान थे, पर बहिन भाई के न होने से उसका उद्विग्न मन उत्तम लगता नहीं था।

अश्व-मोटर-यानानां चालने चचलस्तथा ।
निर्भयोवर्तते तत्र स्वाधीनं सर्व-साधने ॥१०२॥
सन्ति मनोविनोदार्थं सम्भाराः सर्व-सुन्दराः ।
उद्विग्नो बन्धुहीनोऽयं नारमत्तत्र-तत्र ह ॥१०३॥
अतोविजयानुजायाया जन्मनि मुदितो भृशम् ।
सापि ख्यातिं गता पुण्या वश-कीर्ति-विवर्द्धिनीम् ॥१०४॥
अधीत-विद्या स्वातन्त्र्य-सग्रामे दत्त-जीवना ।
कारागारं गतानेकवारं सत्य-परायणा ॥१०५॥
वीराग्रजेणसयुक्ता गौर-शासन नाशने ।
पीडिता बहुशो दुर्ष्टैविरराम कदापि न ॥१०६॥
स्वतन्त्रे भारते देशे शासने लग्न मानसा ।
बह्वायासे पदे युक्ता सफला कार्य-साधने ॥१०७॥
रूसामेरिकदेशेषु कूट-नीति-परेषु च ।
राज-दूतादिपदेषु योजिता लोक-नायकै ॥१०८॥
तत्रापि सफलैषा हि नीति-विज्ञैं प्रशसिता ।
सुरक्षा ससदि जाता प्रधानैषा मनस्विनी ॥१०९॥

इसीलिए छोटी बहिन विजया के जन्म लेने से श्री जवाहर बहुत प्रसन्न हुए, वह भी अपने वश की कीर्ति बढ़ाती हुई प्रसिद्ध हुई। विद्या समाप्त कर स्वतन्त्रता-सग्राम में लगी हुई कई बार कारागार गयी। विजया वीर भाई के साथ लगी, अग्रजी राज को हटाने में तत्पर, कई बार दुष्टो से पीडित हुई भी कर्तव्य-मार्ग से नही हटी। स्वतन्त्र भारत मे शासन चलाने मे बहुत से परिश्रमी पदो पर नियुक्त हुई भी कार्य-साधन मे सफल हुई। अमेरिका आदि कूट-नीति-परायण देशो मे राजदूत आदि पदो पर नियुक्त हो कर सफल हुई तथा वहाँ पर भी नीतिज्ञ लोक नायको द्वारा प्रशसित हुई। इस मनस्विनी ने सुरक्षा परिषद् मे प्रधान बन कर भारत का यश बडी अच्छी प्रकार बढ़ाया। इस समय तक विश्व की कोई भी स्त्री इस पद पर नही बैठी। इसके बाद भी इसने भारत में अपने कोमल हृदय और सुन्दर शासन से राज्यपाल के रूप मे लोक-पालना करते हुए अनेक कार्यं सिद्ध किये।

यशो भारतदेशस्य यया सम्यक् प्रवर्द्धितम् ।
नेदानीं यावत्काचिद्धि पदं प्राप्ता हि कामिनी ॥११०॥
ततोऽपि भारते देशेऽनेक-कार्य प्रभाविका ।
राज्यपाला लोकपाला मृदुचित्ता सुभाषिणी ॥१११॥
प्राप्यैनां विजयालक्ष्मी भगिनीं स्नेह-रूपिणीम् ।
सन्तुष्टोऽप्यलभच्चान्यां कृष्णां सर्वसुलक्षणाम् ॥११२॥
पाठितोऽध्यापकैर्विज्ञैर्विद्या-ज्ञान विचक्षणैः ।
पितृभ्यामाप्त-संस्कारो गृह - शिक्षामवापह ॥११३॥
अनेकानीक-ग्रन्थानामध्येता बुद्धि-योगतः ।
लालो द्वादशदेशीय काव्य-शास्त्र-विचारकः ॥११४॥
दर्शनानां हि तत्त्वज्ञो नीति-विद्या-विशारदः ।
आर्षाणां धर्मग्रन्थानां गीतादीनां विशेषतः ॥११५॥
श्रुतीनां सार—सर्वज्ञो योग - विद्याविभावितः ।
उत्पताम्यहमाकाशे निर्विमानो मुहुर्मुहु ॥११६॥
अधः पश्यामि संसारमखिलं चित्रितं बहु ।
द्रष्टा विचित्र-स्वप्नानां विस्मितो ज्ञान-भावनैः ॥११७॥
विस्मृतो देह-गेहानामात्मभावचमत्कृत ।
सुमदस्यो मण्डलानामाध्यात्मिकमनस्विनाम् ॥११८॥

इस स्नेह रूपी विजयालक्ष्मी बहिन को प्राप्त करके भी दूसरी सर्वसुलक्षणा छोटी बहिन कृष्णा को प्राप्त कर जवाहर बहुत खुश हुए। विद्या ज्ञान विलक्षण, विद्वान् अध्यापकों द्वारा पढ़ाए हुए माता-पिता से शुभ संस्कार प्राप्त कर गृह-कार्य में शिक्षित श्री जवाहर बारह वर्ष में ही अनेक प्रकार ग्रन्थों के बुद्धि-पूर्वक अध्येता, काव्य शास्त्र विचारक, दर्शनों के तत्त्वज्ञ, नीति विद्या विशारद, गीता आदि आर्ष धर्म ग्रन्थों, वेद-उपनिषदों के विशय सार के सर्वज्ञ योग विद्या से प्रभावित थे। वे सोचते थे कि बिना विमानों के ही आकाश में उड़कर सारे चित्र विचित्र संसार को नीचे देखूं। वे विचित्र स्वप्नों को देखते थे। ज्ञान-भावनाओं से विस्मित, देह गेह को भूल, आत्म-भाव से चमत्कृत

एनीबेसेण्ट-दीक्षायां गुह्य-ज्ञानेस्तु ज्ञापित ।
पवित्रो भाव-गम्भीरो-वयस्केषु प्रतिष्ठित ॥११९॥
गीतोपनिषदा सारैरुदारैस्तितोषित ।
अध्यात्म-भाव-तत्त्वज्ञो रसज्ञो ज्ञान-तेजसो ॥१२०॥
रहस्यज्ञोऽतिशुद्धाना ज्ञानाना हि प्रकाशक ।
इत्थमल्पवयो लाल प्रबुद्ध सर्व-कर्मसु ॥१२१॥
तत पञ्चदशे वर्षे गौरदेश जगामह ।
पितृभ्याञ्चानुजया च सहितोऽध्ययन-कर्मणे ॥१२२॥
राष्ट्र-भावैर्भृतात्माऽसौ निमग्नश्चिन्तनेऽभवत् ।
भारतमेशियाद्वीप चाह मोक्ष्यामि बन्धनात् ॥१२३॥
चिन्तयन् खड्गहस्तोऽभावति वीरो जवाहर ।
कल्पनागत-चित्तस्तु योरुपमचलत्तदा ॥१२४॥
पठँस्तत्रैव बालोऽसौ जिज्ञासा-रत-मानस ।
बाल लाल-दयालैश्च गोखले पालराणडै ॥१२५॥
महोत्साहै कृतोद्योगै सुयोग्यैर्ज्ञात-भारत ।
स्वातन्त्र्य-यज्ञ-पूर्त्यर्थ कटिबद्धस्तदाभवत् ॥१२६॥

रहते थे। आध्यात्मिक मनस्वि मण्डलो के सदस्य तथा एनीबेसेण्ट द्वारा दी हुई दीक्षा से गुह्य ज्ञान म परिचित थे। वे पवित्र भाव गम्भीर वयस्कों मे प्रतिष्ठित, गीता-उपनिषदो के उदार सारो से सतुष्ट थे। अध्यात्म भाव-तत्त्वज्ञ, ज्ञान तेज के रसज्ञ अति शुद्ध ज्ञान के रहस्यज्ञ और प्रकाशक थे। इस प्रकार छोटी आयु मे ही कार्य चतुर जवाहर, पन्द्रहवें वर्ष मे माता पिता तथा विजया बहिन के साथ पढने के लिए इग्लेंड गये। राष्ट्रीय भावो से भरे विचार-मग्न, भारत एव एशिया को स्वाधीन करने की सोचते, कल्पना करते हुए हाथ मे तलवार लेकर योरुप गये। वहाँ पढते हुए भी यही स्वाधीनता की जिज्ञासा रहती थी, तब महा उत्साही उद्योगी तथा सुयोग्य बाल गगाधर तिलक लाला लाजपतराय हरदयाल, गोखले, रानाडे एव विपिनचन्द्र पाल जैसे महानुभावो के सम्पर्क से भारत की स्थिति से भली प्रकार परिचित हुए और स्वतन्त्रता-यज्ञ की पूर्ति म लग गये।

यथा रामो दशरथं कौसल्यां च नृपालयम् ।
हित्वारण्यं गतो दूरं क्लेशावासं भयावहम् ॥१२७॥
शस्त्रास्त्रशास्त्रसंयुक्ता प्राप्ता विद्या वशिष्ठतः ।
व्यवहारेण विज्ञातुं विश्वामित्रेण सङ्गतः ॥१२८॥
यथा कृष्णः परित्यज्य मातृस्नेहं पितुर्मुदम् ।
गतस्तदा नन्द-गृहं यशोदां च तपस्विनीम् ॥१२९॥
तथा नन्दगृहं रम्यं परित्यज्य गतः श्रमम् ।
कुर्वन्नध्ययनव्याजं कुमारोऽत्र ज्वाहरः ॥१३०॥
वशिष्ठ-विश्वामित्राभ्यां शिक्षितो राघवो यथा ।
उज्जयिन्यां सान्दीपिना दीक्षितो यादवो यथा ॥१३१॥
द्रोणाचार्येण शस्त्रास्त्रैः पाठितः पाण्डवो यथा ।
तथा हैरो-कैम्ब्रिजाभ्यां स्नातकोऽभूज्जवाहरः ॥१३२॥
रामो राज्यं परित्यज्याटव्यां शबरीमतोषयत् ।
वानरान् निषदान् भिल्लान् किरातान् कोल-जातिजान् ॥१३३॥
राक्षसान् विविधाकारान् सदा पाप-परायणान् ।
अभ्युज्जहार सौहार्दात् तथैवाय जवाहरः ॥१३४॥
गोप्यः कुब्जा द्रौपदी च जरासन्ध-निपीडिताः ।
नार्यः समुद्धृतास्त्वाय यत-गन्त्य प्रमादिना ॥१३५॥

जिस प्रकार श्रीराम जी, पिता श्री दशरथ, माता कौसल्या तथा राज्य को छोड़ कर क्लेशावास, भयानक वन में दूर चले गये थे, शस्त्र, अस्त्र तथा शास्त्र की विद्या श्री गुरु वशिष्ठ जी से प्राप्त कर, क्रियात्मक व्यवहार के लिए विश्वामित्र के पास गये थे, जिस प्रकार श्री कृष्णजी माता देवकी व पिता वसुदेव जी को छोड़ नन्द जी के घर यशोदा तपस्विनी के पास गये थे, उसी प्रकार आनन्द भवन को छोड़ कर कुमार जवाहर अध्ययन के बहाने इंग्लैंड गये। वशिष्ठ तथा विश्वामित्र जी ने जैसे श्री राम जी को शिक्षित किया, श्री सान्दीपनी जी ने श्री कृष्ण जी को दीक्षा दी, श्री द्रोणाचार्य जी ने अर्जुन को शस्त्रास्त्र विद्या पढ़ायी, उसी प्रकार हैरो तथा केम्ब्रिज विद्यालयों से श्री जवाहर स्नातक बने। जैसे श्रीराम जी ने राज्य छोड़ वन में प्रसन्न, शबरी वानर, निषाद, भील, किरात, कोल तथा पाप परायण अनेक प्रकार के राक्षसों

सुदामा विदुरो गोपा मालाकारा पराश्रिता. ।
कृष्णेन दीन-नाथेन हीना सन्तर्पिता यथा ॥१३६॥
च्युताधिकारान् लोकेषु जाति-वर्ण-बहिष्कृतान् ।
तथा ग्राम्यान् हरिजनांश्चोज्जहार जवाहर ॥१३७॥
जवाहरो गतो गौरे हैरो विद्यालये पुरा ।
सामान्य ज्ञान-सम्पन्नो नातिष्ठत् पाठ्य-कर्मणि ॥१३८॥
बहुशश्चोत्तरैरस्य ज्ञानविद्यानिर्भरं शम् ।
चकिता बभूवुर्गोराः शिक्षका ज्ञान-दर्पिताः ॥१३९॥
प्रख्यापित स्वदेशीय ज्ञानमाग्लातिगमहत् ।
वर्ष-युग्मे लब्ध-कीर्तिर्गतः कैम्ब्रिज-संज्ञके ॥१४०॥
विश्व विद्यालयेऽध्येतु निरतश्छात्र-जीवने ।
हैरो-कैम्ब्रिजाप्त-विद्य. जातो वाक्कील-कीलक ॥१४१॥
महान्त योरुप रूस प्रमत्त सैन्य-शक्तिकम् ।
जापानो हि लघुर्देशएशियाकोऽजयत्तदा ॥१४२॥
जापान-विजयेनाथ नाथोऽभूद गर्वितस्स्वयम् ।
ऐच्छद्धि भारत कर्तुं महान्त शक्ति-शालिनम् ॥१४३॥

था कल्याण किया और दीनो के नाथ श्रीकृष्ण जी ने—गोपियो, कुब्जा, द्रौपदी जरासन्ध-पीड़ित नारियो यज्ञ पत्नियों, सुदामा, विदुर, गोप, माली तथा अन्य पराश्रितो की एव हीनजनो का उद्धार किया, उसी प्रकार लोगो मे अधिकार-भ्रष्ट, जाति-वर्ण-बहिष्कृत, ग्राम्य-जन तथा हरिजनो का उद्धार जवाहर ने किया।

सामान्य-ज्ञान-सम्पन्न जवाहर का मन हैरो विद्यालय की पाठ्य पुस्तको मे नही लगता था। अनेको बार इसके विद्याज्ञान से भरपूर उत्तरो से ज्ञान-दर्पित गोरे चकित हो जाते थे। वहाँ पर भारतीय ज्ञान गरिमा को प्रसिद्ध कर, दो साल मे हैरो मे यश प्राप्त कर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे अध्ययन करके व वकीलो को भी कीलने लगे।

उसी समय सैन्य शक्ति से प्रमत्त, योरुपीय देश रूस को एशिया के छोटे से देश जापान ने जीत लिया। जापान की विजय से गर्वित जवाहर भारत को शक्तिशाली बनाने की इच्छा करने लगे। आर्य भारत

अत्याचारे प्रवृद्धे हि गौराणामार्य-भारते ।
विरोधमाचरन् रुष्टा भारतीयास्तदा जनाः ॥१४४॥
जवाहरस्तदाचारस्तेषां मार्गेऽचलन्मुदा ।
गान्धिना मिलितः क्वापि तापितो देश-क्लेशतः ॥१४५॥
मोतीलालमसन्तुष्टं दृष्ट्वा भारतमातृदम् ।
जवाहरोऽलिखत्पत्रं सुतीक्ष्णं जनकं प्रति ॥१४६॥
किमर्थमवरोधो हि क्रियते विदुषात्मना ।
भवता भारतीयानां भावानां मोचनात्मनाम् ॥ १४७ ॥
मतभेदश्चिरं यावदचलज्जनकात्मजे ।
मोतीलालविरोधोऽन्ते गतः पुत्र-विवेकतः ॥१४८॥
गान्धि-भक्तोऽभवत्पूर्वं यथा पुत्रो जवाहरः ।
ऐश्वर्यं जीवनं त्यक्त्वा सत्यव्रत-परायणः ॥१४९॥
श्रभिवक्ताऽभवल्लालो निवृत्तो गौरदेशतः ।
मृगया-दत्त-चित्तोऽपि विषण्णो मृग-हत्यया ॥१५०॥
गान्धिना सङ्गतस्तेनाभवद् भारत-सेवकः ।
पित्राज्ञया कमलया विवाहमकरोन्मुदा ॥१५१॥

भारत में गोरों के अत्याचार बढने पर रुष्ट भारतीय विरोध प्रकट करने लगे । तब जवाहर जनता से मिल कर चलने लगे तथा देश के क्लेश से तप्त, श्री गांधीजी से जा मिले ।

पिता को अपनी भारत-सेवा से अप्रसन्न जान जवाहर ने बड़ा तीखा पत्र उनको लिखा । हे पिताजी ! आप विद्वान् होकर भी स्वतन्त्रता चाहने वाले भारतीय-भावों का विरोध क्यों करते हो ? इस प्रकार पिता पुत्र का विरोध देर तक चल कर जवाहर के विवेक से श्री मोतीलाल शान्त हो गये । जवाहर के समान मोतीलाल भी एश्वर्यमय जीवन को छोड़, सत्यव्रत परायण गांधी भक्त बन गये । जवाहर इग्लैंड से लौट बैरिस्टर बने । शिकार का शौक होते हुए भी मृग हत्या से दुखी हो कर शिकार करना छोड़ दिया । श्री गांधी जी से मिल कर देश सेवा में लग गये तथा इन्होंने पिता की आज्ञा से कमला के साथ प्रसन्नता से विवाह कर लिया ।

कमला-परिणयः

लक्ष्म्या विष्णुः शिवो गौर्या स्वरया जगदादिजः ।
सीतया राघवो यद्वद् रुक्मिण्या यादवो यथा ॥१५२॥
द्रौपद्या पाण्डवो मध्यः सावित्र्या सत्यवास्तथा ।
दुष्यन्तः शकुन्तलया वैदर्भ्या नल-भूमिपः ॥१५३॥
लोकनीत्या शास्त्ररीत्या वश-वृत्ति-विधानतः ।
तथैवायं कमलयालकृतोऽभूज्जवाहरः ॥१५४॥

तदा च सर्वसौभाग्य-सुलक्षणया, विविध-विद्या विचक्षणया, सत्कर्मदत्तेक्षणया, सकल-जन-कृतक्षणया, धर्मार्थ-धृतरणया, दुर्जनानामाशीविषफणया, सदा सदाचरणया, देशसेवार्थं कृत प्रणया, पतितार्तरव-दत्त-वर्णया, देश-भगागतागति-जन-दत्त-शरणया, हरिजन-दुःख-हरणया, नित्य सन्मार्ग-दत्त-चरणया, सुपथ-विहरणया, अविरत-मधोजनमुद्धरणया, पापापहरणया, केवल सौभाग्यार्थं धृताभरणया, सर्वतोभावेन कृतार्पणया, स्वपतिचरणपरायणया, श्री शिव-सेवार्थ-मुपस्थितयापर्णया, सर्वेक्षणया, मदिरेक्षणया, शुभगुणपणया, शुद्धवंशोत्पन्नया, सर्वगुणसम्पन्नया, महत् विपत्पतितयाप्यखिन्नया,

---

जिस प्रकार लक्ष्मी से विष्णु गौरी से शिव, स्वरा से ब्रह्मा सीता से राम, रुक्मिणी से कृष्ण, द्रौपदी से अर्जुन, सावित्री से सत्यवान् शकुन्तला से दुष्यन्त, एवं वैदर्भी से नल सुशोभित हुए उसी प्रकार लोक-नीति, शास्त्र-रीति व वश वृत्ति के द्वारा कमला से जवाहर अलङ्कृत हुए।

'और तब सर्व-सौभाग्य सुलक्षणा, विविध विद्या-विचक्षणा, सत्कर्म मे ध्यान देने वाली, सबको सुख देने वाली-धर्मार्थ युद्ध तत्पर, दुर्जनो के लिए सर्प-फण-मदमर्दनकार-परायण देश सेवार्थ-कृतप्रण, पतित-आर्त पुकार को सुनने वाली, देश विभाग होने से आये अनाथ जनो को शरण देने वाली हरिजन दुःख हरण करने वाली, नित्य सन्मार्ग मे चलने वाली, अच्छे व्यवहार मे रहने वाली, निरन्तर अधजनो का उद्धार करने वाली, पाप हरण करने वाली, केवल सौभाग्यार्थ आभरण धारण करने वाली, अपने आपको सर्व-विध देश-सेवा मे अर्पण करने वाली स्वपतिचरण परायण, श्री शिव-सेवार्थ उपस्थित

सविद्यया, समृद्धया, अरुद्धया, सुजनविन्द्यया, सुजनाभिवन्द्यया, अभिनव-यौवनरुद्धयापि अभिजनानुभववृद्धया, अचलया, अचपलया, धीरतया, वीरतया, गम्भीरश्रीगर्भजया कमलया इव काश्मीरजया विमलया कमलया जवाहरोऽशोभत ॥ १५५–१६० ॥

काश्मीर-सुषमा

जन्मभूमि नु काश्मीरं सकमलो गतवान्मुदा ।
तत्र दृष्ट्वा पूर्वजानां स्थितिं सौन्दर्यपूरिताम् ॥१६३॥
फल-पुष्पभृतां हृद्यां जलवायु-सुशोभिताम् ।
नयनानन्ददां रम्यामनिन्द्यां सर्वसुन्दरीम् ॥१६४॥
पर्वतोन्नतवृक्षैश्चाच्छन्नामाह्लादकारिणीम् ।
हृष्ट-पुष्ट जनैः सौम्यां रोचनां हिम-भास्वराम् ॥१६५॥
सच्चरित्रां सुपवित्रां सर्व-सद्गुण-मण्डिताम् ।
धीर-कान्तां सुशीलाञ्च सभ्यान्वैर्बहुपण्डिताम् ॥१६६॥
अनेकजातिवर्णैश्च सुगतामप्यखण्डिताम् ।
नतजैर्वनपादैश्च - दुष्ट-दुर्जनवर्जिताम् ॥१६७॥
सरोभिः सागराकारैः सरोतैः पूत-मानसाम् ।
तडागोदक-सम्पूर्णैश्च कमलैरति - हासिनीम् ॥१६८॥

पार्वती के समान, विद्यावान रखने वाली, महिमा सम्पन्ना वाली, शुभगुणों पर न्योछावर होने वाली, सुवंश उत्पन्न, सर्वगुण सम्पन्न, महान् विपत्ति में पड़कर भी अविचल, विदुषी, समृद्ध, विशुद्ध, अक्षुद्र, दुर्जन विरोधी तथा सज्जनानुकूल, अभिनव यौवन से भरी हुई भी उच्च कुल के अनुभवों से वृद्ध, अचला, अचपला, धीरता-वीरता से सम्पन्न, गम्भीर श्रीराशि से उत्पन्न लक्ष्मी के समान, काश्मीर में उत्पन्न कमला से श्री जवाहर शोभायमान होते थे ।

तब श्री जवाहर, कमला जी के साथ पूर्वजों की जन्मभूमि काश्मीर में यात्रार्थ गए । वहाँ पर पूर्वजों की निवास भूमि को—सौन्दर्यपूरित, फलों-फूलों से समृद्ध, हृद्य, जलवायु-सुशोभित, नयनानन्द, रम्य, अनिन्द्य, पर्वतों तथा उच्च वृक्षों से आच्छादित, आह्लादकारिणी, हृष्ट-पुष्ट जनों से सौम्य रोचना,

केसरैः कुङ्कुमैर्भूरिवर्णैरधिरञ्जिताम्   ।
कुमुदैः कमलैर्नित्यमुत्पलैर्बहुकोमलाम् ॥१६९॥
नद्यद्रिभिस्तडागैश्च सारविन्दैरनिन्दिताम् ।
स्वर्गापवर्गवर्गीया दुर्गमामरिदस्युभिः ॥१७०॥
हृता कैलास-चन्द्राभ्या भृताममृत-विन्दुभि ।
डोगरैर्मुद्गराकारैर्गिरिगौरव - सन्निभाम् ॥१७१॥
पठानैः कठिनाकारैर्वैकुण्ठादवलुण्ठिताम्   ।
द्विजैर्वेदाग-विद्भिश्च कृत यज्ञ-सुमगलाम् ॥१७२॥
दया-दाक्षिण्य-सयुक्ता सात्विकी लोक-रोचनाम् ।
त्याग-वैराग्य-युक्ता हि तपसा शुद्ध-लोचनाम् ॥१३७॥
जीवोपकार-निरता विरता पर-तापतः ।
वेदोक्त-कर्मसु रता दीनाना दुरितापहाम् ॥१७४॥
सर्व-भूत-हिता पुण्या गुण्या कारुण्य-सारिणीम् ।
असगता कुसगेषु सत्सगमनुवर्तिताम् ॥१७५॥
अनगारैरगनाना भगिमाभिस्तरगिताम् ।
कुविपर्यैर्दूरगा नित्य सत्यधर्मानुरञ्जिताम् ॥१७६॥

हिम-भास्वरा, सच्चरित्र, सुपवित्र, सर्व-सद्गुण-मण्डित, वीर-मल्ल-युक्त, सगीतज्ञो, शस्त्र-अस्त्र एव शास्त्रज्ञ बहुत पण्डितो वाली, अनेक जाति-वर्णो वाली भी अखण्डित, नपक्ष-पक्षपालो द्वारा दुष्ट-दुर्जनो को दण्ड देने वाली, नौकाओ वाली समुद्र समान बडी बडी झीलो से पवित्र मन वाली, तालाबो के कमलो से हास्यवाली, अनेक वर्ण के केसर-कुंकुमो से रगी हुई, निशा-विकासी कुमुद तथा दिवा-विकासी कमलो से कोमल, नदी, पर्वत, सरोवरो मे फूले कमलो से प्रशसित, स्वर्ग एव मोक्ष के समान अरि-दस्युओ से अगम्य, कैलास तथा चन्द्रमा से छोनी अमृत बिन्दुओ से पूरित, मुद्गराकार शरीरो वाले डोगरो से पर्वतो जैसे बडे गौरव वाली, कठिन आकार वाले पठानो द्वारा वैकुण्ठ से हर कर लाई हुई, वेदवेदागविद् विद्वानों द्वारा कृत यज्ञो से सुमगल वाली, दयादाक्षिण्य-युत, सात्विकी, लोकहितकारिणी, त्याग-वैराग्य युत, तप से शुद्ध नेत्रो वाली, जीवोपकारनिरत, पर-दुःख विरत, सर्वभूत-हित, पुण्य, गुणों तथा करुणा की प्रणाली,

सभ्या लभ्या ज्ञान-गम्या रम्या सौम्या सुमञ्जुलाम् ।
सर्वथा सत्य-सङ्कल्पा पुण्यगौरवगुम्फिताम् ॥१७७॥
ज्ञात्वा काश्मीरदेशस्य समृद्धिं परमोज्ज्वलाम् ।
सदा सदाचाररता पुलकितोऽभूज्जवाहरः ॥१७८॥
तुलयामास देशेभ्यो यौरपेभ्यस्तदोत्तमाम् ।
ज्ञान-गुर्वीं धर्म-धुरां मधुराध्वर-धुरन्धराम् ॥१७९॥
किं यौरपीया देशा हि गर्वेणोन्नत-कन्धराः ।
कृत्रिमैः प्राकृतैः रूपैः सुन्दरास्मद्वसुन्धरा ॥१८०॥
विजयेनोद्धता दृप्ता मञ्छलाः कूट-कारिणः ।
अनाचार-रता नित्य लुब्धा क्षुब्धा विलासिनः ॥१८१॥
विषयावृत-चित्तास्तु दुराचारा मदोत्कटा ।
तामसा क्लेशकर्तारः लोक-विध्वंस-कारकाः ॥१८२॥
ख्यापयन्ति स्वात्मवृत्तं सभ्य लोकोत्तरं महत् ।
दोषपूर्णं मार्ग-भ्रष्टं निन्दितं मुनिसत्तमैः ॥१८३॥
एकतो लोह-पाषाणैरनाचारैः सुपूरिताः ।
यौरपीया जना भान्ति क्लेशावासा भयान्विताः ॥१८४॥

कुसग से असपृक्त, सत्सग मे लगी हुई, कामदेव की अग-अगनाओ की भगिमाओ से तरगित, कुविषयो मे अनासक्त, सत्य धर्म म अनुरक्त, सभ्य, गुणलभ्य, ज्ञानगम्य, रम्य, सौम्य सुमजुल, सर्वथा सत्य सकल्प, पुण्य गौरव से गुम्फित, ज्ञान मे गुरु, धर्म की धुर, अच्छे यज्ञो से धर्म धुरन्धर, सदा सदाचार-रत, परम उज्ज्वल काश्मीर देश की समृद्धि को जानकर श्री जवाहर योरप के देशो से इसकी तुलना करने लगे तो यही उत्तम रही ।

अर्थ—योरप के देश क्यो अभिमान से सिर ऊँचा किये कह रहे हैं कि कृत्रिम तथा प्राकृत रूपो से हमारे देश की भूमि सुन्दर है वे विजय से उद्धत, दृप्त, छली, कूटकारी, अनाचारी, नित्य-लुब्ध, विलासी, विषयावृत चित्त, दुराचारी, मदोत्कट, क्लेशकर्त्ता, लोक स्वकीय, विध्वसक, दोषपूर्ण मार्ग-भ्रष्ट, मुनि सत्तमनिन्दित, चरित्र को सभ्य महान् और लोकोत्तर कह रहे हैं। एक ओर तो लोह-पाषाणों के अनाचारो से भरे योरप के लोग चमक रहे हैं, क्लेशो

इत्यन्तु भारतो देशस्तुष्टः पुष्टः स्वभागतः।
परस्व विषमाग्य हि परित्यज्य स्वभावत ॥१८५॥

शोभते परमोदार परमोपकारकः।
ऋषिनिर्दिष्टमार्गेण स्वेष्टसाधनतत्परः ॥१८६॥

त पीडयन्ति पापा हि क्षपाटा क्षयकारिण ।
राक्षसाः साक्षरा दृप्ताः स्वार्थसाधनलोलुपा ॥१८७॥

गौरा रौरव-घोरा हि चौरा घोराः सुरारयः।
निर्दयाः हिंसका. क्रूरा विश्वनाशन तत्परा ॥१८८॥

अतस्त बन्धनैर्मुक्त करिष्यामि प्रयत्नतः।
सहिष्ये यातनास्तीव्रा यतिष्येऽखिल साधनै ॥१८९॥

विरतो न भविष्यामि रणात्सत्याग्रहात्मकात्।
स्वाधीन न करिष्यामि यावद्देश हि भारतम् ॥१९०॥

युवकोऽसौ विलासार्थं सपत्नीको जवाहरः।
गत काश्मीरदेश हि शृ गार-रस-वर्द्धनम् ॥१९१॥

वहन्तमनिलैर्मन्दैर्दहन्त मदनानलैः।
पूजित पुष्पबाणैश्च केकी-कोकिल-कूजितम् ॥१९२॥

के घर भरे और हरे हुए है दूसरी ओर अपने भाग से ही तुष्ट-पुष्ट पर धन को स्वभाव से ही विष समझ कर छोड, परम उदार लोकोपकारी भारत शोभाय-मान है। ऐसे भारत को—पापी निशाचर क्षयकारी राक्षस, साक्षरताभिमानी, स्वार्थ-साधन लोलुप, घोर रौरव नरक निवासी, घोर-स्वभाव, चोर, देवशत्रु निर्दयी हिंसक, क्रूर और विश्वनाशन तत्पर पीडित करते है।

अर्थ—इसलिए ऐसे भारत को प्रयत्नो से स्वाधीन कराऊगा तीव्र यातना सहन करूगा। जब तक देश को स्वाधीन नही कर लूगा सत्याग्रह युद्ध से नही हटूगा।

वह युवायुगल—शृ गारवर्द्धक मन्द वायु-पूरित, मदनानल से उद्दीपक, काम के पुष्प-बाणो से पूजित, मयूर, कोयलो से कूजित, रम्य उद्यानो तथा

रम्योद्यानैः पयोयानैर्गानैर्म्यानैश्च गुञ्जितम् ।
फल-फुल्लैश्चलदलैः सलिलैः कल-कलायितम् ॥१९३॥
पार्थिवं सुषमागारं सर्वस्वं स्वर्गजं त्वजम् ।
अतुलं सप्तपातालैरूर्ध्वलोकाद्धृतं फलम् ॥१९४॥
परं व्यतिक्रमो जातः परमाश्चर्यकारकः ।
रतिं हित्वा गतो वीरं रसं वैभवभावनः ॥१९५॥
क्लिष्टाममरनाथस्य यात्रां तु कृतवानयम् ।
जवाहरोऽपनद्धैमे विषमे निर्गतो बहिः ॥१९६॥
निर्भयस्तु तदा तत्र सोत्साहः कार्य-साधकः ।
लब्ध-लक्ष्योऽजयन्मृत्युं नित्यं सत्य-परायणः ॥१९७॥
मूल्यवन्तो हि लालस्य रोचका सुप्रिया भृशम् ।
सर्वक्षेत्रा प्रभावा हि परं कल्याण-कारिणः ॥१९८॥
जवाहरस्य सौजन्यं हृद्यं पुण्यं मुदावहम् ।
समुद्रमिव गम्भीरं चरितं धीरवीरजम् ॥१९९॥
शूरगौरवनीरं हि गौर-पाटीर-सौरभम् ।
शुभ्रं क्षीराब्धिडिण्डीरं हसं मानसतीरजम् ॥२००॥

झीलों में तैरती हुई नौकाओं में गानों की तानों से गुंजित, झूमते हुए पत्ता-फूल-फलों वाले वृक्षों से प्रतिबिम्बित जलों से कल कल करने वाले, पृथ्वी की सुषमा के आगार स्वर्ग के शाश्वत सर्वस्व सप्त पातालों से अतुल, ऊर्ध्व लोक से लाये हुए सार रूप उत्तम काश्मीर में, काम-केलि के लिए गया।

पर बड़ा विपरीत काम हुआ, ऐसे विलास स्थान में गया जवाहर का वैभव में पला हुआ मन भी वीर रस में प्रवृत्त हुआ। दुर्गम अमरनाथ जी की यात्रा करते हुए जवाहर भयानक बर्फ में फँस गये, पर निकल कर निर्भय हुए उत्साह से कर्त्तव्य पालन के लिए तेज चलने लगे तथा मृत्यु को जीत लक्ष्य लाभ में सफल हो गये।

श्री जवाहर के अनुभव सर्व क्षेत्रीय, रोचक, अति प्रिय, परम कल्याण-कारी थे। श्री जवाहर के सुखद, हृद्य, पुण्य, सुखावह धैर्य-वीरता से पूर्ण, शौर्य-गौरव के जल से भरे, श्वेत चन्दन के समान यश-सौरभ से सुवासित,

स्वल्प-बुद्धिरहं जातो लेखने चातिदुस्तरे।
परमत्राफलोऽप्येव भविष्यामि प्रशसित ॥२०१॥

चरित्र-गौरवेणैव प्रयास सफलो मम।
दन्तभगो हि नागाना श्लाघ्यो गिरि-विदारणे ॥२०२॥

समुद्र सम गम्भीर, क्षीर-सागर की फेन के समान सफेद, मान सरोवर के हस—चरित्र का वर्णन करने चला हूँ। स्वल्प-बुद्धि मैं इस चरित्र लेखन कार्य मे प्रवृत्त हूँ। इस दुस्तर कार्य मे असफल हुआ भी प्रशसित ही हूँगा। चरित्र गौरव से ही मेरा प्रयास सफल होगा, क्योकि पर्वत तोडने मे हाथियो के दात टूटना भी श्लाघ्य ही होता है।



स्वराज्यान्दोलनम्

प्रथमे समरे घोरे गौरविध्वस-कारके ।
साहाय्यमाचरन् शौर्यं वीरा भारतसैनिकाः ॥२०३॥
तदेषां युद्धसामर्थ्याद् भीता गौरा कुलक्षणा. ।
रौलटैक्ट दुष्ट-विधि कृतवन्तो दुरोदरा. ॥२०४॥
विरोधमाचरेयुश्चेत्सैनिका प्राप्तशिक्षणा ।
विनाशोऽवश्यमस्माक भविष्यति न सशयः ॥२०५॥
मृता नष्टा पराभूता सर्वथा गतगौरवा ।
येषा साहाय्यदानेन जाता लब्धमनोरथा ॥२०६॥
तेषामेव विनाशार्थं सरलाना सुचेतसाम् ।
जाता भ्रष्टव्रता दुष्टा कुहकाः वर्ण-सकराः ॥२०७॥
स्वाधीनता-प्रदानस्य स्थाने रौलट-नामकम् ।
भारताय विधि निन्द्य प्रादुर्गौरव-नाशनम् ॥२०८॥
प्रतिश्रुत तु स्वातन्त्र्य पूर्वं युद्धाद्विनिश्चितम् ।
यदा युद्ध विजेष्यामो मोक्ष्यामो भारती महीम् ॥२०९॥
पर रौल्टविधानेन पीडितो भारतो भृशम् ।
विजयेनोद्धता गौरा विस्मृताः प्राणरक्षकान् ॥२१०॥

अर्थ—योरुप के अग्रेज विनाशी प्रथम युद्ध मे, भारतीय वीर सैनिको ने शौर्य पूर्ण सहायता की थी । तब भारतीयो की युद्ध सामर्थ्य से भीत दुष्ट-हृदय कुलक्षण गोरो ने रौलट ऐक्ट जैसे बुरे कानून को बनाया । गोरो ने सोचा कि यदि शिक्षित भारतीय सैनिक हमारे विरुद्ध हो जाँय तो अवश्य हमारा विनाश होगा । जिन भारतीयो की सहायता से मृत, नष्ट, पराभूत सर्वथा गत-गौरव गोरे पुन अपनी विजय प्राप्त कर गये, उन्ही सरल सुचित्त भारतीयो के विनाशार्थ—वर्णशकर, कृतघ्न, भ्रष्ट व्रत गोरे मायावी बन गये । स्वाधीनता देने के बदले, भारत को गौरव-विनाशी दुष्ट रौलट ऐक्ट दिया । गोरो ने पहले प्रतिज्ञा की थी कि—युद्ध जीत कर भारत को स्वाधीन कर देंगे, किन्तु

विलोक्य देशनेतार शान्तिसाधनतत्पराः ।
बभूवुर्दुःखिता भूरि सर्वे भग्न-मनोरथा ॥२११॥
तथापि शान्त-रूपेण रौलटैक्ट-विरोधिनः ।
दमिताः दण्डिताः क्लिष्टाः सर्वे भारतवासिन ॥२१२॥
निर्दय शासनेनाथ पीडिता जात-चेतना ।
हृताधिकारा सर्वे हि रुदन्तो विवशा परम् ॥२१३॥
जवाहरो ज्ञातवृत्तः पंचाम्बुरक्तपातज ।
त्यक्तुमैच्छद्धि सर्वस्वं भीतो जनकशासनात् ॥२१४॥
अस्वीकृति पितु प्राप्य कथ यास्यामि सगरे ।
चिन्तयन्निति देशार्थं निदेशार्थं हि पितृजम् ॥२१५॥
गान्धिन तु गतो शास्तु किं करोम्यनुशाधि माम् ।
पर तात कठोरो हि सर्वसाधनसयुत ॥२१६॥
नानुमेने परित्याग सर्वस्व बहुवैभवम् ।
दैनन्दिनो विवादोऽस्ति सघर्ष पितृ-पुत्रयोः ॥२१७॥
जातो जयो हि पुत्रस्य देशसेवाव्रतात्मक ।
"सर्वतो जयमन्विच्छेत्पुत्रादिच्छेत्पराभवम्" ॥२१८॥

रौलट ऐक्ट से भारत को और पीड़ित किया, विजयोद्धत गोरे प्राण रक्षकों को भूल गये, इस व्यवहार को देख शान्ति साधन मे लगे गाधी आदि सभी नेता भग्न-मनोरथ अति दु खी हुए। इतने पर भी शान्ति से ही विरोध करने वाले भारतीयो को गोरो ने दबाया, दण्ड तथा क्लेश दिये। निर्दय शासन से पीड़ित मूर्छित हृताधिकार भारतीय अपने घरो मे ही रोने पीटने लगे।

पजाब के रक्तपात को जान कर सर्वस्व त्याग चाहते हुए भी जवाहर पिताजी के शासन से डरते थे। पिता की आज्ञा बिना स्वाधीनता-युद्ध मे कैसे जाऊं, अत देश एव पितृ निर्देश की ओर जवाहर देखने लगे। तब श्री जवाहर महात्मा गांधी के पास जाकर कहने लगे कि मुझे कर्त्तव्य की शिक्षा दो, क्योकि सर्व साधन सम्पन्न मेरे पिता कठोर है। पिता ने बहु वैभव सर्वस्व त्याग की आज्ञा नही दी। प्रतिदिन पिता पुत्र के विचारो का सघर्ष चलता रहा। अन्त मे पुत्र के देश सेवात्मक विचारो की जय हुई, क्योकि 'सर्वत्र विजयाकांक्षी पिता भी पुत्र से पराजय चाहे' — यही नीति जवाहर की

इति नीतिनिर्गता सत्य विजये हि जवाहरे ।
ऐश्मत्यमभूदत्र मोतीलालगृहे शुभे ॥२१९॥

विक्रीताः सर्वसम्भारा भारतानिकरा वृथा ।
योरपा वेश-विन्यासा अश्वा सशकटास्तथा ॥२२०॥

त्यक्ता भृत्या विलासार्थं ये हि पूर्वं नियोजिता ।
खद्दराण्यपि वस्त्राणि भोग्य भोज्य नुनयनम् ॥२२१॥

कुटुम्बः सरलो युद्धेऽपतद् गान्धीनिदर्शिते ।
स्वकीयेऽपूर्व-साफल्ये प्रसन्नोऽभूज्जवाहर ॥२२२॥

खद्दराण्यपि वस्त्राणि निर्मितानि स्वदेशजे ।
स्वीकृतानि च वस्तूनि भारतीयानि सर्वत ॥२२३॥

स्वल्पमूल्यानि स्वेच्छातो निर्धने देशभारते ।
आन्दोलनमारब्ध सत्य सत्याग्रहात्मकम् ॥२२४॥

पंजाब-देशे वीराणामग्रणी रणगोपणे ।
शासनावनिभूगणा भूतौ दोषगुणान्वितौ ॥२२५॥

भूपेन्द्र सिंहः पट्याले नाभेऽभूद्रिपुसूदनः ।
पितृव्य भ्रातृजाधार सम्बन्ध. कुलजस्तयोः ॥२२६॥

विजय का कारण बनी, जिससे मोतीलाल जी के घर में परिवर्तन हो गया ।

भारत के विपरीत योरप के वेश विन्यास, घोड़े तथा गाड़ियां बेच दीं, विलासार्थ-नियुक्त भृत्य हटा दिये, वस्त्र खद्दर के बने, भोग्य एवं भोज्य वस्तुएं सस्ती हो गयीं, सारा कुटुम्ब गांधी-दर्शित सत्याग्रह युद्ध में कूद पड़ा, अपनी इस सफलता पर जवाहर बड़े खुश हुए । तब पूरे परिवार ने निर्धन भारत में स्वेच्छा से स्वल्प-मूल्य, अपने देश में बने खद्दर वस्त्र तथा भारतीय साधन अपना लिए तथा सत्याग्रह-आन्दोलन आरम्भ कर दिया ।

शत्रुओं को युद्ध में विलखिलाने वाले वीरों के देश पंजाब में गुण दोषान्वित शूरवीरों के दो राज्य हुए हैं । पटियाला में भूपेन्द्रसिंह तथा नाभा में रिपुदमन सिंह नाम से चाचा भतीजे के सम्बन्ध से दो राजा थे । कुलवंश में उत्पन्न हुए

नाभा-पट्यालयोस्तत्र नृपयो कलहो ऽभवत् ।
भूपेन्द्र-रिपुदमनयो फूलवंशजयोरपि ॥२२७॥
चाटुकारैर्लुब्धपिशुनै स्वार्थान्धैरधिकारिभि ।
परस्पर सकपटैर्नासीत्तत्रान्यकारणम् ॥२२८॥
गोरागैर्लब्धमाहाय्यैः पट्यालयशासके ।
च्यावितो राज्यतो नाभा-नरेशो देशसेवक ॥२२९॥
शासनस्थापकस्तत्र नियुक्तो गौरदेशज ।
निरुद्धोऽखण्ड पाठो वै गोरेण गुरु-ग्रन्थज ॥२३०॥
टिव्वी साहिव इत्याख्ये गुरुद्वारे प्रवर्तित ।
अखण्डपाठारम्भार्थं रिपुसूदन-हेतुकम् ॥२३१॥
आन्दोलनमारब्ध सिक्खैर्लोक-हितावहै ।
यूथैर्हि गमनारम्भः कृत सिक्खैर्नियोजितः ॥२३२॥
निरुद्धो राज-पुरुषैर्नियुक्तैरतिनिष्ठुरै ।
निबद्धाः सैनिकैस्तत्र ये यूथास्तेऽतिताडिता ॥२३३॥
त्यक्ता च घोर कान्तारे निर्जने क्लेश-संकुले ।
अस्यातिघोराचारस्य समाचारान् निरङ्कुशान् ॥२३४॥
क्लेशाकुलोऽभवन्नित्य जनतार्ति-निपीडित ।
जवाहरो महानात्मा पर-दुःखेन कर्षित ॥२३५॥

भी इन दोनो का परस्पर कलह चला । चाटुकार, लुब्ध, पिशुन, स्वार्थान्ध कपटी अधिकारियो के कारण ही यह विवाद था और कोई विशेष कारण नही था । पटियाला के शासकों की सहायता पाकर गोरों ने नाभा नरेश को राज्य च्युत कर दिया । शासन व्यवस्था के लिए नियुक्त गोरे ने टिब्बी साहिब गुरु द्वारे मे आरम्भ श्री गुरुग्रन्थ साहब के अखण्ड पाठ को बन्द करा दिया । लोक हितैषी सिक्खों ने अखण्ड पाठ करने तथा महाराजा रिपुदमनसिंह को वापस लाने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया । सिक्खो द्वारा निर्धारित जत्थो ने जाना शुरू किया तथा नियुक्त निष्ठुर राज पुरुषो ने उन्हे रोक दिया । जिन जत्थो को सैनिकों ने घेर लिया उन्हे बहुत मारा तथा निर्जन क्लेश-बहुल घोर वन मे जा छोड़ा । इस अति घोर आचार के निरकुश समाचारो को, जनता

मभामम्मेलनान्ते तु कृते दिल्ल्या विशेषत. ।
द्वितीय सिक्ख-सन्दोह द्रष्टु तत्र-निमन्त्रित: ॥२३६॥

स्वीचकार महाभाग सहयोगि-समन्वित. ।
गिडवानी के०के० सन्तानमित्राभ्या सगतो गत. ॥२३७॥

निवारितोऽपि गौराङ्गैर्घोरैर्भयप्रदर्शकै ।
निर्भयस्तु गतस्तत्र मित्रद्वय-समन्वित ॥२३८॥

के दुख से पीड़ित, दूसरो के क्लेश से आकम्पित, महान् आत्मा [illegible] से पढते थे। दिल्ली मे विशेष रूप से किये गये कांग्रेस अधिवेशन के [illegible] सिक्खो के दूसरे जत्थे के चलने पर वहाँ की परिस्थिति को [illegible] बुलाये हुए जवाहर ने श्री गिडवानी और के० के० सन्तानम् [illegible] मित्रों के साथ वहाँ जाना स्वीकार कर लिया। घोर-भयंकर, [illegible] द्वारा रोके जाने पर भी दोनो मित्रो के साथ जैतो में निर्भय [illegible]



जयतु [जैतो] नाम्ना प्रसिद्धे लेखकस्य जन्मनगरे श्री जवाहरलालस्य प्रथमं चरणकमलार्पण-वर्णनम्

जयतुनगरे रम्ये नाभा-राज्यमुपाश्रिते ।
जगाम जगदाधारः सजगः सजगो मगे ॥२३९॥
गृहीतो राजनीतिज्ञैर्निबद्धो लौहशृङ्खलैः ।
उच्छृंखलैः खलैरेव सच्छलैश्च निरर्गलैः ॥२४०॥
निर्बलैर्नीतिधर्मेषु समलैरघ-राशिषु ।
निरक्षरैरनाचारैर्निश्चरैरतिदुश्चरैः ॥२४१॥
अत्याचार-परैरौद्रैरुदरम्भरिभिश्चरैः ।
खरैरभद्रशिखरैरीतिराचारवर्जितैः ॥२४२॥
गोरखैर्डोगरैश्चापि नैपालैः काश्मीरजैः ।
वराकैर्लब्ध-साहाय्यैरसह्यै रसदात्मभिः ॥२४३॥
परमस्य प्रतापेन मोतीलालप्रभावतः ।
त्यक्तो जवाहर सिंहो जम्बुकैर्ज्ञात-पौरुषैः ॥२४४॥
तथापि देशसेवायां सगतोऽहर्निशं मुदा ।
निर्भयः क्लेश-कार्येषु लोकाराधन-तत्परः ॥२४५॥
जगर्ज धीरं गौरेषु गच्छध्वमति सत्वरम् ।
त्यजध्वं भारतं भारं भजध्वं निजपद्धतिम् ॥२४६॥

अर्थ—नाभा राज्य में बसनेवाले जैतो नगर में जगत् के आधार, वहाँ के कष्टों को जानते हुए भी, मार्ग में देशभक्ति के गीत गाते हुए चले। वहाँ पर इन्हें उच्छृंखल, खल, छली, निरर्गल, नीतिधर्म में निर्बल, अघराशि में मैले, निरक्षर, अनाचारी, निश्चर, दुश्चर, अत्याचार-परायण, रौद्र-उदरम्भरी चर, खर, अभद्र-शिखर, रीति-आचार-वर्जित, दुष्टात्मा राजपुरुषों ने - बेचारे नैपाली गोरखों व काश्मीरी डोगरों की सहायता से पकड़ कर हथकड़ियों से जकड़ दिया। पर इनके प्रताप तथा पं० मोतीलाल जी के प्रभाव से उनके पौरुष को जान कर गोरे गीदड़ों ने जवाहर रूपी सिंह को छोड़ दिया। तथापि देश-सेवा में दिनरात प्रसन्नता से लगे हुए, कठिन कार्यों में निर्भय, लोकाराधन-तत्पर जवाहर, गोरों में धीर गर्जना करते हुए कहते थे कि—ऐ अंग्रेजो! तुम यहाँ से शीघ्र चले जाओ, भारत के भार को उतार दो, अपना रास्ता नापो।

कथ सहेयुर्गौरा हि विरोध शासनात्मकम् ।
पाण्मासिकोऽभवद् बन्ध उभयो पितृ पुत्रयो ॥२४७॥
ततस्तु बन्धो मुक्तिश्च नित्य जाता रतिप्रदा ।
मुक्ता यदाखिला राजवन्दिना दैवयोगत ॥२४८॥
जवाहरोऽभवन्मुक्त किंचित्काल मुयागत ।
सौमनस्य पर नासीत्प्रजापालकयोर्हृदि ॥२४९॥
पूर्वयुद्धान्तिमे भागे रूस क्रान्ति महत्यभूत् ।
समाप्त जारज राज्य राजित जन-शासनम् ॥२५०॥
दशमे ह्युत्सव चाप्या शान्त्या लोकैरुपस्थित ।
जवाहरो गतो रूस द्रष्टु स्वातन्त्र्य मगलम् ॥२५१॥
तदा हि रूस देशीया सयता क्लिष्ट-जीवना ।
सुस्मितास्या प्रकाशाज्ञा सुव्रता दृढनिश्चया ॥२५२॥
सयत्ना रूसमुद्धर्तु सर्वं देश समुन्नतम् ।
दृष्ट्वैषा हि समुत्साह सुप्रभावो जवाहर ॥२५३॥
निवृत्तो भारत देश तदाय शुभसेवक ।
ऐक्य भारतदेशस्य दृष्ट्वा सत्यपरायणम् ॥२५४॥
कपटा कूटनीतिज्ञा गौरा भारत-वञ्चका ।
बातुमैच्छंस्तदा किंचित्स्वातन्त्र्य राजनैतिकम् ॥२५५॥

अर्थ—अग्रज शासन का विरोध कैसे सह अत पिता-पुत्रो को छ मास की जेल हो गयी । इसके बाद बधना छूटना रोज का काम हो गया । जब दैव योग से सारे राज वन्दी छोडे गये तब कुछ समय के लिए जवाहर भी छूटे पर प्रजा तथा शासको के दिल म सदभावना नही थी ।

पूव युद्ध के अतिम भाग मे रूस म बडी भारी क्राति हुई उसके दशम उत्सव को देखने के लिए जवाहर वहा गये तब रूस निवासी क्लेश सहन करते हुए भी सयम से हँस मुख प्रसन्नचित्त सदव्रती तथा दृढनिश्चयी थे । रूसवासी सारे देश की उन्नति तथा उद्धार म सयत्न थे । उनके सम्यक उत्साह को देख कर जवाहर पर अच्छा प्रभाव पडा ।

तब भारत सेवक जवाहर स्वदेश लौटे इधर सत्यपरायण भारतीय एकता

विचारार्थं समागच्छद्देशे साईमन कमीशनम् ।
दास्यामो भारतार्थं वै राज्यमाग्लनियन्त्रितम् ॥२५६॥
परमैच्छन् भारतीया स्वराज्यमखिलर्द्धिमत् ।
अखण्डमण्डल राज्य सर्वसाधनसम्भृतम् ॥२५७॥
निरकुशं जन-कृत जनतायाः हितावहम् ।
अतः कमीशनस्यास्य बहिष्कारः कृतो जनैः ॥२५८॥
श्रीलाजपतमुख्येषु शोक-ध्वज-धृतेषु च ।
प्रहारो यष्टिकादीना कृतो गौरैरमानुषैः ॥२५९॥
पचाम्बुकेशरी-प्रख्यो लालालाजपतोऽपतत् ।
हतस्तु ताडितो वक्षे निर्दयैर्गौर-राक्षसं ॥२६०॥
शोकाकुलमिमं देशं पूर्णस्वातन्त्र्यभागिनम् ।
परित्यज्यामरो जातः प्रिय. पचाम्बु-केशरी ॥२६१॥
अत्याचारं तु गौराणामप्रतिकार-वर्तुषु ।
अशस्त्रेषु विलोक्यैव विव्यथेऽस्य जवाहर ॥२६२॥
धृत-व्रतोऽभवत्तत्र कटिबद्धः सदाग्रह ।
अधिवेशन स्वराज्यस्य सभाया लवनागरम् ॥२६३॥
तथाप्यक्षोऽभवद् धीरो देशदासो जवाहर ।
अर्धरात्रे धृत-व्रता सर्वस्वार्पण-तत्परा ॥२६४॥

को देख, कपटी कूटनीतिज्ञ, भारतवर्ष गोरों ने कुछ राजनैतिक स्वाधीनता देनी चाही। इस विचार के लिए साइमन कमीशन आया कि भारत को गोरों के अधीन शासन चलाने का अधिकार दिया जाय। किन्तु भारतीय सर्व-समृद्ध, सर्व-साधन-पूर्ण, निरंकुश, जन-कृत, जनहितावह, अखण्डमण्डल स्वराज्य चाहते थे, अतः इन्होंने साइमन कमीशन का बहिष्कार किया।

श्री लालाजी प्रमुख व्यक्तियों के काले झण्डे लेकर विरोध करने पर मानवताहीन गोरों ने लाठी प्रहार किया, जिससे गोरे राक्षसों की लाठियें छाती पर लगने से पंजाब केसरी—पूर्ण स्वतन्त्रता के भागी इस देश को शोकाकुल छोड़—अमर हो गये। प्रतिकार न करने वाले किन्तु इन लोगों पर अत्याचार देख जवाहर दुःखी हो गये। लाहौर में कांग्रेस सभा के अध्यक्ष

भापणेनास्य वीरस्य वलिदानकृतोद्यमा ।
प्रेरणेनात्मत्यागस्य भारतीयास्तु तत्परा ॥२६५॥
पूर्ण-स्वातन्त्र्यमानेतु कटिवद्धोऽभवत्तथा ।
सर्वसौख्य परित्यज्य क्लिष्ट-कर्मणि तत्पर ॥२६६॥
सभ्यताया विदेशस्य तुष्टः पुष्ट सुशिक्षित ।
तथापि भारतीयाना मर्मज्ञो हि जवाहर ॥२६७॥
कृपकश्रमिकाणाच कष्टैर्दु खितो यथा ।
जवाहरोऽभवत्खिन्नो नान्य कश्चन नायक ॥२६८॥
मिलित कृपकेष्वेव श्रमिकेष्वपि सगत ।
उन्नायकोऽभवत्तेपा जीवने दत्तयौवन ॥२६९॥
सर्वप्रियोऽभवत्तनाध्यक्षो लोकप्रमादक. ।
आन्दोलने लावणिके धृतो वीरो जवाहर ॥२७०॥
कारागार गतो मुक्तो धृतो मुक्तो मुहुर्मुहु ।
समित्र सकुटुम्बोऽसौ सत्याग्रहपरायण ॥२७१॥
गतो हि क्लेश-बाहुल्य पर न विचचाल ह ।
विसृज्य सुखसन्दोह विश्राममतिशोभनम् ॥२७२॥

श्री जवाहर बने, वहाँ पर सर्वस्व त्याग की प्रतिज्ञा तथा प्रेरणा की जिसे सुन आधी रात मे ही भारतीयो ने बलिदान की भावना प्रकट की ।

चौंतीस वर्ष के जवाहर काग्रेसाध्यक्ष बने। इससे पूर्व कोई भी इतनी छोटी आयु मे अध्यक्ष नही बना था। इनके यौवन ने सभा मे नई शक्ति भर दी, इस मनस्वी ने मन्त्रित्व तो पहले ही देर तक किया था, पर सभाध्यक्ष के चमत्कार लोगा ने अब जाने, इस प्रकार इन्होने सभा को अच्छी उन्नति दी । सब सुख छोड कठिन कर्म मे प्रवृत्त जवाहर पूर्ण स्वाधीनता लेने को कटिवद्ध हो गये, योरुप की सभ्यता मे तुष्ट-पुष्ट एव शिक्षित होकर भी ये भारतीया के मर्मज्ञ थे । कृषक एव श्रमिका के कष्टा से जिस प्रकार जवाहर को दु ख हुआ वैसा आज तक किसी को भी नहीं हुआ । उन्होंने कृषकों व श्रमिकों मे मिलकर उनके जीवनार्थ अपने को अर्पण कर उन्हें उन्नत किया । उनकी प्रसन्नता के लिए प्रिय जवाहर नमक आन्दोलन मे पकडे गये । मित्रा तथा कुटुम्ब के साथ सत्याग्रह म लगे बार-बार पकडे तथा छोडे गये । यो सुखाधिक्य एव सुन्दर विश्राम को छोड, क्लेश-जाल मे फंस कर भी वे देश-सेवा से विचलित नहीं हुए ।

आहुतयः

अयोध्याधिपयत्पूज्यो मोतीलालो जहाविमम् ।
वीरं राम-सम धीरं गम्भीरं विधिपालकम् ॥ २७६ ॥
यथारामेऽति दुःखानि पतितानि मुहुर्मुहुः ।
तथा जवाहरो वीरः पतितः शोक-सागरे ॥२७७॥
त्यक्त्वा शोकाकुलं मोतीलालस्त्वमरतां गतः ।
कौटुम्बिकोऽपतद्भारो देशोद्धारे जवाहरे ॥२७८॥
धैर्येणैव धृतं सर्वं कुशलेन सु-संयतम् ।
ज्ञातः सर्वजनैस्तत्र विवेकोऽस्य महात्मनः ॥२७९॥
कमला श्रमबाहुल्याद् गता रोगं सुकोमला ।
मातापि व्याधि-युक्तासीत् प्राणाधार-वियोगतः ॥२८०॥
तयोः रोग-निरोधार्थं माता-पत्नी-समन्वितः ।
मसूरीमागतो वीरो होटलावासमाश्रितः ॥२८१॥
निर्वासितोऽधिकारिभ्यः प्रयागस्त्वागतः पुनः ।
प्रतापगढतः प्राप्तैः कृषकैः सगतस्तदा ॥२८२॥
जीर्णशीर्णांग-वस्त्रैश्च बुभुक्षापीडितैर्जनैः ।
वृद्धैःकर भारैर्घोरैर्गृहेभ्योऽपि बहिष्कृतैः ॥२८३॥

अर्थ—पूज्य अयोध्यापति महाराज दशरथ के समान मोतीलाल जी ने भगवान् श्री राम के समान धीर, वीर, गम्भीर और आज्ञापालक श्री जवाहर को विदा किया। जिस प्रकार श्रीरामजी बारम्बार सङ्कटों में पड़े थे, वैसे ही जवाहर भी अनेकों वार शोक सागर में पड़े। श्री मोतीलाल जी के अमर हो जाने पर शोकाकुल जवाहर पर देशोद्धार के साथ ही कुटुम्ब का भार भी आ पड़ा। इस चतुर ने धैर्य एवं संयम से सब सहन किया तब लोगों ने इनके विवेक को पहचाना। कोमलाङ्गी कमला श्रमाधिक्य से रुग्ण हो गयी, माता स्वरूपा भी पूज्य पति प्राणाधार श्री मोतीलाल के वियोग से रुग्ण थी। उन दोनों की चिकित्सा के लिए माता और पत्नी को साथ लेकर जवाहर मसूरी पहुँच कर होटल में ठहरे। पर गोरे अधिकारियों ने आपत्तीय होने के कारण इन्हें होटल से निकाल दिया। ये वापिस प्रयाग आ गये। तब प्रतापगढ़ से आये—जीर्णशीर्ण वस्त्रों वाले, बुभुक्षा पीड़ित अतो, वृद्ध कर-भारों से विकराल, घरों से भी

अनाधारैरनाचारैं सर्वस्वमपि लुठितैं ।
ग्राम गतो हि तत्रत्य दशया परिचितोऽभवत् ॥२८४॥
तथापि वज्रपातोऽभूत्कमलानिधनात्मक ।
स्वामिना सगतायामीत्कारागार गता मुहु ॥२८५॥
रुग्णाभवद्देश-दासी कमला कमललोचना ।
चिकित्सार्थं गता सापि विदेश रोगयोगत ॥२८६॥
तथापि स्वास्थ्य नैवाप देहान्तोऽप्यास्यदाभवत् ।
पति पुत्री विहायैषा रुदन्ती भाग्नी महीम् ॥२८७॥
नून गतेन्दिरा-लोक शोक-मग्नात्मजेन्दिराम् ।
परित्यज्य भुव याता दिव रोगमभीप्सिम् ॥२८८॥
जवाहरो निवृत्तस्तु भारत भार-पीडित ।
काग्रेसाध्यक्षतां प्राप्य कटिबद्ध स्वकर्मणि ॥२८९॥
गौरैर्भारत-भ्रान्त्यर्थं अधिकार स्वराज्यज ।
दत्त किंचिद्विनोदार्थं प्राप्ता प्रान्तैः स्वतन्त्रता ॥२९०॥
अफलास्तु भविष्यन्ति भारतीया स्वशासने ।
यास्यन्ति हास्यता दीना राजनीत्यामचेतना ॥२९१॥
केन्द्रस्तत्त्वधिष्ठितो गौरैं सर्व-शक्ति-समन्वितैं ।
अतो देशस्त्वसन्तुष्ट स्वाधिकारैः सवन्धनैं ॥२९२॥

निकाले हुए, आधार तथा आचार से हीन, सर्वस्व लुटे हुए—किसानो से मिले तथा उनके गावों मे जाकर वहाँ की दशा से परिचित हुए।

तब अनेको वार पति के सग जेल जाने वाली, चिकित्सार्थ विदेश गयी कमललोचना कमला, रोती हुई भारत-भूमि, पति तथा पुत्री को छोड, इन्दिरा (लक्ष्मी) के लोक वैकुण्ठ मे चली गयी। कमला के निधनात्मक वज्रपात के भार से पीडित नेहरू भारत लौटे और कांग्रेस के अध्यक्ष बन अपने काम मे लग गये।

भारत को कथित भ्रात सम्पन्नता देने के लिए, मनोविनोदार्थ गोरो ने कुछ स्वराज्य के अधिकार दिये। भावना यह थी कि—दीन, राजनीति से अपरिचित, भारतीय स्वशासन मे असफल होगे। अत प्रान्ता को तो स्वतन्त्रता दी, किन्तु सर्वशक्ति-सम्पन्न केन्द्र गोरो ने अपने हाथो मे रखा। नियन्त्रित अधिकारों

निश्चित सरकारेण विनष्टाः क्रान्ति-कारिणः ।
दमनेन हि निर्जीवा काग्रेसाख्या सभाऽस्ति वै ॥२६३॥
मतादाने तु लोकानामष्ट-प्रान्तेषु वै जनैः ।
नेतारो देश-दासा हि स्थापिता शासनासने ॥२६४॥
केन्द्र-सत्ताप्रदे काले युद्धारम्भोऽपरोऽभवत् ।
यूरुपेजर्मनैर्दत्तो-गौरगौरव-नाशनः ॥२६५॥
वाञ्छितं तु तदाग्रेजैः साहाय्यं भारतोद्भवम् ।
अविश्वस्ता परं लोका प्रतिज्ञाभ्रष्ट शासनात् ॥२६६॥
पूर्व-युद्धे कृतव्रता गौरा सगर-सागरम् ।
तरिष्याम करिष्याम स्वाधीना भारती महीम् ॥२६७॥

विजय-पर्वः

अतोऽत्रकृतसकल्पाः सर्वांगीणस्वतत्रताम् ।
प्राप्तु कामा भारतीया पूर्वं साहाय्यदानतः ॥२६८॥
यत कल्याण-सामर्थ्यं स्वातन्त्र्येणैव जायते ।
युद्धसन्तप्तविश्वस्य ज्ञात विज्ञैर्विचक्षणैः ॥२६९॥

से देश सन्तुष्ट नही हुआ । अंग्रेजो का विचार था कि क्रान्तिकारी नष्ट हो गये, दमन से कांग्रेस निर्जीव हो गयी, पर मत लेने के समय जनता ने आठ प्रान्तो मे कांग्रेस का शासन बनाया । भारतीयो के केन्द्र-सत्ता-प्राप्ति काल मे जर्मनी की ओर से यूरुप मे गोरो के गौरव को नष्ट करने वाला युद्धारम्भ हुआ । अंग्रेजो ने भारत से सहायता चाही, पर लोग पहले ही प्रतिज्ञा-भ्रष्ट शासकों से अविश्वस्त थे । पहले गोरो ने प्रतिज्ञा की थी कि जब युद्ध जीत लेंगे तो भारत को स्वाधीन कर देंगे । किन्तु विजयी, भ्रष्ट-व्रत गोरे भारत को स्वाधीन न करने के लिए अनेक प्रकार के छल करने लगे ।

इसलिए भारतवासी सहायता देने से पूर्व ही स्वाधीनता प्राप्ति का संकल्प किये हुए थे । क्योंकि विज्ञ विचक्षण पुरुषो की जानकारी मे युद्ध-सतप्त

गोरैर्गौरिवगर्वेण न श्रुत लोक-भाषितम् ।
विचारोऽति चिर यावदभवद् गौरभारत ॥३००॥
पूर्णस्वाधीनताम्पे सकल्पे लौकिके श्रुते ।
गान्धिना घोषित गौराः परित्यजत भारतम् ॥३०१॥
क्रुद्धा गौरा निरोधार्थं नेतृणा प्रभुत्ना मुहु ।
प्रियो जवाहरोऽप्यत्र वद्धोऽग्रेजैरनिद्रुहै ॥३०२॥
अहमदाख्ये पुरे दुर्गेऽज्ञातो भारत-मानवे ।
ध्यानेन चिन्तयामासोपयोग. समयस्य वै ॥३०३॥
यथा भवेज्जनाधारो देशोत्साह-विवर्द्धन ।
अतो लिखामि सद्ग्रन्थान् भाविनो बोधनात्मकान् ॥३०४॥
स्थायित्व मम भावाना लेखनेनैव सम्भवेत् ।
इति निश्चित्येतिवृत्त भारतमलिखन्मुदा ॥३०५॥
ततो 'विश्वस्येतिवृत्त' तथैव 'मम जीवनम्' ।
लिखितानीन्दिरार्थं तु पितु· पत्राणि भावतः ॥३०६॥
रचितो ग्रन्थ सन्दोहः सदानन्द प्रद सदा ।
सुगमः सरलः पुण्यो हित सर्व-सुखावहः ॥३०७॥

विश्व के कल्याण की सामर्थ्य स्वतन्त्रता से ही सम्भव है। अहकारी गोरो ने लोक-भाषा को न सुना और अग्रेजो तथा भारतीयो का विचार विमर्श देर तक चलता रहा। जनता के पूर्ण स्वाधीनता सकल्प का जब गोरो ने न सुना तो गाधी जी ने घोषणा कर दी कि ऐ गोरो ! भारत छोड दो। क्रुद्ध गोरे, नेताओ को धडा घड पकडने लगे, श्री जवाहर को भी द्रोही अग्रेजो ने पकडकर गुप्त रूप से अहमदपुर के किले मे रखा, वहाँ पर जवाहर ने समय के सदुपयोग को विचारा कि—लोकोत्साहवर्द्धक-आधार, भविष्य मे ज्ञान देने वाले, सद्ग्रन्थो को लिखू, मेरे भावों की स्थिरता भी लिखने से ही सम्भव है। ऐसा विचारकर 'भारत की खोज', 'विश्व इतिहास की झलक', 'मेरी कहानी', 'पिता के पत्र पुत्री के नाम', तथा सत्पुरुषो को आनन्द देने वाला सुगम, सरल सदा पुण्य-हितकारी, सर्वसुखावह और भी ग्रन्थ समूह लिखा।

द्वितीय समरस्यान्ते मुक्ताः सर्वे हि वन्दिन. ।
तदा स्थितिरियं जाता गौराणां भयावहा ॥३०८॥
अकल्पा शासने जाता विवशा राज्यकारिणि ।
आन्दोलनेन लोकानां गौराणां स्थितिः निर्बला ॥३०९॥
ततः सुभाष-सेनाया उद्योगः प्रबलोऽभवत् ।
इदानीं न सहिष्यामो दुराचारान्नराधमान् ॥३१०॥
कटिबद्धैः स्वदेशीयैरुक्ताः साम्राज्य-वादिनः ।
सत्याग्रहैः स सैन्यैश्च गान्धिः नेता सुशिक्षितैः ॥३११॥
जन्मसिद्धोऽधिकारो वै स्वाधीना स्युः सदा नराः ।
भारतस्य तदेवेष्टं नान्यद् न्याय्यं हि दीयताम् ॥३१२॥
पूर्वमुद्घोषितं एतत् तिलकेन सुधीमता ।
भारतीयैस्तथान्यैश्च वैदेशैश्च महोदयैः ॥३१३॥
सदयैरात्ममर्मज्ञैः राजनीति-विशारदैः ।
दास्य-दुःखानुभावज्ञैः स्वातन्त्र्यसुखमिच्छुकैः ॥३१४॥
सुभाषो युद्ध-सकल्पः कटिबद्धः स्वकर्मणि ।
साहाय्यं सक्रियं लेभे जापान-जर्मनोद्भवम् ॥३१५॥
आजाद-हिन्द-सेना तु कृत्वा भारत-सेविकाम् ।
धन-धान्य-विनोद्भूतामभूता शुभ-लक्षणैः ॥३१६॥

द्वितीय युद्ध के अन्त में सभी भारतीय बन्दी छोड़ दिये गये, तब गौरों की स्थिति भयानक और कांग्रेस के आन्दोलन से डावांडोल थी। दूसरी ओर से घोषणा थी—ऐ साम्राज्यवादियो! अब हम तुम्हारे दुर्भर अत्याचारों को सहन नहीं करेंगे। स्वाधीनता मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है, भारत भी केवल यही चाहता है। इसलिए इसे न्यायोचित स्वराज्य अवश्य दे दो। यही बात पहले श्री तिलक जी ने, भारतीयों ने एवं दयालु, आत्म मर्मज्ञ, राजनीति-विशारद, दास्य-दुःखानुभावज्ञ तथा स्वतन्त्रता सुख चाहने वाले विदेशियों ने भी कही है।

अपने सकल्प में कटिबद्ध सुभाष ने—जापान तथा जर्मनी की सक्रिय सहायता प्राप्त की और बिना ही धन धान्य आदि के समुचित साधनों के अपूर्व शुभ लक्षणों वाली भारत सेविका आजाद हिन्द सेना बनायी। चारों ओर से घिरे



मस्मलो मन्त्रिरो वार म य शूरा नवाहर ।
मोग्न परमादार परमाद मदान्वित ॥



नर नारायणौ मित्रौ युद्धौ सत्य परायणौ।
गांधी जवाहरौ शुद्धौ नित्य विश्व हितावहौ॥



जगच्छान्तिहरौ नित्य भवदुःखौ निरन्तरम्।
परमाकरौ समा शूर्ग श्री केनडी जवाहरौ॥

प्रधान-मन्त्रित्वम्

यातास्ता सर्वतो गौराश्चिन्तयन्त स्वशासनम् ।
अस्थिरमवलोक्याथ विवशाश्छल-छद्मनि ॥३१७॥

जवाहर गता वीरं सत्यं सत्य-धनात्मकम् ।
शरण्यं भारताधारं सदयं धर्म-कौशलम् ॥३१८॥

जवाहर ! धृतोत्साह ! वीर ! भारतनायक ! ।
नीति-प्रज्ञा-विशेषज्ञ ! धैर्येणासमनावर ॥३१९॥

विद्या-वैभव-सम्पन्न ! शत्रु-मित्र-विचारक ! ।
हिंसाऽहिंसा-विभेदज्ञ ! सेवा-सर्वस्व-धारक ॥३२०॥

प्रभावेणानुभावेन सद्भावेन सुधारक ! ।
वहस्व भारतं भारं शासनासन-राजक ॥३२१॥

न ह्यन्यः कश्चिदाधारः समर्थो भुवि दृश्यते ।
भवेद् यो गुरु देशस्य सूत्रधार सुनायक ॥३२२॥

अत प्रधान-मन्त्रित्वमङ्गीकुरु विवर्द्धय ।
तदैव सर्व-देशस्य तथास्माकं सुखं भवेत् ॥३२३॥

गौराणा शासकाना च कथन श्रुतवानयम् ।
नेताना भारतीयाना वचन धृतवांस्तथा ॥३२४॥

गोरे छल-कपट से शासन चलाने में असमर्थ हुए—सत्यरूप, सत्यव्रत, शरण्य, भारत के आधार, सदय, धर्म कुशल वीर जवाहर की शरण गए तथा कहने लगे—हे उत्साही वीर ! भारत-नायक ! नीति-प्रज्ञा विशेषज्ञ ! धैर्य व आत्मता से श्रेष्ठ, विद्या वैभव सम्पन्न, शत्रु मित्र, हिंसा अहिंसा के भेद को जानने वाले, सेवा सर्वस्व को धारण करने वाले, अपने प्रभाव, अनुभाव तथा सद्भाव से सुधार करने वाले, शासन के आसन की शोभा बढ़ाने वाले जवाहर ! आप भारत के भार को धारण करो। आपके बिना कोई दिखाई नहीं देता जो इतने बड़े देश का सूत्रधार तथा अच्छा नेता बन सके। अतः प्रधानमन्त्रि-पद को स्वीकार करो और इसकी शोभा बढ़ाओ तभी देश को तथा हमें सुख प्राप्त हो सकता है। श्री जवाहर ने गोरे शासक तथा भारतीयों के वचनों को सुन,

राष्ट्र-शोकः

परं काठिन्यमायात काले स्वाधीनतात्मके ।
लङ्का-काण्डस्त्वकाण्डेऽभूत् हिन्दु-मुस्लिम-भेदत ॥३३५॥
माउण्टवेटनसम्मत्या एटली-कुटिली-कृता ।
ब्रिटेनै: सुविचिन्त्याथ योजना कूट-कल्पिनाः ॥३३६॥
दुर्जनेनातिनीचेन जिन्नारूपेण याचित ।
पाकिस्तान पृथक्भागो भारतस्य कृतस्तदा ॥३३७॥
विवशैर्भारतीयैर्वै स्वीकृत देश-खण्डनम् ।
गान्धी-जवाहराद्यैः श्री राजेन्द्रं पटेलकैः ॥३३८॥
पञ्चाधिके दशेऽगस्ते मुक्तासीत् भारती मही ।
पद प्रधानामात्यस्य प्राप्तो वीरो जवाहर ॥३३९॥
मतान्धैर्यवनैर्यूथैर्यथेय पीडिता मही ।
तथा कदाचित्पूर्वं वै रावणैरतिचारिणा ॥३४०॥
निर्दयैरबला बाला बाला वृद्धाश्च मारिताः ।
श्रुत्वा दृष्ट्वा च या पीडा विव्यथे भून-भावनः ॥३४१॥
अन्त कूटैर्ब्रिटेनैस्तु हिन्दु-मुस्लिम-भेदनः ।
खण्डितोऽखण्डितो देशः स्वार्थान्धैः पाप-कन्धरैः ॥३४२॥

समस्याओं का अनेक बार शान्त शील स्वभाव से सुसमाधान-कारक, सर्व हितैषी, सर्वोदय का प्रचारक, पंच-शील योजना से विश्व-वैभव-कारक बन गया।

किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के समय एक कठिनाई आ पड़ी, हिन्दू-मुस्लिम भेद से अकाण्ड में ही लंका काण्ड हो गया। माउण्ट वेटन तथा एटली की कुटिल सम्मतियों से विचारकर ब्रिटेन वालों ने कूट कल्पना से योजना बनायी। दुर्जन, अतिनीच जिन्ना द्वारा मांगा गया 'पाकिस्तान' के रूप में भारत का पृथक् भाग कर दिया।

विवश होकर गांधी, जवाहर, राजेन्द्र तथा पटेल आदिकों ने भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। पन्द्रह अगस्त को स्वतन्त्र हुए भारत के श्री जवाहर प्रधान मन्त्री बने, मतान्ध यवन-यूथों ने भारत भूमि को ऐसे पीड़ित किया जैसे कभी रावण-वंशियों ने किया था। अन्त कूट, स्वार्थान्ध पापाश्रित गोरों ने हिन्दू-मुस्लिम-भेद से अखण्ड देश को खण्डित कर दिया।

गान्धी-विध-गुरूणां च शासन क्लेशनाशनम् ।
अमीचकार दायित्व-पूर्णं लोकोत्तर पदम् ॥३२५॥
अनेकाभिः समस्याभिः सकीर्णं बहुकण्टकम् ।
प्रधान-मन्त्रि-स्थान हि सर्व-साधन-निर्धनम् ॥३२६॥
एव कूट-कलाः गोराः हिन्दु-मुस्लिम-भेदकाः ।
पञ्चाधिके दशेऽगस्ते तत्यजुर्भारती महीम् ॥३२७॥
ततः प्रधान-मन्त्रित्व प्राप्तो वीरो जवाहरः ।
नायकेऽस्मिन् महाभागे गतो देश समुन्नतिम् ॥३२८॥
ऋद्धो वृद्धः सुसन्तुष्टो हृष्ट पुष्टो मुदान्वितः ।
लब्धादरो हि ससारे सचारे पूर्ण-गौरवः ॥३२९॥
विद्या-बुद्धि-प्रसादेन शस्त्रास्त्रैः पूरितो दृढ ।
मण्डित पण्डितैर्विज्ञैरर्वाचीनैः पुरातनैः ॥३३०॥
धन-धान्य-समाकीर्णं उत्तीर्णः रीति-नीतिषु ।
तटस्थः सर्व - नेता च सर्वदाऽसुरनिन्दकः ॥३३१॥
अनेक-युद्ध-सरोधो विरोधः पापकारिषु ।
समस्यानामनन्ताना विविधाना पृथक्-पृथक् ॥३३२॥
कारिताना विदेशीयैः स्वदेशीयैरनेकशः ।
शान्त-शील-स्वभावेन सुसमाधान-कारक ॥३३३॥
सर्वेषा हितमन्विच्छन् सर्वोदय-प्रचारकः ।
पंचशील-प्रयोगेन विश्व-वैभव-कारकः ॥३३४॥

गाधी महत्त गुरुओ की क्लेश-हारिणी आज्ञा मान, अनेक समस्याओ से सकीर्ण, बहुकण्टकाकीर्ण, सर्व-साधनहीन, दायित्वपूर्ण प्रधानमन्त्री-पद को स्वीकार किया । इस प्रकार कूट-नीति मे चतुर, हिन्दू-मुस्लिम भेद करने वाले गोरे पन्द्रह अगस्त (सन् १९४७) को भारत भूमि को छोड गये ।

श्री जवाहर प्रधान मन्त्री बने । इनके नेतृत्व मे भारत ऋद्ध, पूज्य, सुसन्तुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, प्रसन्न, ससार मे लब्धादर, ससार मे पूर्ण-गौरव, विद्या बुद्धि के प्रसाद से शस्त्रास्त्रो मे पूरित, दृढ, नवीन-प्राचीन-पण्डित-मण्डित, धन-धान्य-समाकीर्ण, सर्वरीति-नीति-उत्तीर्ण, तटस्थ, विश्वनेता, एशिया का मार्ग दर्शक, सदा आसुरी भावो का निन्दक, अनेक युद्ध-निरोधी, पाप-विरोधी विदेशियो तथा स्वदेशियों द्वारा उत्पन्न की गयी पृथक् पृथक्, विविध अनन्त

राष्ट्र–शोकः

पर काठिन्यमायात काले स्वाधीनतात्मके ।
लका-काण्डस्त्वकाण्डेऽभूत् हिन्दु-मुस्लिम-भेदत ॥३३५॥
माउण्टवेटनसम्मत्या एटली-कुटिली-कृता ।
ब्रिटेनै सुविचिन्त्याथ योजना कूट-कल्पिताः ॥३३६॥
दुर्जनेनातिनीचेन जिन्नारूपेण याचित ।
पाकिस्तान पृथक्भागो भारतस्य कृतस्तदा ॥३३७॥
विवशैर्भारतीयैर्वै स्वीकृत देश-खण्डनम् ।
गान्धी-जवाहराधारैः श्री राजेन्द्र पटेलकैः ॥३३८॥
पञ्चाधिके दशेऽगस्ते मुक्तासीत् भारती मही ।
पद प्रधानामात्यस्य प्राप्तो वीरो जवाहर ॥३३९॥
मतान्धैर्यवनैर्यूथैर्यथेय पीडिता मही ।
तथा कदाचित्पूर्वं वै रावणैरतिचार्दिता ॥३४०॥
निर्दयैरबला बाला वाला वृद्धाश्च मारिताः ।
श्रुत्वा दृष्ट्वा च या पीडा विव्यथे भूत-भावन. ॥३४१॥
अन्त कूटैर्ब्रिटेनैस्तु हिन्दु-मुस्लिम-भेदतः ।
खण्डितोऽखण्डितो देशः स्वार्थान्धैः पाप-कन्धरैः ॥३४२॥

समस्याओ का अनेक बार शान्त शील स्वभाव से सुसमाधान-कारक, सर्व-हितैषी, सर्वोदय का प्रचारक, पञ्च-शील योजना से विश्व-वैभव-कारक बन गया ।

किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के समय एक कठिनाई आ पडी, हिन्दू मुस्लिम भेद से अकाण्ड मे ही लका काण्ड हो गया । माउण्ट बेटन तथा एटली की कुटिल सम्मतियो मे विचारकर ब्रिटेन वाला ने कूट कल्पना से योजना बनायी । दुर्जन, अतिनीच जिन्ना द्वारा मागा गया 'पाकिस्तान' के रूप मे भारत का पृथक् भाग कर दिया ।

विवश होकर गाधी, जवाहर, राजेन्द्र तथा पटेल आदिको ने भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया । पन्द्रह अगस्त को स्वतन्त्र हुए भारत के श्री जवाहर प्रधान मन्त्री बने, मतान्ध यवन-यूथो ने भारत भूमि को ऐसे पीडित किया जैसे कभी रावण-वंशियो ने किया था । अन्त कूट, स्वार्थान्ध पापाश्रित गोरो ने हिन्दू मुस्लिम-भेद से अखण्ड देश को खण्डित कर दिया ।

वगेऽथ सिन्धु-पञ्चाबे सीमाप्रान्तेऽतिनिष्ठुरैः ।
कृतोत्पातैः समूहैश्च लुण्ठिता भारती मही ॥३४३॥
पूर्वमाहुः सदा गौरा: अयोग्या भारता जना: ।
अदक्षा शासने कार्ये विवदन्ति परस्परम् ॥३४४॥
अतोऽस्माभिः कृतं राज्यं शोभनं सर्व-सम्मतम् ।
जाति-धर्म-गुणातीतं सम्प्रदाय-विवर्जितम् ॥३४५॥
युष्माकमाग्रहेणाथ त्यक्ष्यामश्चेदिमां महीम् ।
करिष्यामोऽथवा दीनां सर्व-साधन-वाधिताम् ॥३४६॥
हिन्दु-मुस्लिम-भेदैश्च सम्प्रदायैर्विभाजिताम् ।
धन-धान्य-हृतां मुष्टां लुण्ठितां दस्यु-दानवैः ॥३४७॥
अतस्तैः कथितं सर्वं जिन्ना-जानु-समाश्रितैः ।
कृतं दानवता-पीडं दानवाचारमुद्धतैः ॥३४८॥
पाकिस्तान-मिषेणात्र भारतागस्तु खण्डितः ।
दण्डिता सुजना दीना गुण्डैर्लुण्ठन-तत्परैः ॥३४९॥
रागद्वेषादि दोषैश्च पूर्णा वै साम्प्रदायिकाः ।
प्रशिक्षिता जनैर्गौरैर्दुष्टैश्च प्टाधिकारिभिः ॥३५०॥

निर्दयी यवनों ने अबला, बाला, बाल-वृद्धों को मारा, जिसे सुन व देख भूतभावन भगवान् को भी दुःख हुआ, बंगाल, सिन्ध, पंजाब व सीमाप्रान्तों में दुष्टों ने समूह बना बना कर भारत भूमि को लूटा। गोरे पहले ही कहते थे कि भारतवासी अयोग्य हैं, शासन-कार्य में कुशल नहीं, परस्पर लड़ते हैं, इसलिए हम जाति-वर्ण सम्प्रदाय भेद से रहित सर्व-सम्मत राज्य करते हैं। आप लोगों के कहने से यदि हम इसे छोड़ देंगे तो निर्धन, दीन, सर्वसाधनहीन जाति-भेदों से बटा धन धान्य-रहित व दुष्ट दस्युओं से लुटी हुई करके जायेंगे।

इसलिए दुष्ट गोरों ने पूर्वोक्त सब कुछ जिन्ना का बहाना लेकर किया, दुष्टों ने भारतवासियों को पीड़ित करके नाना दानवाचार किया, पाकिस्तान के बहाने भारत को खण्डित कर दिया, लुटेरे गुण्डों ने दीन-सज्जनों को नष्ट किया, दुष्ट अधिकारी गोरों से प्रशिक्षित साम्प्रदायिक यवनों ने राग-द्वेष से पूर्ण होकर पहले ही भारत को दुःखी कर रखा था, अब फिर धर्म-द्रोह, निर्दय

वंगे रावलपिंड्यादौ लाहौरेऽरिष्ट-तापिते ।
लुण्ठिते धन-धान्यादि ज्वालितेऽति प्रपीडिते ॥३५१॥
युवतीनां हृते यूथे बाल-वृद्धादि-मारिते ।
क्रिश्चिनाः यवना हिन्दू शिष्याः कलहमाश्रिताः ॥३५२॥
अन्योऽन्यं तर्जयन्तो वै मारयन्तः परस्परम् ।
क्लेशयन्तो भृशं दीनान् दाहयन्तो गृहादिकान् ॥३५३॥
क्षेत्राणि शस्य-पूर्णानि विपण्यो द्रव्य संयुता ।
ध्वंसिता दुर्जनैरित्थं यथा दानव-दस्युभिः ॥३५४॥
तदायमार्त्तनादो वै श्रूयते सर्वतः परम् ।
वृद्धानाथ शिशूनां च कारुण्यमतिक्लेशदम् ॥३५५॥
हा पुत्र ! पुत्रि ! क्वासि त्वं हा भ्रातर्नाथ ! पाहि माम् !
वद तात ! स्वसा ! मातः ! क्व गता मम बान्धवाः ॥३५६॥
रक्ष मां, पाहि मां, वृद्धां दीनां शरणमागताम् ।
गुरूणामवताराणां पीराणामपि सेविकाम् ॥३५७॥
नाथद्वारे गुरुद्वारे श्रद्धाभक्ति-समन्विताम् ।
गिरिजा-मस्जिदेषु चाथेशामूसावुपासिकाम् ॥३५८॥
अयोध्या-मथुरा-माया-प्रयागे तीर्थं संगताम् ।
हरिद्वारेऽजमेरेऽथ पावने नतमस्तकाम् ॥३५९॥

कलहकारी अत्याचारियों ने—बंगाल, रावलपिंडी तथा लाहौर को तपाया, लूटा जलाया, युवतियों के झुण्डों को हरा, बाल-वृद्धों को मारा, क्रिश्चियन, यवन, हिन्दू, सिक्ख झगड़ते हुए एक दूसरे को ललकारते, मारते, दीनों को क्लेश देते, घरों को जलाते फिरते थे। शस्यपूर्ण खेत तथा द्रव्यपूर्ण दूकानें, दानव-दस्यु दुर्जनों ने नष्ट कर दीं।

तब वृद्ध अनाथ शिशुओं का अति करुणाकर, क्लेशप्रद आर्तनाद चारों ओर से सुनाई देता था। हा, बेटा ! बेटी ! तुम कहाँ हो ? हे भाई ! हे नाथ ! मेरी रक्षा करो ! हे माता ! पिता ! बहिन ! बोलो, मेरे बन्धु कहाँ गये ? शरण में आयी, गुरु अवतार, पीरों की सेविका, नाथद्वारे, गुरुद्वारों में श्रद्धा भक्ति वाली, गिरिजा, मस्जिदों में ईसा मूसा की उपासिका, अयोध्या, मथुरा, माया, प्रयाग में तीर्थ-बुद्धि वाली, पवित्र, हरिद्वार तथा अजमेर

जन्माष्टम्या नवम्या च पूर्णिमाया सुमंगलाम् ।
दुर्गाष्टम्या नवम्या वै रक्षाया शुभ-चिन्तिकाम् ॥३६०॥
दीपमालावसन्तादौ होलिकोत्सवमुत्सुकाम् ।
मदीने यावने मक्के कोटलेऽटल-भावनाम् ॥३६१॥
पटने ननकाणे च गुरुषु गुरु-गौरवाम् ।
बौद्ध-जैन-नवीनेषु मतेषु सर्व-सम्मताम् ॥३६२॥
पुराणेऽथ कुराने चाथेञ्जीले-ग्रन्थ साहिबे ।
व्याख्याने श्रुत-धर्माख्या गाथामाश्रित पालिनीम्॥३६३॥
किं दीनो दीन-पीडोऽस्ति किं धर्मोऽधर्ममाश्रित. ।
किं पन्थः कुपथ यातः किमीशोऽनीशता गतः ॥३६४॥
किं राम-कृष्ण-गुरवो बुद्धस्तीर्थङ्करा जिनाः ।
ईशो मुहम्मदः सर्वे दुराचार-प्रवर्तका ? ॥३६५॥
तेषामुपासका यूय कथमुन्मार्गगामिन ।
अधर्मे धर्म-बोद्धार कुपथञ्चाश्रिता भृशम् ॥३६६॥
पर कोऽपि न श्रोतासीत् प्रवृत्तेऽधर्म-भैरवे ।
पौरवा कौरवा जाता सुरव कः शृणोति तत् ॥३६७॥
यवना प्रेरिता गौरैर्हिन्दूनामतिसत्यया ।
भ्रान्ता स्वदेश-खण्ड हि भिन्नमैच्छन् हि भारतात् ॥३६८॥

मे मस्तक झुकाने वाली, जन्माष्टमी, रामनवमी व पूर्णिमा को मंगल-कामना करने वाली, दीपमाला, वसन्त व होली को उत्सव मनाने वाली, यवनो के मक्के-मदीने व कोटले मे अटल भावना-वाली, आनन्दपुर, पटने तथा ननकाणा साहिब मे गुरुओ का गौरव माननेवाली, बौद्ध, जैन तथा नवीन मतो मे सम्मति रखनेवाली, पुराण, कुरान, इञ्जिल एव ग्रन्थ साहिब मे से धर्म-कथा सुनने वाली शुभ श्रद्धा की रक्षा करो, पालना करो ।

सब पुकार थी—क्या दीन दीन-पीडक है ? क्या धर्म अधर्म के सहारे है ? क्या पथ कुपथ बना है ? क्या ईसा नास्तिक बन गया ? क्या राम, कृष्ण, गुरु, बुद्ध, तीर्थंकर जिन, ईसा, मुहम्मद सभी दुराचार प्रवर्तक हैं ? आप उनके उपासक होकर क्या उन्मार्ग गामी, अधर्म को धर्म जानने वाले, अति कुपथ पर चले हो ! किन्तु अधर्म के चक्र चलने पर इस आर्त-ध्वनि को

मूढैस्तु चिन्तित नेदमघुनापि तु कोटिश ।
यवना भारतीया हि निवसन्ति यथासुखम् ॥३६९॥
सम्प्रदायानुरोधेन मूढैर्दानव-सन्निभै ।
रक्तपात कृतो भूयान् वगे पचनदे भृशम् ॥३७०॥
तथापि लका-काण्डोऽय न निवृत्तो वधात्मक ।
सहस्रा मारिता दुष्टैर्लक्षा निर्वासिता गृहात् ॥३७१॥
नायकैर्विवशैर्दृष्ट सृष्ट रौद्र कुकर्म तत् ।
गान्धि-जवाहरैः खिन्नैरुद्विग्नैरतिमानवम् ॥३७२॥

कर्णधार

एव संकट-सन्दोहे पतिते भारते मुहु ॥
बुद्धिमान् चतुरो वाग्मी सयत्नोऽभूज्जवाहरः ॥३७३॥
पुनर्वास पुनर्वृत्तिः प्रबन्धश्च पुन पुन ।
जवाहरोऽकरोद्दक्षो विवेकी धैर्य-सगत. ॥३७४॥
व्यतीतेष्वल्पमासेपु स्वतत्रे भारतेऽभवत् ।
महाननर्थो दुष्टेन नाथुरामेण दुष्कृतः ॥३७५॥

सुनने वाला कोई नही था । वस्के कथन को कोई भी नही सुनता था । सारो द्वारा हिन्दुओं की सख्या-वृद्धि की भ्रान्ति से डराये हुए यवन अपनी भूमि को भारत से पृथक् पाकिस्तान के रूप मे चाहते थे । बेचारो को पता नही था कि स्वतन्त्र भारत मे भी करोडो यवन सुखपूर्वक रहते है । मूढ, दानवाकार, मदान्ध यवनो ने बगाल व पजाब मे बहुत रक्तपात किया ।

इस सारे रक्तपात को देख जवाहर ने भी भारत के विभाजन को मान लिया । फिर भी यह मार-काट का लकाकाण्ड नही रुका । दुष्टो ने हजारो लोग मार दिये, लाखो घरो से निकाल दिये । गांधी-जवाहर आदि नायको ने बडे खिन्न व उद्विग्न होकर यह अमानवीय, रौद्र कुकर्म देखा ।

इस प्रकार भारत मे बार-बार सकट पडते रहे । चतुर वक्ता जवाहर धैर्य विवेक पूर्वक कटिबद्ध होकर पुनर्वास, रोजगार आदि समस्याओं का समाधान करता रहा ।

भारत-स्वाधीनता के कुछ महीनों के बाद ही दुष्ट नाथूराम ने

हतो गान्धी राष्ट्र-पिता सर्व-जीव-पराश्रयः ।
निराश्रयं गतो देशो विशेषेण जवाहरः ॥३७६॥
मार्ग-प्रदर्शको यस्य गतो गान्धी सुरालयम् ।
तथापि धृत-धैर्योऽसौ धौरेयोऽखिल-कर्मसु ॥३७७॥
देशमाश्वासयामास खिन्नं दिव्य-पराक्रमः ।
गौरेच्छां विफलां कृत्वा प्रबलोऽभूज्जवाहरः ॥३७८॥
दधि-दुग्ध-घृतैः पूर्णा नद्यो भारतभूमिजाः ।
वहेयुरैच्छद्धीरोऽयं सयत्नश्च पुनः पुनः ॥३७९॥
नद्यः कुल्या महद्योगाः कारिताः स्थापिताः शुभाः ।
सफलः प्रयासोऽस्माकं लोकेष्वाश्वासनं भवेत् ॥३८०॥
जवाहरस्य मनसि सदासीत् विश्व-चिन्तनम् ।
महानुरागो भवतु प्रेमजं बन्धनं भवेत् ॥३८१॥
सर्वत्र मा विरोधः स्यात् कस्मिंश्चित्कस्यचित्तथा ।
निरोधो युद्धभावानामहिंसा सत्य-भावतः ॥३८२॥
गान्धी-प्रभावः सर्वत्र दयाऽहिंसानुभावतः ।
सत्य-व्रतात्मको नित्यं प्रचरेत् लोक-शासने ॥३८३॥
भाखडा-जन्य-सदृशाः प्रयत्नाः सफलाः कृताः ।
रेल-मोटर-मार्गाणां प्रसारोऽस्ति प्रवर्तितः ॥३८४॥

सर्व जीवाश्रय राष्ट्रपिता गांधी को मार कर दुष्कर्म किया, देश तथा विशेष कर जवाहर निराश्रय हो गये, जिनके मार्गदर्शक पूज्य गांधी देवलोक चले गये। फिर भी सर्व-कर्म धुरीण धैर्य धारण कर सब कामों को संभाल, खिन्न देश को अपने दिव्य पराक्रम से दिलासा देते हुए, गोरों की इच्छा को विफल कर प्रबल सिद्ध हुए। बार बार यत्न करते हुए जवाहर चाहते थे कि भारत की नदियाँ दधि दुग्ध घृत पूर्ण बहें। नदियें, नहरें बनायीं, अच्छे उद्योग स्थापित किये, उनकी इच्छा थी—हमारा प्रयास सफल हो, लोगों में आश्वासन हो।

श्री जवाहर के मन में सदा विश्व की चिन्ता रहती थी, सबमें महानुराग हो, प्रेम का बन्धन हो, किसी का किसी से विरोध न हो। अहिंसा व सत्य की भावना से युद्ध-भावों का निरोध हो, दया, अहिंसा भावना वाला गांधी जी का प्रभाव सर्व-प्रिय हो, सत्य व्रत का लोगों में प्रचार हो—यह करणीय भावना जवाहर की थी। इन्होंने भाखड़ा बांध जैसे प्रयत्न सफल किये,

विद्यालयास्तु विविधा सर्वक्षेत्रेषु चालिताः ।
कृता वेदोक्तमार्गेण सर्वे लोकास्तु सस्कृता ॥३८५॥
विद्या-विनय-सम्पन्ना· ब्राह्मणा धेनु-हस्तिनः ।
सारमेयाः श्वपाकाश्च सर्वेऽभेदानुवर्तिन ॥३८६॥
जवाहरानुभावेन सत्य-धर्मानुयायिनः ।
श्रेष्ठानुसारिणो जाता पुण्यपन्थानुचारिणः ॥३८७॥
महानयमय हीनो धनतो जन्मतोऽधम ।
इति भेदा अनाचारैर्वैदेशैः शासकै कृता. ॥३८८॥
खण्डिताः पण्डितेनात्र पाखण्डामय-दूषिताः ।
गुण्डास्तु दण्डिताश्चण्डमुद्दण्डा खण्ड-कारिण ॥३८९॥
कथयन्तिस्म यान् गौरा कृष्णागा भार-वाहिनः ।
यूय भारतदेशीया गच्छध्वमतिदूरत ॥३९०॥
तेषा वै भारतीयाना भृत्यत्व स्वीकृत पुन ।
वर्णानुगर्वितैर्गौरैर्जवाहर-प्रभावत ॥३९१॥
येषा राज्ये निशा-नाश आसीदर्क-प्रकाशत. ।
साम्राज्य चक्रवर्तित्वमभवद्दिव्य-तेजसा ॥३९२॥
व्यापारैर्गति-सचारैः साधनैर्निर्धनाः कृता ।
स्वसभ्यता-प्रचारेण सर्वे देशा नियन्त्रिताः ॥३९३॥

रेल-मोटर-मार्ग फैलाये, सर्व क्षेत्रो मे विविध विद्यालय चलाये, वेदोक्त मार्ग से सभी लोग विद्या विनय सम्पन्न किये, कुत्ता, चाण्डाल, ब्राह्मण, गौ, हाथी—सबमे ईश्वरांश बुद्धि बनायी, सभी लोग श्रेष्ठ पुरुषों के अनुसार पुण्य मार्गानुयायी बनाये, धन से या जन्म से छोटे बडे के भेद-भाव, पाखण्ड रोग से दूषित जानकारी विदेशी शासको ने दी थी, उन्हे भी पण्डित जी ने खण्डित किया, देश को खण्डित करने वाले उद्दण्ड गुण्डो को अधिक दण्ड दिया। जिनको गोरे कहते थे—ए काले कुली भारतीयो! दूर हटकर चलो, वे ही गोरे रग के अभिमानी, जवाहर के प्रभाव से भारत की नौकरी करने लगे।

जिनके राज्य मे सूर्य के प्रकाश से रात नही होती थी, दिव्य तेज से चक्रवर्तित्व था, जिन्होंने अपनी सभ्यता के प्रचार से सभी देश वश मे कर रखे

आंग्लभाषानुभावेनाखिला 'डैम्फूल'-भाषिणः ।
जाता भारत-देशीया बाला वृद्धायुवास्त्रियः ॥३९४॥
गौरेया वेश-विन्यासा कोट-पैंटानुधारिणः ।
नक्कटाय्या कण्ठग्रहा हैट-बूटैरलंकृता ॥३९५॥
शीत-देशानुवेशाश्च स्वविचारैर्विवर्जिता ।
अन्धानुकारिण सर्वे हानिलाभमनाश्रिता ॥३९६॥
उष्णदेशानुतापेन भारतेनाति तापिता ।
क्रम्मवेशानुबन्धेन स्वास्थ्यसम्पद्विवर्जिता ॥३९७॥
अल्पवित्ता स्वल्प-लाभा आय-साधन-निर्धना ।
निर्बला नकलाश्चासन् अन्धा गौरानुयायिन ॥३९८॥
दर्शंदर्शमधीरोऽयमभूद्धीरो जवाहरः ।
कथमेषामुपाय स्यादुद्धारस्य सुखेन वै ॥३९९॥
परेषा मतमाश्रित्य वर्तन्ते येऽविचारत ।
कथं हि भारतीयानामुद्धार स्यात्पुनर्भुवि ॥४००॥
इति चिन्तातुरो वीरस्त्यक्त्वा पैतृकवैभवम् ।
गौरवचानुभाव च गुर्वाज्ञिं तथा सुखम् ॥४०१॥
वैरिस्टरमात्मकृत्य स्वसामर्थ्यं धनार्जनम् ।
सूक्ष्म-कोमल-वस्त्राणा वराणामवधारणम् ॥४०२

थे, सभी भारतीय—बाल, वृद्ध, युवा, स्त्रियें—इंग्लिश के प्रभाव से 'डैम् फूल' भाषी बना दिये थे, ठण्डे देशों के समान—कोट, पैंट, नकटाई, हैट, बूट वाले वेश-विन्यास बना दिये थे, गर्म देश मे ठण्डे देशों की आवश्यकता वाले वस्त्र पहनने से अति तापित, स्वास्थ्य-धन वर्जित, अल्प वित्त, स्वल्प लाभ आय साधन, निर्धन, स्वविचार-शून्य, अन्धानुयायी, हानि लाभ विचार-शून्य, निर्बल तथा गोरों के नकलची बना दिये थे।

इन कुरीतियों को देख देख कर अधीर जवाहर सोचते थे कि इनके उद्धार का उपाय कैसे हो? अविचार से ही ईसाई मत मे चलने वाले भारतीयों का कल्याण कैसे हो सकता है इस चिन्ता से दुखी होकर—पैतृक वैभव, गौरव, प्रभाव, पिता की आज्ञा, सुख, बैरिस्टरी कार्य, स्वसामर्थ्य धनार्जन,

वस्त्राणामथ चारूणां मृदूनामिव रोहणम् ।
तरणं सरोवराणामाखेटानां च खेलनम् ॥४०३॥

दन्त्वानां गज-पुत्राणां खेलने सन्निमिलनम् ।
स्वादूनां विविधानाञ्च भोज्यानां मधुभोजनम् ॥४०४॥

अनेक रङ्ग-रागाणां योजने मतियोजनम् ।
कदापि नासीच्चिन्तानां भावानामभियोजनम् ॥४०५॥

वैभवोऽभिप्रवृद्धः स्यादाकर्षेदपि यो जनम् ।
गतो जवाहरो बापू शरण्यमजरो जनम् ॥४०६॥

नन्दत नान्त गौरे नानृणोऽङ्घ्रिनि-योजनम् ।
तथा कुर्युं भारतीया मिलेद्वै विजयोजनम् ॥४०७॥

ब्रिटेनस्त्वधिधागान्धः सर्वो मर्कट-लोचन. ।
सेना-शासन-दर्पेण पीडयामास भारतम् ॥४०८॥

परं लोका कृत-व्रताः सत्याग्रह-परायणाः ।
सर्वस्वार्पण-सन्नद्धा प्रेरिता लोक-नायकैः ॥४०९॥

गान्धि-सत्यानुभावेन स्वातन्त्र्यसमराङ्गणे ।
जवाहरानुगच्छन्तो बलिदान-कृतोद्यमाः ॥४१०॥

प्रापुः स्वातन्त्र्य-सौख्यं वै यथा पूर्व-निदर्शितम् ।
जवाहरानुभावेन सत्योद्यम-परा नराः ॥४११॥

सूक्ष्म, कोमल, सुन्दर वस्त्रों का धारण, देवों के समान घोड़ों व कारों पर चढ़ना, सरोवरों में तैरना, शिकार खेलना, विविध स्वादु मधुर भोज्य भोजन, अनेक रंग-रागों की योजना में बुद्धि का लगाना, सदैव निश्चिन्त रहना, बड़े-बड़ों को आकर्षित करने वाले वैभव की वृद्धि, इन सबको छोड़ कर अजेय जवाहर शरण्य बापू की शरण में गये। वहाँ जाकर निवेदन किया—रोते-पीटते, दुःखी भारत की वैधानिक चाल अधिकारान्त, सर्वों, मर्कट-लोचन, गोरा नहीं सुनता। तब फिर गाँधी जी के सत्य प्रभाव से जवाहर के पीछे चलते हुए स्वाधीनता संग्राम में बलिदानार्थ उद्योगी, जवाहर के तेज से सत्य उद्यम-परायण लोगों ने पूर्वोक्त स्वाधीनता सुख को प्राप्त किया।

स्वर्गारोहणम्

अष्टादशाब्द यावद्धि पालयामास भारतम् ।
अनेक-दुःख-बाहुल्यादुज्जहार सनातनम् ॥४१२॥
सतत पालयामास कर्तव्य श्रम-सकुलम् ।
तेनातिशिथिलो देहस्त्वभवज्जरयान्वितः ॥४१३॥
देहरादून-यात्राया सेन्दिरो बहुसाहसी ।
गतो निवृत्तो यावद्धि प्रसन्नो लोक-नायकः ॥४१४॥
पर परम्पराधारा पालितामुनियोगिभिः ।
अवतारैरसख्यैश्च गुरुभिरात्मवित्तमैः ॥४१५॥
राजन्यैरतिधन्यैश्च जनकादिभि सत्तमै ।
तदेव सत्यमत्रापि निर्वाह्यमनुशासनम् ॥४१६॥
ईश्वराज्ञानुसार वै वैकुण्ठ योगि-दुर्लभम् ।
गतोऽकुण्ठ-गतिस्तत्र भारतात्मा जवाहरः ॥४१७॥
सप्तविंशति मय्या तु मध्याह्ने वह्नि-सन्निभे ।
हृतो जवाहरोऽस्माक कालेन कुटिलात्मना ॥४१८॥
पर दुर्भाग्य - भागस्य भारमापतित भुवि ।
अश्रुधारा वहत्यद्य मानवाना निरन्तरम् ॥४१९॥

अर्थ—श्री जवाहर ने अठारह वर्ष पालना करते हुए भारत को अनेक दुःख जाला से रक्षा की, दिन रात अनेक श्रमो से निरन्तर कर्त्तव्य पालन करते हुए, शरीर अति शिथिल, जजर व वृद्ध हो गया। इतने पर भी अति साहसी जवाहर इन्दिराजी के साथ देहरादून की यात्रा पर गये और प्रसन्नचित्त लौटे, किन्तु जिस परम्परा को मुनियो-योगियो, असख्य अवतारो, आत्मज्ञ गुरुओ तथा अतिधन्य श्रेष्ठ जनकादिक नराधिपो ने पाला है, उस सत्य अनुशासन को यहाँ भी पालना है, अत ईश्वराज्ञानुसार अकुण्ठ-गति भारतात्मा जवाहर भी योगी दुर्लभ वैकुण्ठ मे चले गये। सत्ताईस मई को दिव्य तेजस्वी व प्रतापी मध्याह्न मे, कुटिलात्मा काल ने दिव्य तेजस्वी व प्रतापी जवाहर को हमारे से छीन लिया। बडे दुर्भाग्य का भार भूमि पर आ पडा, आज लोगो की अश्रुधारा निरन्तर बह

शोकाम्बुनिधि लोकं परित्यज्य दिवं गते ।
वज्रपातोऽभवद् भूमावस्ते भारत-भास्करे ॥४२०॥
बालानां शिशु-लीलानां विपत्तिर्याऽद्य दृश्यते ।
साऽतिप्रिय-वियोगेन नासीत्पूर्वं कदाचन ॥४२१॥
गते जवाहरे दिव्यमव्ययं धाम शाश्वतम् ।
आर्ता भारत-माता वै दिक्षु याता विषादिनी ॥४२२॥
पूर्वमेव वियोगेन जनानां पुण्य-कर्मणाम् ।
नृप विषादापन्नोऽसौ निःश्वसन् खिन्न-मानस ॥४२३॥
दुर्भाग्येणैव विश्वस्य कैनेडी-नन्दनः प्रियः ।
अमरीका-प्रधानस्तु नयन्तो विश्व-शान्तये ॥४२४॥
दत्वा विग्रहजामाधिं भुवं त्यक्त्वा दिवं गत ।
असह्यं बालाक्रोशं वै दृष्ट्वाभूद्विग्रहातुर ॥४२५॥
प्रहारेऽपि प्रहारः स्यादिति नीतिनिदर्शिना ।
विधिना परुषेणाथ कृपणेन कुचेतसा ॥४२६॥
हृतो भारतदेशस्य स्वाश्रयो लोक-नायकः ।
बालकानां पितृव्यस्तु युवकानां सुहृत्प्रिय ॥४२७॥
वृद्धानां मधुरभाषी नागरिणां मार्ग-दर्शक ।
विश्वस्याभिनवो लालो ज्योतिस्तम्भो जवाहर ॥४२८॥

रही है। शोकातुर जीवलोक को छोड़ जवाहर बैकुण्ठ चले गये। भारत के सूर्य जवाहर के अस्त होने पर भूमि पर वज्रपात हुआ, खेलने वाले बच्चों पर जो विपत्ति आज दिखाई देती है, वह पहले अतिप्रिय बन्धु के वियोग होने पर भी कभी नहीं देखी गयी थी। श्री जवाहर के दिव्य, अक्षय, शाश्वत धाम चले जाने पर विषाद-युक्त आर्त भारत माता दिशाओं में उसे खोजती फिरती थी। अनेकों पुण्यात्मा लोगों के वियोग से खिन्न-मन श्री जवाहर आहें भरते हुए बड़े दुःखी थे, अब दुर्भाग्य से विश्व-शान्ति के लिए यत्नशील, अमेरिका के प्रधान कैनेडी जैसे प्रिय व्यक्ति भी विग्रहजन्य मानसी व्यथा देकर भूमि को छोड़ देवलोक चले गये। इस असह्य बालक्रोश को देख विग्रहातुर नेहरूजी अति दुःखी थे। कठोर कृपण, कुचेता, विधाता ने—चोट पर चोट की नीति को प्रत्यक्ष दिखा दिया, अर्थात् भारत का सच्चा आश्रय, लोक-नायक, बच्चों का चाचा,

विद्यालय-सभाया वै रुदता वदता मया ।
प्रातः पंक्तिरियंप्रोक्ताभावाकुलित-चेतसा* ॥४२६॥
नास्ति निर्बन्ध-कालस्य निरोधो भुविदृश्यते ।
जवाहरादेश पूर्वं भारतस्योन्नतिर्भवेत् ॥४३०॥
मनोरथस्तु कालस्य पूरणीयोऽनुगामिभिः ।
बालकैस्तु विशेषेण यतस्ते लोक-नायकाः ॥४३१॥
गगने नाथयोऽस्त्यद्य न भूमौ न त्रिविष्टपे ।
अनाथानामार्तध्वनिं श्रोतात्वमरता गत ॥४३२॥
दिवसा विवशा जाता निशाऽनीशानुभूयते ।
अन्धकार प्रकाशश्च जगति समता गतौ ॥४३३॥
अतोऽन्तिमोच्छवासप्लुति दर्शयित्वामहात्मने ।
निष्प्राणैर्मानवैर्दत्ता तिलाञ्जलिरिमा तदा ॥४३४॥
हा! हन्त! किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् ।
कृत कर्तव्य-पालनम्, धृता वक्षसु पाषाणा, अनुभूता
स्वीकृता च कालस्य कुटिला गति ॥४३५॥

युवको का प्रिय सुहृत्, वृद्धो का मधुर आधार, स्त्रियों का मार्गदर्शक, विश्व का आर्तिहर ज्योति-स्तम्भ जवाहर हमसे छीन लिया । ग० हा०स्कूल, बरनाला की प्रात सभा में भावाकुलित-चित्त रोते हुए मेरे मुंह से पंक्ति निकली*—"हर लिया तूने जवाहर हे हरे, अब धरा में क्या धरा है रह गया ।"

पर निर्बन्ध काल का निरोध तो असम्भव है, फिर भी थी जवाहर की इच्छा भारत की उन्नति हो, हमें पूरी करनी चाहिये, विशेषकर बालकों को, क्योंकि वे ही भविष्य के लोकनायक होंगे । आज आकाश, भूमि व स्वर्ग में हमें आश्रय दिखायी नहीं देता, अनाथों का आर्तनाद सुनने वाला स्वर्ग सिधार गया । दिन विवश है, निशा असमर्थ है, तीनों लोकों की नेत्र-ज्योति जवाहर के छिन जाने पर प्रकाश व अन्धकार समान ही हैं। इसलिए उस महात्मा जवाहर के लिए अन्तिम उच्छ्वास-विधि से निष्प्राण मनुष्यों ने ये तिलांजलियां दीं ।

हा ! हन्त ! आपके अचिन्त्य भावों का क्या वर्णन करें, कर्तव्य पालन किया, छातियों पर पत्थर रखे, काल की कुटिल गति को देखा और स्वीकार किया । देश-नायक के वियोग से अनाथ बने, अनाथों के रक्षक

अंगीकृतमनाथत्वं वियुक्ते लोक-नायके ।
कुतो बाला कुतो वृद्धा कुतो नार्यं कुतो वयम् ॥८३६॥
गमिष्याम सनाथत्वं वियुक्तेऽनाथ रक्षके ।
दृष्टं नेत्रैः श्रुतं कर्णैरनुभूतमथेन्द्रियैः ॥४३७॥
सर्वैरेवाद्य यज्जातो दुर्घटो मानवान्तक ।
वज्रपातसमः क्लेशं सहिष्यामः कथं वयम् ॥८३८॥

षट्मीललम्बाया यात्रायाः मार्गः पूर्वं-पुरुषैः पश्चाच्च पुष्पैः पूर्णं आसीत्, स्वहृदयाधीशस्यान्तिम-दर्शनार्थं जनता समग्रमार्गे पंक्ति-बद्धा चित्रलिखितेव चासीत्, विंशति लक्षाधिका जना आसन् । अन्तिम-यात्राया सर्वेषां देशानां प्रमुखाः प्रतिनिधयोऽनाथैर्लोकैः सह रुदन्तोऽगच्छन् । तत्र ब्रिटेनस्य सर एलेक डगलस ह्यूम, लंकाया प्रधानमन्त्रिणी श्रीमती बंडार नायिका, रूसस्य प्रथमः उप-प्रधान-मन्त्री श्री कोसीगन, ईरानस्य स्वराष्ट्र-मन्त्री, नेपालस्य मन्त्रि-परिषदोऽध्यक्ष श्री डा० तुलसी गिरिः, ब्रिटिश महाराज्ञः प्रतिनिधिः श्री लार्ड माउण्ट बेटन, फ्रांसस्य राज्य वित्त-मन्त्री श्री लुई जो, युगोस्लाविया देशस्य श्री स्वावोलिन्न, पाकिस्तानस्य परराष्ट्र-मन्त्री श्री भुट्टो, अमेरिका देशस्य विदेश-मन्त्री श्री डीनरस्क, अन्ये च सकुटुम्बा. ससहायका बहव. राजदूताः श्रद्धया हार्दिक-समवेदनया च सम्मिलिता आसन् । श्री अब्दुल्ला

से वियुक्त होकर बच्चे, वृद्ध, स्त्रियाँ तथा हम कैसे सनाथ होंगे ? आज जो मानव-विनाशी दुर्घटना हुई, उसे आँखों ने देखा, कानों ने सुना तथा दूसरी इन्द्रियों ने अनुभव किया । छः मील लम्बी यात्रा का मार्ग पहले स्त्रियों बच्चों एवं पुरुषों तथा पीछे पुष्पों से भरा था । अपने हृदयाधीश के अन्तिम दर्शनों के लिए जनता सारे मार्ग में पंक्तिबद्ध तथा चित्रलिखित सी थी, बीस लाख से भी अधिक लोग थे, अन्तिम यात्रा में सभी देशों के प्रतिनिधि अनाथ जनता के साथ रोते जा रहे थे । वहाँ पर ब्रिटेन के श्री एलेक डगलस ह्यूम, लंका की प्रधान मन्त्रिणी श्रीमती बंडारनायिका, रूस के प्रथम उपप्रधान मन्त्री श्री कोसीजन, ईरान के स्वराष्ट्रमन्त्री, नेपाल की मन्त्री परिषद् के अध्यक्ष श्री डा० तुलसी गिरि, ब्रिटिश महारानी के प्रतिनिधि श्री लार्ड माउण्ट बेटन, फ्रांस के राज्य-वित्त-मन्त्री श्री लुई जो, युगोस्लाविया के प्रधानमन्त्री श्री स्वतोलिन, पाकि-

श्री रक्षा-मन्त्री चह्वाणश्चान्तिम-यात्रायामुपस्थातु विदेशात समागतौ ।।४३६-४४७।।

श्री जवाहरलालस्य-त्रिरंग-ध्वज-वमनावृत शरीर नाना विध-सुमन-पूर्णे याने स्थापितम्, तच्च सेनात्रयस्य षष्टि सैनिका वहन्तिस्म, तदनु राष्ट्रपतेरग-रक्षकाः, सेना-त्रयस्याध्यक्षाः श्री जवाहर-परिवारस्य सदस्याः अन्ये प्रतिष्ठितदेशनेतारश्च क्रमशोऽग-च्छन्, यात्राया, नेतृत्व दिल्ल्या, राजस्थानस्य च क्षेत्रीय सेनापति-मेजर जनरल श्री भगवतीसिंहोऽकरोत् तदनु सैनिक-यूथा वाद्य (वैण्ड) वादिनश्चासन् । श्री नेहरोर्मुखमन्तिम-दर्शनार्थमनावृत-मासीत् । स्वस्थानस्थिता एव जनाः पुष्पवर्षणमकुर्वन् ।।४४८-४५२।।

यात्रा-गमन-मार्गेहि जयनादोऽभवन्महान् ।
श्री जवाहरलालस्य पितृव्यस्य जयो भवेत् ।।४५३।।
जवाहरोऽमरो नित्य पितृव्योऽप्यमरोऽस्ति वै ।
इति घोषस्पृशैर्देवैर्वर्षण क्षणद कृतम् ।।४५४।।
आश्वासनार्थं लोकाना सलिलाभ्युक्षण कृतम् ।
मेघैर्गर्जनव्याजेन नादो रोदनज कृत ।।४५५।।

स्तान के परराष्ट्रमन्त्री श्री भुट्टो, अमेरिका के विदेश-मन्त्री श्री डीनरस्क और दूसरे भी बहुत सद्भुाव, ससहायक, राजदूत श्रद्धा एव हार्दिक समवेदना से सम्मिलित हुए थे । श्री शेख अब्दुल्ला व रक्षामन्त्री श्री चह्वाण अन्तिम यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए विदेश से आये थे ।

श्री जवाहर का शरीर, तिरगे झडे से लिपटा हुआ, नाना-विध सुमनपूर्ण यान मे रखा गया । पालकी का तीनो सेनाओ के साठ सैनिक उठा रहे थे । उसके पीछे राष्ट्रपति के अग-रक्षक, तीनो सेनाओ के अध्यक्ष, श्री जवाहर परिवार के सदस्य और अन्य प्रतिनिधि नेता चल रहे थे । यात्रा का नेतृत्व दिल्ली तथा राजस्थान व क्षेत्रीय सेनापति मेजर जनरल श्री भगवतीसिंह कर रहे थे । उनके बाद सैनिक यूथ तथा बैण्ड वाले थे । अन्तिम दर्शनो के लिए श्री नेहरूजी का मुख ढका नही था । अपने स्थानो पर खड़े ही लोग पुष्प वर्षा कर रहे थे । यात्रा-गमन के मार्ग मे, 'श्री जवाहर की जय हो", 'चाचा, नेहरू की जय हो" के जयकार' का बडा भारी शब्द हो रहा था । 'जवाहर अमर हैं चाचा नेहरू अमर हैं" इस जन-घोष के स्पर्श से सावधान हुए देवो ने शान्ति देनेवाली वर्षा

विद्युत्प्रकाशो भवति दर्शनार्थं क्षणे-क्षणे ।
मुखस्य लोकनाथस्य यूथस्याश्रु-प्लुतस्य च ॥४५६॥

रामनाम-स्मृतिर्जाता ननन पुण्य-सन्ततिः ।
जवाहर स्मरन् नित्य कृत्य चान्तिममावहन् ॥४५७॥

धृतशस्त्रा अपि जन-संयमिनोऽश्रु-नियमनेऽसंयमिनोऽभवन् यदान्तिम-यात्रार्थं प्रधानमन्त्रिणो निधनात् शवो यानमारोपितस्तदा सर्वेषां धैर्य-च्युतिरभवत् । राष्ट्रपति श्रीराधाकृष्णन्विरलमश्रुवह, तदानीन्तनः प्रधानमन्त्री श्री नन्दा चावरुद्धगलः श्री नेहरोरन्तिम-प्रयाणमुद्घोषयताम् । सर्वैरपि राष्ट्राध्यक्षैः प्रतिनिधिभिश्च शवोपरि पुष्पाण्यर्पितानि, त्रिमूर्ति भवनात् प्रचलिता शवयात्रा, विजयचतुष्पथ—भारत-द्वार—तिलक-स्थानेभ्यो राजघाटमगच्छत् । होरात्रयेण यात्रा समाप्ता, अस्मिन्नपार-नीर-पारावारे बालानां, महिलानां च गणनाऽनुल्लिखितासीत् । या चान्तिम-दर्शनार्थं दशहोरा यावत्तपस्यन्त्यतिष्ठत्, अवरुद्धगलैरश्रुमुखैः सजलनेत्रैश्चावोचन्—"जवाहरोऽमरो भूयात् पितृव्यस्त्वमरो भवेत् ।" वाद्य-वादकैः शोक-

---

की । लोगों को सान्त्वना देने के लिए जल वर्षाया, गर्जन के बहाने मेघों ने रोने का शब्द किया, लोकनायक नेहरू तथा अश्रुवह जनता के मुख देखने के लिए बार-बार विद्युत्प्रकाश हो रहा था, श्री जवाहर को स्मरण करते हुए अन्तिम कृत्य को सम्पन्न करने के लिए पुण्यप्रद रामनाम ध्वनि हो रही थी, लोगों को नियमन में रखनेवाले शस्त्रधारी भी अपने आंसुओं को रोकने में असमर्थ हो गये । जब अन्तिम यात्रा के लिए शव को पालकी में रखा गया तो सभी के धैर्य छूट गये । श्री राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने आँसू बहाते हुए तथा तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीनन्दा ने रुंधे हुए गले से अन्तिम यात्रा की घोषणा की । सभी राष्ट्रों के अध्यक्षों तथा प्रतिनिधियों ने शव पर फूल चढ़ाये, त्रिमूर्ति-भवन से चली यात्रा, विजय-चतुष्पथ, भारत-द्वार, तिलक-स्थानों से होती हुई, तीन घण्टों में राजघाट पहुँची । इस अपार नागरिक-समूह में बच्चों तथा महिलाओं की संख्या अधिक थी, जो कि—अन्तिम दर्शनों के लिए दस घण्टे से तप करती हुई, रुंधे गलों से—आंसुओं से भरे मुखों से, सजल नेत्रों से—"जवाहर अमर हो", "चाचा नेहरू अमर

ध्वनिर्निनादितः, सवेशैः सेनापतिभिरभिवादनं कृतम्। सत्कारार्थं सर्वे सयता उदतिष्ठन्। अतिप्रियेण दौहित्रेण सञ्जीवेन चितायामग्निर्दत्तः। उज्ज्वालो भगवान् विभावसु स्वोज्ज्वलेन रथेन पूतात्मानं परमात्मन्ययोजयत् ॥४५८-४६६॥

वृद्धः कश्चित्कृषकः स्वदशवर्षीयपौत्रेण सह त्रिमूर्ति-स्थानेऽन्तिम दर्शनार्थं चिरकालं स्थितः, अबोधो बालो मुहुर्मुहुर्मुखमुत्थाय जवाहरागमनं प्रतीक्षमाणः श्रान्तश्च पितामहमपृच्छत्—अद्येदानीं यावत्प्रियः पितृव्यो नेहरुर्नागतः ? साश्रु पितामहोऽब्रवीत्—वत्स ! बालानामखिलाधारः पितृव्यो जवाहरो नश्वरेण शरीरेण कदापि नाक्षिपथमागमिष्यति। इत्याकर्ण्य–मुग्धो बालो निराशः सरोदनम् पितामहमुखमवलोकयन् उत्पीडित इवाभवत् ॥४६७-४७१॥

हो कह रही थी, बैण्ड वालों ने शोक ध्वनि बजायी, वर्दीधारी सेनाध्यक्षों ने अभिवादन किया सत्कार के लिए सभी संयम से उठ खड़े हुए। अति प्रिय दौहित्र सञ्जीव ने चिता में अग्नि दी, ऊँची लपटों से भगवान अग्निदेव ने अपने उज्ज्वल रथ द्वारा पवित्रात्मा जवाहर को परमात्मा में मिला दिया।

अपने दश वर्ष के पौत्र के साथ कोई बूढ़ा किसान अन्तिम दर्शनों के लिए त्रिमूर्ति-स्थान के मार्ग में खड़ा रहा, अबोध बालक बार-बार मुँह उठाकर, जवाहर के आगमन की प्रतीक्षा में थका हुआ बाबा को पूछने लगा—आज अबतक प्यारे चाचा नेहरू क्यों नहीं आये ? रोते हुए बाबा ने उत्तर दिया—बेटा ! बच्चों का अखिल आधार प्यारा चाचा नेहरू अब नश्वर शरीर से कभी भी नहीं दिखाई देगा, मुग्ध बालक यह सुनकर निराश हुआ, रोते हुए बाबा का मुँह देखते हुए वह अति दुःखी था।



मपि, कयाचिन्महिलयानधिष्ठितपूर्वं सुरक्षा-परिषदधिष्ठातृपद, कौशलेनालकृत्य, महाराष्ट्र-राज्यपालपदमतियोग्यास्पदं सम्यक् सवाह्याधुनाविरत देशसेवा निरतास्ते ॥४८६-४८८॥

अपरापि सहोदराग्रजाणा कृतादरा स्वदेश-वेशविन्यास-वस्तुषु श्रद्धया धृत-स्वदरा, सुसमृद्ध-महत्कुटुम्बिन्यपि श्रीमती कृष्णा-यथाकुलमहर्निश भारतमुपास्ते ॥४८९-४९०॥

न केवल भारतस्यैवापितु समस्त-विश्वस्याय विश्वासोऽस्ति यद्भगिन्यात्मजदौहित्रमवुलमविकलमिद कुलमनुकूलमाचरन्, अनेकापरप्रतिच्छन्न, विपरीत-विकट-समस्या-वर्षणासारैरवरुद्ध, जाति-वर्ण-साम्प्रदायिकैर्झञ्झावातैरुद्वेलितम्, रेणुवर्षैर्भ्रष्टाचारैर्व्यापारिभि-र्व्यवहारिभिरधिकारिभिर्व्यभिचारिभिश्च कृताक्षिरोधम्, मिथ्याग्रह-गृहीतैरग्निग्राहैर्ग्राहैर्गृहीतम्, विमत-विपत्सरित्पति-समुत्थितोद्धतोत्तुग-तरंग-पतित सभार भारतपोतमनुकूल नेष्यति ॥४९१-४९४॥

पूर्वमप्यमन्दसुन्दरीन्दिरा समृद्धमपि स्वकुटुम्बाडम्बर विहाय अहर्निश देशोद्धारार्थं दत्त-जीवनस्य महानुभावस्य श्री पितृपादस्य

बडे बडे देशों की भी किसी महिला द्वारा न प्राप्त किये सुरक्षा परिषद के अधिष्ठातृ-पद का कुशलता से निर्वाह कर, अति योग्यास्पद महाराष्ट्र के राज्य पाल-पद को अच्छी प्रकार वहन कर अब भी निरन्तर देश-सेवा मे सलग्न है ।

दूसरी छोटी बहिन श्रीमती कृष्णा भी बडे भाई बहिनो का आदर करती हुई, स्वदेशी वेश-विन्यास वस्तुओ मे श्रद्धा से स्वदरधारिणी, सुसमृद्ध बडे कुटुम्ब-वाली भी कुल के अनुसार दिन रात भारत की सेविका है ।

न केवल भारत का ही अपितु समस्त विश्व का यह विश्वास है कि— बहिनो—पुत्री तथा दौहित्रों से मिल कर बना यह सारा नेहरू-कुल अनुकूल आचरण करते हुए अनेक आपत्तियों मे ढँके, विपरीत विकट समस्याओं की वर्षा की मूसलाधारा से रुके हुए, जाति-वर्ण-सम्प्रदायो के झंझावातो से झकझोरे हुए, धूलि वर्षा करने वाले, भ्रष्टाचारो, व्यापारी, अधिकारी तथा व्यभिचारियो द्वारा बन्द की हुई आंखो वाले, मिथ्या आग्रहो मे जकडे हुए, वैमत्य की विप-त्तियो के समुद्र मे उठी हुई, उद्धत उत्तुग तरगो मे फसे हुए, भार से दबे हुए, भारत के जहाज को किनारे पर ले जायगा ।

कर्मकुशला योगिनीन्दिरापि सत्यधर्म-कर्तव्य-परायणाहर्निशमश्रान्ता च देश-सेवायां कटिबद्धा सर्वत: कुटिलायामपि राजनीत्यामकुटिला, सरला, पक्षपात-शून्या, वसुधैव कुटुम्बकं मन्यमाना, पूर्वमतिदायित्वपूर्ण-कांग्रेसाध्यक्ष-पद-भारं निर्वाह्येदानीं स्वर्गतेऽखिल विश्व-दिवाकरे, सतत शिवाकरेऽरीणां जवहरे जवाहरेऽविरत सूचना प्रसार-मन्त्रित्वमलंकृत्यातेऽष्टादशमास यावद्भुवोभारमुत्थाय श्री लालबहादुरशास्त्रिमहोदयेऽपि प्रधान-मन्त्रि-पद-कार्यं सम्यक् पालयित्वा, रुदतीमवनीं विरह्य्य दिवंगते, एषा प्रियम्वदेन्दिरैव, प्रधान-मन्त्रि-पदमलंकुर्वाणाऽग्रेऽपि चानेकेषु महत्व-पूर्णेषुगुरुतर-पदेषु कर्तव्यं पालयन्ती, चिरं यावदस्मत्संरक्षकत्वं देशोन्नतिं च करिष्यतीति बलीयान् विश्वास ॥४७९-४८५॥

एषानुजा श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डिताऽपि स्वातन्त्र्य-समरे सतत दत्तयोगा, तदनु विविध-पदेषु पूर्ण-कर्तव्या, अनेकदेशेषु राजदूतपद-दायित्वं पालयित्वा, सर्व-स्वतन्त्राणां प्रसिद्धानां महतां देशानां-

---

अर्थ—कर्म कुशला योगिनी इन्दिरा भी सत्य धर्म-कर्तव्य परायण दिन-रात अश्रान्त, देश-सेवा में कटिबद्ध, सब ओर से कुटिल राजनीति में भी अकुटिल, सरल, पक्षपात-रहित सारी वसुधा को ही कुटुम्ब मानती हुई पहले पूर्ण दायित्व-पूर्ण कांग्रेसाध्यक्ष पद को वहन कर अब अखिल विश्व-दिवाकर, सदा कल्याण-कर, शत्रुओं के वेग-हर जवाहर के स्वर्ग पधारने पर, निरन्तर सूचना प्रसार-मन्त्रिपद को अलङ्कृत कर चुकी है। अन्त में अठारह मास भूमि के भार को उठाकर श्री लाल बहादुर शास्त्री के भी प्रधान मन्त्रि-पद को अच्छी प्रकार पालन कर, भूमि को विरह देकर, स्वर्ग पधारने पर यह प्रियवदा इन्दिरा ही प्रधान-मन्त्रि-पद को अलङ्कृत कर रही है। आगे भी अनेक महत्त्वपूर्ण उच्च पदों पर कर्तव्य पालन करती हुई बहुत देर तक हमारा संरक्षण एवं देश की उन्नति करेंगी, ऐसा हमारा बलवान विश्वास है।

श्री जवाहरलाल की एक छोटी बहिन श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित भी स्वतन्त्रता संग्राम में सदा सहायक रहती हुई, बाद में विविध पदों पर कर्तव्य पालन कर, अनेक देशों में राजदूतों का पद सभाल, सर्व-स्वतन्त्र अतिप्रसिद्ध

गपि, कयाचिन्महिलयानधिष्ठितपूर्वं सुरक्षा-परिषदधिष्ठातृपद, कौशलेनालंकृत्य, महाराष्ट्र-राज्यपालपदमतियोग्यास्पदं सम्यक् सवाह्याधुनाविरत देशसेवा निरतास्ते ॥४८६-४८८॥

अपरापि सहोदराग्रजाणा कृतादरा स्वदेश-वेशविन्यास-वस्तुषु श्रद्धया धृत-स्पृहा, सुसमृद्ध-महत्कुटुम्बिन्यपि श्रीमती कृष्णा-यथाकुलमहर्निशं भारतमुपास्ते ॥४८९-४९०॥

न केवल भारतस्यैवापितु समस्त-विश्वस्याय विश्वासोऽस्ति यद्भगिन्यात्मजदौहित्रमकुलमविरलमिद कुलमनुकूलमाचरन्, अनेकापत्प्रतिष्ठन्न, विपरीत-विकट-समस्या-वर्षणासारैरवरुद्ध, जाति-वर्ण-साम्प्रदायिकैर्झंझावातैरुद्वेलितम्, रेणुवर्षैर्भ्रष्टाचारैर्व्यापारिभि-र्व्यवहारिभिरधिकारिभिर्व्यभिचारिभिश्च कृताक्षिरोधम्, मिथ्याग्रह-गृहीतैरग्रिग्राहैर्ग्राहैर्गृहीतम्, विमत-विपत्सरित्पति-समुत्थितोद्धतोत्तुग-तरंग-पतित सभार भारतपोतमनुकूल नेष्यति ॥४९१-४९४॥

पूर्वमप्यमन्दमुन्दरोन्दिरा समृद्धमपि स्वकुटुम्बाडम्बर विहाय अहर्निश देशोद्धारार्थं दत्त-जीवनस्य महानुभावस्य श्री पितृपादस्य

बडे-बडे देशो की भी किसी महिला द्वारा न प्राप्त किये सुरक्षा परिषद के अधिष्ठातृ पद का कुशलता से निर्वाह कर, अति योग्यास्पद महाराष्ट्र के राज्य पाल पद को अच्छी प्रकार वहन कर अब भी निरन्तर देश-सेवा मे सलग्न है।

दूसरी छोटी बहिन श्रीमती कृष्णा भी बडे भाई-बहिनो का आदर करती हुई, स्वदेशी वेश-विन्यास वस्तुओं मे श्रद्धा से स्पृहा धारिणी, सुसमृद्ध बडे कुटुम्ब-वाली भी कुल के अनुसार दिन रात भारत की सेविका है।

न केवल भारत का ही अपितु समस्त विश्व का यह विश्वास है कि—बहिनो—पुत्री तथा दौहित्रो से मिल कर बना यह सारा नेहरू-कुल अनुकूल आचरण करते हुए अनेक आपत्तियो मे ढँके, विपरीत विकट समस्याओं की वर्षा की मूसलाधाराम रुके हुए, जाति वर्ण सम्प्रदायो के झझावातो से झकझोरे हुए, धूलि वर्षा करने वाले, भ्रष्टाचारी, व्यापारी, अधिकारी तथा व्यभिचारियो द्वारा बन्द की हुई आँखो वाले, मिथ्या आग्रहो म जकडे हुए, वैमत्य की विपत्तियो के समुद्र मे उठी हुई, उद्धत उत्तुग तरगो मे फसे हुए, भार मे दबे हुए, भारत के जहाज को किनारे पर ले आयगा।

स्वर्गीय श्री जवाहरलालस्य, कमलानन्तर चरण-कमलावुपास्य-मानातिष्ठत् सार्वदेशिक सर्वविधमनुभव-विभवञ्चालभत्॥४६५-४६६॥

मन्ये—यथा किष्किन्धां वसता सकल-कलाकुल-वलवता दर्शनेनैवाखिल-खलवल-दलता, दन्त-लांगूल-पतित-दैत्य-सघात निपातयिता, श्रद्धधना हनुमता श्री राघव, कृत-शौर्यार्जनेनारिजन-घन-गर्जनेन, ऋजुना चार्जुनेन श्री यादव, प्राप्त-परमानन्देनामन्देना-द्वन्द्वेनानन्देन गौतमो बुद्धः, समयानुसारमार्षेण ऋषिणा ऋषभेण जिन, दत्तोत्साहेन भामाशाहेन राणा प्रताप, समर्थश्रीस्वामी रामदासेन शिव-वीर, वैरागीवीरबन्देन श्री गुरु गोविन्द, स्वात्मा-भिमानिना मानिना स्वामिना दयानन्देन गुरुविरजानन्दः, दत्तदैन्य-दारिद्र्याज्ञानाना गौराणाना जवहरेण दीनोद्धरणेन जवाहरेण राष्ट्रपिता गान्धी, अभिलषितविकासेन अनायासेनैव त्यक्तभुवन-भुक्त-विलासेन मापदेनापि सुहासेन सोल्लासेन देश-दासेन सुभासेन आज़ाद

पहले भी अमन्द सुन्दरी इन्दिरा, समृद्ध भी, बड़े कुटुम्ब के आडम्बर को छोड़ दिन-रात देशोद्धारार्थ दत्त-जीवन, महानुभाव स्वर्गीय पूज्य पिता श्री जवाहरलाल के—श्रीमती कमला के बाद—चरण-कमलों की उपासना करती रहती थी तथा सभी देशोंके सभी प्रकार के अनुभव प्राप्त करती रहती थी।

यह विचार ठीक है कि जैसे—किष्किन्धा-निवासी, सकल-कला-समूहों से बलवान्, दर्शन मात्र से ही व्याकुल हुई सारी खलदल सेना के दलनकर्ता, दन्तलांगूल से पतित दैत्य-समूह के निपातयिता, श्रद्धालु श्री हनुमान जी के सहयोग से श्री रामचन्द्र जी, शौर्य का अर्जन करने वाले, रिपुजनों के घनगर्जन करने वाले, सरल-मन अर्जुन के सहयोग से श्री कृष्ण, परमानन्द-प्राप्त, विलक्षण द्वन्द्वातीत आनन्द के सहयोग से श्री गौतमबुद्ध, तत्कालीन ऋषि-ऋषभदेव के सहयोग से तीर्थंकर जिन, उत्साह देने वाले भामाशाह के सहयोग से राणा-प्रताप, समर्थ श्री स्वामी रामदास के सहयोग से छत्रपति वीर शिवाजी, वैरागी वीर बन्दा के सहयोग से श्री गुरु गोविन्द सिंह, स्वात्माभिमानी श्री स्वामी दयानन्द के सहयोग से गुरुविरजानन्द जी, दैन्य, दारिद्र्य एवं अज्ञानदाता गोरों का तेज हरने वाले, दीनों के उद्धारक श्री जवाहर के सहयोग से राष्ट्रपिता

हिन्द-सैन्य-समूह सफलोऽभवत्, तथैव सविनयया, सदासन्न सन्नयया, अकाल-बाललीला-विलासावमानेऽपि प्रसन्नया, सदुद्धार-कृत-कल्पनया, नित्य सत्य-सुरत्नया, दीन-दुःख-दारिद्र्यविमोचनया, स्वाङ्गैरपिकृतापकृत्यानामालोचनया, पुण्यपथावलोकनया धृत्यादि-धर्म-लक्षणैरतिरोचनया, सजीव-राजीव-द्वय-सुवनया, भारतोद्धारा-र्थमुपहृत-यौवनया, विलास-व्यय-कृत-सङ्कोचनया, देश-सेवा-विरोचनया, गीतानुसारं गतासून्गतासूंश्चाशोचनया, यथासमय दीन-जन-तर्पणार्थमेवोपार्जित-धन-सङ्कलनया, कूट-कपट-कपाटावरणाना-मुत्पाटने पटु-घनया, छल-छद्म-वचना-कुल-छलनया, खल-बल-दलनया, वीरललनया, सुलोचनयानया तनयया श्री जवाहरो लब्ध-मनोरथोऽभवत् ॥४९७-५०१॥

महात्मा गांधी, विकासाभिलाषी, भोग कर छोड़े हुए अनन्त भोगों के त्यागी, संकटों में भी हँसने वाले, उल्लासी, देश-सेवक सुभाष के सहयोग से आज़ाद हिन्द-सेना समूह सफल हुए; उसी प्रकार—विनीत, सदा ही सत्य न्याय को समीप रखने वाली, असमय में ही बाललीला विलासों की समाप्ति पर भी प्रसन्न, भले लोगों के उद्धार की कल्पना करने वाली, नित्य सत्य सुरत्नवाली, दीन-दुःख दारिद्र्य दूर करने वाली, अपने अंगों द्वारा हुए भी अपकृत्यों की आलोचना करने वाली, पुण्यपथ को देखने वाली, धृत्यादि धर्मलक्षणों से अल-कृत सजीव-राजीव दो पुत्रों वाली, भारतोद्धारार्थ यौवन लगा देनेवाली, विलास-व्यय में संकोच करने वाली, देशसेवा में सजग वाली, गीतानुसार मृत तथा जीवित स्वजनों की चिन्ता से रहित, आवश्यकता के समय दीन-जन-तर्पणार्थ ही उपार्जित धन का संग्रह करने वाली, कूट कपट, कपाटों की दीवारों को तोड़ने में तेज हथौड़े जैसी, छल-छद्म-वचना समूहों को छलने वाली, दुष्ट-जनबल को दलनेवाली, सुलोचना, वीर ललना इस पुत्री के सहयोग से श्री जवाहर जी के मनोरथ पूर्ण हुए।

विश्वात्मा

श्री जवाहरलालो न केवल राजनीतिज्ञ, युग-नायकः सफल-शासन-सचालक एव, अपितु-भूगोल-खगोल-काव्यसाहित्येतिहास-जीवनचरित-सामान्य-ज्ञानादीना मर्मज्ञ अप्यासीत्। विश्वस्य नवीना-प्राचीना च सस्कृतिर्यथार्थतो यथानेन ज्ञाता तथानान्यैः। विशेषेण भारतीय प्राचीनमर्वाचीन च संस्कृति-रहस्य आमूल-चूलमनेन हस्तामलकवद् दृष्ट प्रदर्शित च, अस्य महानुभावस्य सर्वेषा ग्रन्थाना-मध्ययनमुपन्यासवत् सरस भवति। प्रतिशब्द, प्रतिवाक्य, प्रत्यनुच्छेद प्रतिपृष्ठ, प्रत्यध्याय चैकदैव समस्त-ग्रन्थाध्ययन प्रति जिज्ञासा विलक्षणेनातिमोदप्रदेन ज्ञानेन सह वर्द्धते, 'मम कथा' तथा चान्येषां ग्रन्थाणामनुवादो विश्वस्य सर्वासु भाषासु विज्ञैर्विद्वद्भि सादर कृतः, अनेकानि सस्करणानि पुस्तक-प्रकाशन काल एव कृताग्रहैर्ग्राहकैर्गृहीतानि समाप्तानि ॥५१०-५१७॥

अर्थ—श्री प० जवाहरलाल केवल राजनीतिज्ञ, युग-नायक, सफल शासन सचालक ही नही, अपितु भूगोल खगोल, काव्य साहित्य-इतिहास, जीवन-चरित तथा सामान्य ज्ञान आदि के भी मर्मज्ञ थे। विश्व की नवीन एव प्राचीन सस्कृति जिस प्रकार उसने जानी, वैसी दूसरो ने नही। विशेषकर भारतीय प्राचीन तथा अर्वाचीन संस्कृति के रहस्य को आमूल-चूल इसने देखा और लोगों को दिखाया। इस महानुभाव के सभी ग्रन्थो का अध्ययन उपन्यास के समान सरस होता है। इसके प्रति शब्द, प्रति वाक्य, प्रति अनुच्छेद, प्रति पृष्ठ, प्रति अध्याय को पढकर, सारे ग्रन्थ को पढने की जिज्ञासा अति विलक्षण मोद-प्रद ज्ञान के साथ बढती ही जाती है। 'मेरी कहानी' तथा अन्य ग्रन्थो का अनुवाद विश्व की सभी भाषाओं में विज्ञ विद्वानो ने सादर किया है। अनेको सस्करण पुस्तक प्रकाशन होते ही आग्रह करने वाले ग्राहको से खरीदे गये, समाप्त होगये।

एवं सर्व-क्षेत्र-कृताधिकाराभ्यामस्य महानुभावस्यावतार-कोट्यां गणना जाता। उक्तं हि भगवता श्रीकृष्णेनार्जुनाय स्वमुखारविन्दतः- "यद् यद् विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्॥" सञ्जात ज्ञानेन, रूपेण, सौन्दर्येण, स्वास्थ्येन, सुप्रतिभेन प्रभावेण, कारागारादिस्थलनिमेन कृत-तपश्चरणेन, सानुशासनेन शासनेन, पौरस्त्य-पाश्चात्योभय-विध-विशेष-वेश-विन्यासेन, सत्याग्रह-संग्रामजेन संघर्षेण, समस्त-कुटुम्ब-समर्पण-प्रण-रूपेण त्यागेन, गौराङ्ग-राज-विरोध-कृत-धर्म-रणेन यागेन, दीनोद्धार-प्रचार-कृत चरणेन, स्वार्थि-सत्त्व-समाविष्टेष्ट-वृद्ध-जनानुसरणेन, विपुल-विपत्सरित्सरित-पतित-सन्तारणेन दीन-हीन-दारिद्र्यजनोद्धरणेन, निर्धन-जन-सम्भरणेन, स्त्री-शूद्र-हरिजनानां अविद्या-दैन्य-अस्पृश्यतादि-दोष-कठिन-क्लेश-हरणेन देश-सेवायां कटिबद्धेनाजीवनमरणेनानेन या अवतार-कोटी प्राप्ता सा न केवलमनुनयविशारदैः स्वार्थतत्परैश्चाटुकारैरेव समर्पिता अपितु विश्व-विख्यातैर्लोकनायकैः साहित्येतिहास-विज्ञान-राजनीतितत्त्वज्ञैश्च पूर्वकृत-प्राण-विशेषै-

---

अर्थ—इस प्रकार सभी क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार किये—महानुभाव जवाहर की अवतार कोटि में गणना होने लगी। अर्जुन को भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने मुखारविन्द से स्वयं कहा है—संसार में जो जो विभूतिमान् श्रीमान् ओजस्वी प्राणी हों—उनमें मेरा तेज अंश विशेष रूप से जान। सञ्जात ज्ञान से, रूप से, सौन्दर्य से स्वास्थ्य से, अच्छी प्रतिभा वाले प्रभाव से, कारागारादि स्थानों में किये अनवरत तपश्चरण से, अनुशासनयुत शासन से पूर्व-पश्चिम के दोनों प्रकार के विशेष वेश विन्यास से, सत्याग्रह समरजन्य संघर्ष से, समस्त कुटुम्ब-समर्पण प्रण के अमूल्य त्याग से, दीनोद्धारक प्रचार में पैर धरने से, स्वार्थसमाविष्ट इष्ट वृद्ध जनों के अनुसरण से, विपुल विपत्ति के समुद्र में पड़े-गिरे हुओं को तारने से, दीन हीन, दरिद्री जनों के उद्धरण से, निर्धनों का सम्पुष्ट करने से, स्त्री, शूद्र, हरिजनों के अविद्या, दैन्य, अस्पृश्यतादि कठिन दोष क्लेश हरने से, देश सेवा में कटिबद्ध जीवन बलिदान तक को अङ्गीकार करने से, जो अवतार पदवी प्राप्त की वह केवल अनुनय विशारद, स्वार्थ-तत्पर तथा चाटुकारों ने ही नहीं दी थी, अपितु विश्व विख्यात लोकनायकों, साहित्य-

ब्रिटेनादिदेशेशैरपि सादरमुपायनीकृता । अत्रैवेयमुक्ति सफला-"शूरो वैरि-प्रशसित" इति । श्रीमद्भगवद्गीतानुसारञ्चाय मनस्वी-"ज्ञान विज्ञानतृप्तात्मा, कूटस्थो विजितेन्द्रियः । युक्त इत्युच्यते योगी सम-लोष्टाश्मकाचनः" ॥ इति सुलक्षणैर्लक्ष्मणइव प्रतिदिन कृत-प्राणायामैः शीर्षासनैश्च वशीकृत-सेन्द्रिय-साग-शरीरो विलक्षणो राज-योगी जातः ॥५१८-५२८॥

अमित-महिमावत श्रीमतो जवाहरस्य विषये पूर्वमेव विश्व-कविना श्री रवीन्द्रनाथठाकुरेणोक्तम्-"श्रीजवाहरलालेन राजनैतिक सघर्षक्षेत्रे-यत्र प्राय छल-छद्म-कूट-कपट-आत्मप्रवचनादिका दोषा-श्चरित्र दूषयन्ति शुद्धाचरणस्याप्रतिम आदर्श स्थापित, सोऽति विकट-सकट-सघट्ट-पूर्णादपि सत्याद्विमुखोनाभवत् । विविध-सुविधा-सुख-विधायकेनाप्यसत्य-व्यवहारेण तन्मनो मेलन न जातम् । तस्य प्रतिभा प्रभावशालिनी प्रज्ञा कूटनीतिकादस-मार्गात्सर्वदावज्ञापूर्वक, प्रतिनिवृत्ता, यत्र साफल्यमत्यल्प-मूल्य तुच्छ च भवति ॥५२९-५३४॥

इतिहास विज्ञान राजनीति-तत्त्वज्ञो तथा पहले प्राणो तक के शत्रु ब्रिटेन आदि देशो के अधीशो ने भी सादर समर्पित की थी । यही पर यह उक्ति सफल हुई—'शूरवीर वही है जिसकी वैरी भी प्रशसा करें ।" श्रीमदभगवद्गीता के अनुसार यह मनस्वी—"ज्ञानविज्ञान तृप्तात्मा, कूटस्थ विजितेन्द्रिय मिट्टी के ढेले, पत्थर तथा सोने को समान समझने वाले युक्त पुरुष को ही योगी कहते है ।" इन सुलक्षणो से लक्ष्मण के समान, प्रतिदिन किये प्राणायामो तथा शीर्षासनादि यागासो से, इन्द्रियो तथा अगो सहित शरीर को वश करके विलक्षण राजयोगी बन गये ।

अमित महिमावान् श्रीमान् जवाहरलाल जी के विषय मे विश्व-कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पहले ही कहा था—श्री जवाहरलाल ने राज नैतिक क्षेत्र मे—जहाँ पर प्राय छल छद्म, कपट कूट, आत्मप्रवञ्चनादिक दोष चरित्र को दूषित करते हैं, शुद्ध आचरण का अप्रतिम आदर्श स्थापित किया । वे अति विकट सकट-सघट्ट-पूर्ण सत्य से भी विमुख नहीं हुए । विविध-सुविधा सुख विधायक भी असत्य व्यवहार से उनका मन नही मिला, उनकी, प्रतिभा से प्रभाव से शालिनी प्रज्ञा, कूटनैतिक असन्मार्ग मे अवज्ञा तथा अरुचिपूर्वक हट जाती थी, जहाँ पर कि सफलता अल्प-मूल्य तथा तुच्छ बन जाती है ।

अनेन महानुभावेन स्वकीयाष्टादशाब्दात्मके एव शासन-काले स्वस्वार्थमविचिन्त्य, स्वपक्षीयाणां महतामपि देशानां विरोधा-विरोधमविगणय्य, स्वदेशसामर्थ्यासामर्थ्यमविचार्य, अन्याय-विपक्षे कोरिया-कांगो-स्वेज-तिब्बतादि-स्थानेषु आक्रमणानां विरोधः कृतः, रूसयोरपीय देशयोर्युद्धयोस्तटस्था नीतिः सडिण्डिम नादमुद्घोषिता, पालिता च, येनाचरणेनास्य महानुभावस्य देशस्य चामितममलं च यशः सर्वत्र प्रसृतम् ॥५३५-५३७॥

भारतमातुश्चरणयोरनुक्षणं प्रतिश्वाससमर्पण-परायणेनापि श्री जवाहरेण ज्ञान-निधयो विविधा ग्रन्थाः विश्वविवेकिभ्यः प्रदत्ताः । तेषु केचिन्नामोल्लिखिताः—

"१ विश्व इतिहास की झलक, २. हिन्दुस्तान की कहानी, ३. लड़-खड़ाती दुनिया, ४ इतिहास के महापुरुष, ५ राजनीति से दूर, ६ राष्ट्रपिता, ७ पिता के पत्र पुत्री के नाम, ८ हिन्दुस्तान की समस्याएँ, ९. कुछ पुरानी चिट्ठियाँ।"

इस महानुभाव जवाहर ने अपने अठारह वर्ष के ही शासन-काल में स्वार्थ को न सोचते हुए, अपने पक्ष के बड़े-बड़े देशों के भी विरोधाविरोध का न गिनते हुए, स्वदेश की सामर्थ्य-असामर्थ्य को न विचार, अन्याय के विपरीत कोरिया, कांगो, स्वेज एवं तिब्बतादि देशों में आक्रमणों का विरोध किया, रूस तथा योरप के गुटों से तटस्थ-नीति की सडिण्डिम नाद-घोषणा तथा पालना की; जिस आचरण से इस महानुभाव तथा भारत का अमित विमल यश सर्वत्र फैल गया।

भारत माता के चरणों में प्रतिक्षण, प्रतिश्वास समर्पण किये हुए भी श्री जवाहर ने—ज्ञान के समुद्र विविध ग्रंथ, विश्व के विवेकियों को दिये हैं, उनमें कुछ के नाम नीचे लिखे हैं :—

१. विश्व इतिहास की झलक, २ हिन्दुस्तान की कहानी, ३ लड़-खड़ाती दुनिया, ४. इतिहास के महापुरुष ५ राजनीति से दूर, ६ राष्ट्रपिता, ७ पिता के पत्र पुत्री के नाम, ८ हिन्दुस्तान की समस्याएँ, ९. कुछ पुरानी चिट्ठियाँ।

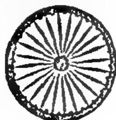
पचशील-प्रवर्तकेऽतिप्रतिष्ठितेऽस्मिन्महानुभावे प्रपच-मचय विहाय पचत्व गते सति किमुत हिताना मित्राणामहितानाममित्राणामपि देशाना ध्वजा मक्म्पा धारासारैरश्रुवर्षमधोमुखा धरायामलुठन् ॥५३८-५३६॥

नह्यन्तो दिव्य-भावाना चरिताना महीयस ।
अतोऽसमर्थो विरमेयम् लेखनादतिपावनात् ॥५४०॥
नान्तोऽस्त्यस्य विभूतीना महतीना विशेषतः ।
मयातु गुण सामुद्रात्कण-मात्र प्रदर्शितम् ॥५४१॥
जीवोपकार-निरत विरत विमोहात्—
वेदोक्त कर्मसु रत दुरितापहारम् ।
सर्वत्र-सर्व-सुखद विशद विशाल ।
दीनार्ति-दारण-पर सतत नमामि ॥५४२॥

पचशील प्रवर्तक, अति प्रतिष्ठित इस महानुभाव के प्रपच-सचय को छोड पचत्व मे मिल जाने पर हितैषी मित्रो के तो क्या अहितैषी, अमित्र देशो के भी भण्ड कापते हुए, धारासार अश्रु बहाते हुए मुँह झुकाए धराशायी हो रहे थे ।

इस महान् चरित्र के दिव्य भावो का अन्त सम्भव नही, अत इस अत्यन्त पवित्र लखन कर्म से विराम लेता हूँ । इस महानुभाव की विशेष रूप से महान् विभूतियो की समाप्ति कभी नही हो सकती, मैंने तो श्री जवाहर के गुणो के समुद्र मे कवल कणमात्र दिखाया है ।

जीवो के उपकार म लगे, विविध मोह मुक्त, वेदोक्त कर्मरत, दुख-दारिद्र्य क्लेशो क अपहारक, सर्वत्र सर्व-सुख दाता, विशद विशाल, दीन दुख-विनाश परायण प्रभु को सदा प्रणाम करता हूँ ।



श्रद्धाञ्जलयः

राष्ट्रपतिश्रीराधाकृष्णन्महोदयानां श्रद्धांजलि

श्री जवाहरलालस्य नेतृत्व न यदा भवेत् ।
सक्रिय सार्वभौम च, किं भवेत् भारतस्तदा ॥१॥
भारतीयैतिहासस्य समाप्तः सुन्दरो युगः ।
भुवं त्यक्त्वा दिवं याते प्रियेऽस्माक जवाहरे ॥२॥
सम्भाषणेष्वपूर्वेषु सार्वभौमेष्वनेकशः ।
शिक्षितोऽखिललोकाना मतः सद्भावतस्तथा ॥३॥
आत्मन प्रियसिद्धान्तैर्निर्मितो भारत शुभ ।
अहिंसा-सत्य-सद्भावैर्गुरु-गान्धी-निदर्शितैः ॥४॥

श्री जवाहर लालेन नव-भारत-निर्माणमुत्थान च कृतम् । यै सत्कारैर्भारतस्योन्नतिर्जाता तान् धारयितुं सक्रिया भवेम । कालस्य निर्ममाह्वान निवारयितु कश्चिदपि समर्थो न भवेत्, अतोऽस्माक प्रियो नेताऽस्मासु नाद्य दृश्यते । श्री जवाहरस्य जीवनमनन्त-सेवायाः समर्पणस्य चाभूत् । अयमस्माक युगस्य महत्तमोऽद्वितीयो राजनीतिज्ञ आसीत् । मानव-मुक्ति प्रति तत्कृता- सेवाः वय सदा स्मरिष्याम ।

अर्थ—राष्ट्रपति राधाकृष्णन् जी की श्रद्धांजलि—' यदि श्री जवाहरलाल जी का सक्रिय सार्वभौम नेतृत्व न होता तो भारत का क्या बनता ? हमारे प्रिय जवाहर के भूमि को छोड़ स्वर्ग सिधारने पर भारतीय इतिहास का सुन्दर इतिहास समाप्त हो गया । उन्होंने अनेक बार अपने अपूर्व सार्वभौम सम्भाषणा से सभी लोगों को अपना मत सद्भाव से सिखाया तथा श्री गाधी गुरु द्वारा निर्दशित अहिंसा-सत्य सद्भाव आदि अपने सिद्धान्तो से शुभ भारत का नव-निर्माण एव उत्कर्ष किया । जिन सस्कारो से भारत उन्नत हुआ उन्हे धारण करने को हम सक्रिय रहे । काल के निर्मम आह्वान को कोई भी रोकने मे समर्थ नही, इसीलिए हमारा प्रिय नेता आज हमारे मे दिखाई नही देता । श्री जवाहर का जीवन अनन्त सेवा एव समर्पण का था, यह हमारे युग का महत्तम, अद्वितीय, राजनीतिज्ञ था, मानव-मुक्ति के लिए उनकी सेवाए हम

आधुनिक-भारत-निर्माणे तेषामवदानमभूतपूर्वम् । श्री जवाहर-जीवनस्य कार्याणाच गम्भीरः प्रभावोऽस्मदीयचिन्तने, सामाजिक सगठने, बौद्धिक-विकासे चातितरामवलोक्यते । दुर्बल-हताश-व्यक्तीना प्रति तद्हृदये महती सहानुभूतिरुद्भवतिस्म । श्री जवाहरस्य साहसेन, व्यक्तित्वेन, प्रत्युत्पन्नमतित्वेन चैवश्मतोऽस्मद्देशोऽग्रे सरति । स्वकीयमस्तित्वमिष्ट चेत् तदास्माभिस्तेषा त एव गुणा सवर्द्धनीयाः । तेभ्योऽस्माकमेषैवोत्तमा श्रद्धाजलिर्यत्तेषामादर्शाग्ङ्गी-कुर्म " ॥५-१२॥

अमरीका-राष्ट्र-पति श्री जानसन महोदय सन्दिदेश—"श्री नेहरोरतोऽधिक कश्चित्स्मारको नास्ति यत्ससारे युद्धभयस्य विनाश स्यात् । विश्वस्मिन् विश्वे कदाचिदपि केनापि नायकेनैव मानव-शान्ति-भावना न प्रकटिता । अद्यास्मत्समक्षमयमग्रिमः प्रश्नोऽस्ति, युद्धरहित-विश्वस्यादर्श-प्राप्त्यर्थं श्रीजवाहरेणाखिलमानवता सेविता । राष्ट्रपितेवास्यापि मूल-मन्त्र शान्तिरेवासीत् । हार्दिक

सदा याद रखेंगे। आधुनिक भारत के निर्माण मे उनकी देन अद्भुत है। जवाहर के जीवन तथा कार्यो का गम्भीर प्रभाव हमारे चिन्तन, सामाजिक सगठन एव बौद्धिक विकासों मे पूर्ण रूप से दिखाई देता है। दुर्बल तथा हताश व्यक्तियो के लिए उनके मन म बडी सहानुभूति थी। उनके साहस, व्यक्तित्व एव प्रत्युत्पन्नमतित्व से सगठित हमारा देश आगे बढ रहा है। हम यदि अपना अस्तित्व चाहते हैं तो उनके उल्लिखित गुणो को बढाये। उन्हें हमारी यही उत्तम श्रद्धाजलि है कि उनके आदर्शो को स्वीकार करें।"

अमरीका के राष्ट्रपति श्री जानसन ने सन्देश दिया—"श्री नेहरू का इससे बडा स्मारक नही होगा कि ससार मे से युद्ध-भय का विनाश हो। सारे ससार मे कभी भी किसी भी नेता ने ऐसी मानव-शान्ति की भावना नही प्रकट की। आज हमारे सामने यही सबसे बडा प्रश्न है। युद्धरहित विश्व की आदर्श-प्राप्ति के लिए श्री जवाहर ने सारी मानवता की सेवा की है। राष्ट्र पिता के समान जवाहर का भी मूल-मन्त्र शान्ति ही था। मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि विश्व के नेता श्री जवाहर की स्मृति मे उनके आदर्शो को वास्तविक रूप दे

महमभिलषामि यज्जवाहर-स्मृतौ विश्व-नायकास्तेषामादर्शान्निगोकुर्युः एतदर्थं कृतमकल्पोऽस्मद्देशः सर्व-श्रद्धेयायास्मै श्रद्धाञ्जलिमर्पयति ॥"१३-१७॥

रूसस्य प्रधान मन्त्री श्री ख्रुश्चेव साश्रुराह—"न केवल भारतीया एव तादृशेन कुशल-विवेकिना नायकेन वियुक्ता येन देश-सेवार्थं राष्ट्रस्य पुनरुद्धारार्थं चातिसंघर्षः कृत अपितु सर्वे प्रगति-प्रिया जना एवंविधस्य महानुभावस्य वियोगेन शोक-निमग्ना भविष्यन्ति, येनान्तिमक्षण यावत् मानवताया उच्चादर्शार्थं, शान्ति-प्रगत्यो प्राप्त्यर्थं च स्वकीया सर्वा शक्तयः प्रयुक्ता ॥"१८-२२॥

फ्रान्स-नायकः श्री डोगालो गलदक्षरेण-गलेनाह—"श्री जवाहरस्य मृत्यो समाचार श्रुत्वा मया हार्दिकमतिकरुण दुःखमनुभूतम् । ते महान्तो राजनायका आसन् । सह स्वस्य फ्रान्सस्य जनतायाश्च समवेदना प्रकटयामि ॥"२३-२४॥

सोवियत राजदूत श्री वेनेदिक्तोव रुदन्नाह—"श्री जवाहरलालो विश्वस्याप्रतिमो व्यक्ति, भारतीयो महान्नागरिक,

---

ग्रहण करें। इसके लिए कृत-संकल्प हमारा देश सर्वश्रद्धेय श्री नेहरू जी को श्रद्धाजलि भेंट करता है।"

आँसू बहाते हुए रूस के प्रधान मन्त्री श्री ख्रुश्चेव बोले—"केवल भारतीय ही उस कुशल, विवेकी, नायक से वियुक्त नहीं हुए, जिसने कि देश-सेवा के लिए एवं राष्ट्र के पुनरुद्धार के लिए अति संघर्ष किया, बल्कि सभी प्रगति-प्रिय लोग इस प्रकार के महानुभाव के वियोग से शोक-निमग्न होंगे जिसने कि अन्तिम क्षण तक मानवता के उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए अपनी सारी शक्तियाँ लगा दीं।"

फ्रान्स-नायक श्री डोगाल लड़खड़ाती जबान से, रुँधे हुए गले से बोले—"श्री जवाहर की मृत्यु के समाचार को सुनकर मैंने हार्दिक दुःख का अनुभव किया। वे महान् राज-नायक थे। मैं अपनी तथा फ्रान्स की जनता की समवेदना प्रकट करता हूँ।

सोवियत राजदूत श्री वेनेदिक्तोव ने रोते हुए कहा—"श्री जवाहरलाल

लोकेप्टशान्ति-स्थापनार्थमहर्निश सघर्षक सर्वोच्चः सेनानायक-श्चासीत् ॥२५-२६॥

श्रीमता अब्दुलगफ्फारगान्धिना तारद्वारा सन्दिष्टेन्दिरा-"कदाचिदहमस्मिन् राष्ट्रीय-शोक-सागरे तव समीपे भवेयम् ॥२७॥

राष्ट्र-पिता महात्मा गान्धी पूर्वमेवाह-"जवाहर लाल आत्मना-नुपमो वीरः। देशानुरागक्षेत्रे जवाहरादधिक कोऽन्य ? यत्र अस्मिन् सुभट इव साहसश्चापल्य चास्ति, तत्र राजनीतिज्ञ इव बुद्धिमत्ता दूरदर्शितापि चास्ति। अनुशासनस्य अय पूर्णभक्तोऽथ चैवविध काले ऽपि यदानुशासनमपमानमिवाभातिस्म, अनेनानिदार्ढ्यनास्य पालन-मादर्शितम्। अय स्फटिक इव शुद्ध, अस्य सत्यपालन विषये तु शका लेशोऽपि नास्ति, अय निर्भयो निर्दोषो निष्कलङ्कश्च नायकोऽस्ति, जवाहरेण स्वदेशवेद्या स्वजीवनस्याखिला अभिलाषा ममताश्च बलि-कृता श्री जवाहर एवविधोऽमुकुट सम्राडस्ति यो भारत तु सेवितुम-भिलषत्येव तद् द्वारा विश्वमपि सेवितुमीहते ॥"२८-३३॥

विश्व के अप्रतिम व्यक्ति, भारत के महान् नागरिक लोकप्रिय शांति की स्थापना के लिए अहर्निश सघर्षक तथा सर्वोच्च सेनानायक थे।"

श्रीमान् अब्दुल गफ्फार गाधी ने इन्दिरा को तार द्वारा सन्देश दिया—"काश, इस राष्ट्रीय शोक सागर मे मैं तेरे पास होता।"

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने श्री जवाहर की युवावस्था मे ही कहा था—"श्री जवाहर अपने आप अनुपम वीर हैं, देश-प्रेम के क्षेत्र मे इससे बढकर और कौन है? जहाँ पर इसमे अच्छे योद्धा के समान साहस व चपलता है वहाँ पर राजनीतिज्ञ के समान बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता भी है। अनुशासन का यह पूर्ण भक्त है विशेषकर ऐसे समय—जबकि अनुशासन-पालन अपमान के समान प्रतीत होता है इसने इसके पालन मे पूरी दृढता दिखायी है। यह स्फटिक मणि के समान शुद्ध है, इसके सत्य-पालन के विषय म तो कुछ भी शका नही। यह निर्भय, निर्दोष तथा निष्कलक नेता है। प० जवाहरलाल ने स्वदेश की वेदी पर अपने जीवन की सारी अभिलाषाए तथा ममताए बलिदान कर दी। श्री जवाहर लाल इस प्रकार का बेताज बादशाह है जो भारत की सेवा तो करना चाहता ही है, इसके द्वारा सारे विश्व की भी सेवा करना चाहता है।"

●

ग्रन्थ-सारः

घटना या विशेषेण जीवनेऽस्य पुराभवन् ।
ताः प्रवक्ष्ये महाभागाः ! शृणुध्व पुण्य-कारिकाः ॥१॥

एकोननवत्युत्तर-अष्टदशे ख्रिष्टाब्दे चतुर्दश-नवम्बरेऽस्य महात्मनो जनिरभूत् । कृतयज्ञोपवीतस्तु गंगास्नान दिने-दिने । कृतवान् महमाता वै सत्संग चाकरोत्तथा ॥ पञ्चोत्तरैकोनविंशेऽब्दे शिक्षार्थमाग्ल भूमिमगच्छत् द्वादशोत्तरैकोनविंशे च लब्धशिक्षो भारतमागत ।षोडशोत्तरैकोनविंशे विवाहो गान्धि-संगतिश्च । एक-विंशाधिकैकोनविंशे दिसम्बरे देशसेवायो बन्धनम्, द्वाविंशत्युत्तरैकोन-विंशे-मार्चे मुक्ति , षड्विंशत्युत्तरैकोनविंशे योरपस्य रूसस्य च यात्रा, अष्टाविंशत्युत्तरैकोनविंशे लक्ष्मणपुरे जन-नेतृत्वम् साइमन कमीशन-विरोधार्थम्, एकोनविंशत्युत्तरैकोनविंशे लवनगरे राष्ट्रसभाध्यक्षता, पञ्चत्रिंशदुत्तरैकोनविंशे चतुर्दश-फर्वर्यामल्मोडानगरस्य कारागारे आत्मकथा-पूर्ति', चत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशे, एकत्रिंशदक्टूबरे सत्या-ग्रहे बन्धनम्, द्विचत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशे सप्तमेऽगस्ते मुम्बय्या कांग्रेसाधिवेशने भाषणम्—'गोरा भारत त्यजत' इति प्रस्ताव-स्पष्टी-करणार्थम् । तदग्रिमदिने च गृहीतस्याहमदनगरदुर्गे निरोधस्तत्र च बहुलेखनम्, षट्चत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशे मार्चे विमुक्ति , दक्षिण पूर्वीय एशिया-देशाना चतुर्थं भ्रमणञ्च । अस्मिन्नेवाब्देऽस्य कांग्रेसस्य

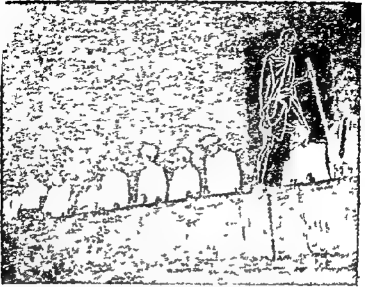
अर्थ—श्री जवाहरलाल जी के जीवन मे घटी कुछ विशेष पुण्यकारक घटनाओ को सुनाता हूँ, सुनिये । १८८९ ई० सन् मे १४ नवम्बर को जन्म हुआ । यज्ञोपवीत होने पर वे प्रतिदिन माताजी के साथ गगा स्नान तथा सत्सग के लिए जाते थे । १९०५ मे ये शिक्षार्थ इगलैड गये, १९१२ मे शिक्षा प्राप्त कर वापिस आये । १९१६ में कमला के साथ विवाह एवं महात्मा गान्धी जी से मेल हुआ । १९२१ के दिसम्बर मे देश सेवा के कारण पकडे गये, १९२२ मे मार्च मे छूट कर १९२६ मे रूस तथा योरुप की यात्रा की । १९२८ मे लखनऊ मे साईमन कमीशन के विरोध मे जनता का नेतृत्व किया । १९२९ मे लाहौर मे कांग्रेस-सभा के अध्यक्ष बने । १४-२-३५ को अल्मोडा जेल मे आत्मकथा पूरी की । ३१-१०-४० को सत्याग्रह मे पकडे गये । ७ ८-४२ को बम्बई मे कांग्रेस के अधिवेशन म 'अग्रेजो, भारत छोडो' यह प्रस्ताव रखा, ८ ८ ४२ को पकडकर अहमदनगर के किले मे रखे गये, वहाँ बहुत कुछ लिखा। मार्च १९४६ को छूटने पर दक्षिण पूर्वी एशिया का चौथी बार भ्रमण किया, इसी वर्ष कांग्रेस

चतुर्थोऽध्यक्ष, सप्तचत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशे पचदशेऽगम्ते भारत-स्वाधीनता-काले प्रधानमन्त्रित्वम्, चतु पंचाशदुत्तरैकोनविंशे स्वयमाविष्कृतपचशीलप्रयोगे विश्वसुखावहे चीनस्य प्रधान-मन्त्रिणा सह हस्ताक्षरकरणम्, षष्ठ्युत्तरैकोनविंशे भारत-प्रतिनिधिमण्डलस्य राष्ट्रसघगमनात्मक नेतृत्व तत्र विश्वशान्त्यर्थभाषणच। द्विषष्ट्युत्तरैकोनविंशे प्रकटतो मित्राणामपि प्रच्छन्नामित्राणा, प्रत्यक्षे विश्वस्तानामपि, अप्रत्यक्षेऽविश्वस्ताना, वचनवद्धानामपि कार्य-विरुद्धाना, राष्ट्रसघे तेषा प्रतिनिधित्वार्थं वार-वार योरुप-देशाना विरोधेऽपि भारत कृत-साहाय्येन, वलेन कृतज्ञाना, फलेन चाकृतज्ञाना वचकाना चीननीचानामाघातेनाप्रत्याशितो हृदयाघात. चतु षष्ट्युत्तरैकोनविंशे भुवनेश्वर-काग्रेसाधिवेशने हृदयरोगागतिः, अस्मिन्नेवाब्दे सप्तविंशतिमय्यामतिविकलायामखिलायामसहायाया शोक-मय्या दिल्ल्या सर्वत्र जित-सत्य-समरोऽथ जवाहरोऽमरोऽभवत्। हा! हन्त! हता मानवता,

गतो जवाहरस्त्वद्य शरीरेण सुरालयम्।
पर सदात्मना ज्योतिस्तम्भो मानव-मुक्तिदः ॥२-२०॥

के चौथी बार अध्यक्ष बने। १५-८-४७ को भारत के स्वतन्त्र होने पर प्रधानमन्त्री बने, १९५४ में बनायी पचशील-योजना पर चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ ऐन लाई के साथ मिल कर हस्ताक्षर किये। १९६० मे राष्ट्र मण्डल मे जाने वाले प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व किया तथा वहाँ पर विश्व-शाति के लिए भाषण दिया। १९६२ को प्रकट रूप से मित्र होते हुए भी प्रच्छन्न शत्रुओ, प्रत्यक्ष मे विश्वस्तो तथा अप्रत्यक्ष मे अविश्वस्तों, वचनो से प्रेम मे बन्धे हुए भी कार्य से विरुद्धो, राष्ट्रसघ मे उन्हीके प्रतिनिधित्व के लिए योरुपीय देशो के अति विरोध होने पर भी भारत की ओर मे की सहायता के कारण कहने मात्र मे कृतज्ञ किन्तु फल मे कृतघ्नों, वचक चीन के नीच शासकों द्वारा आक्रमण के अप्रत्याशित आघात से हार्दिक कष्ट हुआ। १९६४मे भुवनेश्वर के कांग्रेस अधिवेशन मे हृदय-रोग हुआ। इसी वर्ष अति विकल, अखिल लोक म असहाय, शोकमयी दिल्ली मे सत्ताईस मई को सर्वत्र सत्य समर को जीतने वाला भारतमाता के चरण-कमलो का भ्रमर, यह जवाहर अमर हो गया।

यह जवाहर आज शरीर से तो स्वर्ग चला गया, पर सदा को ही यह मानव को मुक्ति देने वाला ज्योति स्तम्भ बन गया।



आणुशस्त्रविरोधार्थं प्रयतन्तो निरन्तरम् ।
महात्मा विश्वनेतारः शान्ति साधन तत्परा ॥



अन्तिम दर्शनम्
गतो जगाद्गरम्यात्र शरीरेण सुरालयम् ।
परं महात्मना ज्योतिस्तम्भो मानवमुक्तिद ॥

ग्रन्थ-निर्माण-वृत्तम्

वरणालयमारभ्य ग्रीष्मर्तौ ताप-तापिते ।
खिष्टाब्दे जूनमासे हि चतुष्षष्टिसमन्विते ॥१॥
एकोनविंश-पूर्वे हि शोकाकुल - जनान्विते ।
सप्तविंशतिथौ मय्या मध्याह्ने वह्नि-सन्निभे ॥२॥
शोकोद्गारा समुद्भूता अस्ते भारत-भास्करे ।
जीवन लोक-नाथस्य देववाण्यां लिखाम्यहम् ॥३॥
विद्यालय-कार्येषु व्यस्तोऽसमर्थोऽस्म्यहम्परम् ।
समयाभावतो भावा उत्पद्यन्ते क्षण-क्षणम् ॥४॥
पूर्वं वै व्याधि-ग्रस्तोऽहमधुना त्वाधि-बाधित. ।
सुख-शान्ति-विहीनोऽस्मि दीनो साधन-निर्धन ॥५॥
मार्ग-निर्देशको यस्य गतो वीरः सुरालयम् ।
चरित्र तस्य यावद्धि न लिखामि महात्मनः ॥६॥
तावन्न मानसी शान्ति पश्याम्यत्र कदाचन ।
अतोऽवकाशे ग्रीष्मस्यागस्तमासे गति-प्रदे ॥७॥
चैल गतोऽनुजावासे रामलाल-निमन्त्रित ।
प्रयासस्तत्र बालाना कृतोऽयं पाप-नाशनः ॥८॥
पुण्यप्रद शुभाधारः सर्व-लोक-सुखावह ।
यशदोऽखिललोकेषु बाल-वृद्ध हितावहः ॥९॥

इस पुस्तक का आरम्भ मैने बरनाला मे—ग्रीष्म ऋतु मे, गर्मी से तप रहे जून मास मे, सन् १९६४ मे जब कि सब लोग शोकाकुल थे—किया था। सत्ताईस मई को अग्नि के समान तपते हुए मध्याह्न मे भारत-भास्कर श्री जवाहर के अस्त होने पर मेरे शोक उद्गार निकले कि लोकनाथ नेहरू का जीवन देववाणी मे लिखूं। विद्यालय के कामो मे व्यस्त, समयाभाव से मैं सर्वथा असमर्थ था, पर भाव प्रतिक्षण उठते रहते थे। व्याधि ग्रस्त तो मैं पहले ही था। अब आधि (मानसी व्यथा) से भी बाधित हुआ, सर्व साधनो से निर्धन सुख-शान्ति से हीन रहने लगा, जिसका कि मार्ग निर्देशक देव लोक चला गया। जब तक उस महात्मा का चरित्र नही लिखता, तब तक किसी प्रकार भी मानसिक शान्ति नही प्राप्त कर सकता। इसलिए अनुज रामलाल से निमन्त्रित उसके घर चैल मे जाकर यह पाप-नाशक, पुण्यप्रद, सुखकर, सर्वलोक सुखावह सभी लोको मे सुख देने वाला, बाल-वृद्धो को हितकारी, स्त्रियो एव हरिजनो

स्त्रीणां हरिजनानाञ्च बुद्धि-वृद्धि-प्रदायकः।
दीन-निर्धनहीनानां ऋद्धि-सिद्धि-विधायकः ॥१०॥
सर्व-पापहरो नित्यं सत्य मंगल-कारकः।
नष्टानां पथ-भ्रष्टानां क्लिष्टानां क्लेश-हारकः ॥११॥
तथाच—ख्रिष्टाब्देऽस्मिन्मासे हि चतुःषष्टिसमन्विते।
एकोनविंशपूर्वे हि वर्षर्तावति-वर्षति ॥१२॥
शीतानिल-जल-प्राये सर्व-जीव-सुखावहे।
सिद्धाश्रमे सिद्धि-प्रदे रामलाल-गृहे शुभे ॥१३॥
गीतादत्त-समोपात्त-लेखनी-मसि-शोषके।
जैनाम्बलेऽहमलिखं महामानव-जीवनम् ॥१४॥
लिखतामखिलाधारं पठतां पापनाशनम्।
वदतां सम्पदाकारं शृण्वतां शुभदं परम् ॥१५॥
बालानामखिलोनानां लीला-लास्यानन्द मुदम्।
विप्राणां मति-बाहुल्यं राजन्यानां बल-प्रदम् ॥१६॥
वैश्यानां वदन्यानाञ्च धन-धान्य-विधायिनी।
स्त्रीणां हरिजनानां च गौरवं शुभदर्शिनम् ॥१७॥
एवं बाल-प्रयासोऽपि सफलो भाव-योगतः।
पारस सगतो लोहः काञ्चनत्वं प्रपद्यते ॥१८॥

को बुद्धि वृद्धि देने वाला, दीन निर्धन हीनों का ऋद्धि सिद्धि विधाता, नित्य सर्व पापहारी, सत्य मंगलकारी नष्ट, पथभ्रष्ट, कष्ट भोगी लोगों के क्लेश हरने वाला, इस पुण्य पुरुष के महान् जीवन चरित्र का बाल प्रयास मैंने किया है।

और सन् १९६४ के बहुत वर्षा वाले शीत जल वायु वाले सब जीवों को सुखद अगस्त मास में सिद्धिप्रद सिद्धाश्रम में श्री रामलाल के शुभ घर में उनकी सुपुत्री गीता से लेखनी, दवात व स्याहीचूस लेकर—जैन यश लिखने वालों के लिए समस्त आधार, पढ़ने वालों का पापनाशक कहने वालों का सम्पत्ति देने वाला सुनने वालों का परम शुभद और। बालक बालिकाओं को लीलालास्य तथा प्रसन्नता का स्थान, विप्रों को मतिबाहुल्य देने वाला क्षत्रियों का बलप्रद, वैश्यों को प्रशस्त ही धन धान्य विधायिनी वदान्य व युक्ति देने वाला, स्त्रियों तथा हरिजनों को साथी गुरु द्वारा दर्शित गौरव देने वाला 'महामानव जीवन' लिखा। इस प्रकार मेरा बाल प्रयास श्रीयुत जवाहर जीवन के शुभ भावों से मिल कर सफल हो गया क्योंकि पारस से मिलकर तो लोहा भी स्वर्ण बन जाता है।

ग्रन्थ-निर्माण-वृत्तम्

वरणालयमारभ्य ग्रीष्मर्तौ ताप-तापिते ।
खिृष्टाब्दे जूनमासे हि चतुःषष्टिसमन्विते ॥१॥
एकोनविंश-पूर्वे हि शोकाकुल - जनान्विते ।
सप्तविंशतिथौ मय्या मध्याह्ने वन्हि-सन्निभे ॥२॥
शोकोद्गारा समुद्भूता अस्ते भारत-भास्करे ।
जीवन लोक-नाथस्य देववाण्या लिखाम्यहम् ॥३॥
विद्यालय-कार्येषु व्यस्तोऽसमर्थोऽस्म्यहम्परम् ।
समयाभावतो भावा उत्पद्यन्ते क्षण-क्षणम् ॥४॥
पूर्वं वै व्याधि-ग्रस्तोऽहमधुना स्वाधि-बाधितः ।
सुख-शान्ति-विहीनोऽस्मि दीनो साधन-निर्धन ॥५॥
मार्ग-निर्देशको यस्य गतो वीरः सुरालयम् ।
चरित्र तस्य यावद्धि न लिखामि महात्मनः ॥६॥
तावन्न मानसी शान्ति पश्याम्यत्र कदाचन ।
अतोऽवकाशे ग्रीष्मस्यागस्तमासे गति-प्रदे ॥७॥
चैल गतोऽनुजावासे रामलाल-निमन्त्रित ।
प्रयासस्तत्र बालाना कृतोऽय पाप-नाशनः ॥८॥
पुण्यप्रद शुभाधारः सर्व-लोक-सुखावह ।
यशदोऽखिललोकेषु बाल-वृद्ध हितावहः ॥९॥

इस पुस्तक का आरम्भ मैने बरनाला मे—ग्रीष्म ऋतु मे, गर्मी से तप रहे जून मास मे, सन् १९६४ म जब कि सब लोग शोकाकुल थे—किया था। सत्ताईस मई को अग्नि के समान तपते हुए मध्याह्न मे भारत-भास्कर श्री जवाहर के अस्त होने पर मेरे शोक उद्गार निकले कि लोकनाथ नेहरू का जीवन देव-वाणी मे लिखूं। विद्यालय के कामो म व्यस्त, समयाभाव से मैं सर्वथा असमर्थ था, पर भाव प्रतिक्षण उठते रहते थे। व्याधि-ग्रस्त तो मैं पहले ही था। अब आधि (मानसी व्यथा) से भी बाधित हुआ सर्व साधनो से निर्धन सुख-शान्ति से हीन रहने लगा, जिसका कि मार्ग निर्देशक देव लोक चला गया। जब तक उस महात्मा का चरित्र नही लिखता, तब तक किसी प्रकार भी मानसिक शान्ति नही प्राप्त कर सकता। इसलिए अनुज रामलाल से निमन्त्रित उसके घर चैल मे जाकर यह पाप नाशन, पुण्यप्रद, सुखकर, सर्वलोक सुखावह सभी लोकों मे सुख देने वाला, बाल-वृद्धो को हितकारी, स्त्रियो एव हरिजनो

स्त्रीणां हरिजनानां च बुद्धि-वृद्धि-प्रदायकः ।
दीन निर्धनहीनानां ऋद्धि-सिद्धि-विधायकः ॥१०॥
सर्वं पापहरो नित्यं सत्यं मंगल-कारकः ।
नष्टानां पथ भ्रष्टानां क्लिष्टानां क्लेश हारकः ॥११॥
तथा च—त्रिसप्तोत्तरगणमासे हि चतुःषष्टिसमन्विते ।
एकोनविंशपूर्वे हि दर्पणाविनि-दर्पणे ॥१२॥
शीतानिल-जल-प्राये सर्व-जीव-सुखावहे ।
सिद्धाश्रमे सिद्धि-प्रदे रामलाल-गृहे शुभे ॥१३॥
गीतादत्त-समीपात्त-लब्धनी मति-दीपकं ।
धर्मात्स्वलेऽमलित्व महामानव जीवनम् ॥१४॥
लिखतामस्त्रिताधारं पठतां पापनाशनम् ।
वदतां सम्पदाधारं शृण्वतां शुभदं परम् ॥१५॥
बालानामतिलोलानां लीला-लास्यास्पदं मुदम् ।
विप्राणां मति ब्राह्मण्यं राजन्यानां बल-प्रदम् ॥१६॥
वैश्यानां वश्यनावश्यं धन-धान्य-विधायिनी ।
स्त्रीणां हरिजनानां च गौरवं सुन्दर्शितम् ॥१७॥
एवं बाल प्रयासोऽपि सफलो भाव-वागतः ।
पारस सङ्गतो लोहः काञ्चनत्वं प्रपद्यते ॥१८॥

को बुद्धि वृद्धि देने वाला, दीन निर्धन हीनों का ऋद्धि सिद्धि विधाता, नित्य सब पापहारी सत्य मंगलकारी नष्ट पथभ्रष्ट क्लेश भागी लोगों के क्लेश हरने वाला उस पुण्य पुरुष के महान जीवन चरित्र का बाल प्रयास मैंने किया है।

और सन् १९६४ के बहुत वर्षा वाले शीत जल वायु वाले सब जीवों को सुखद अगस्त मास में सिद्धिप्रद सिद्धाश्रम में श्री रामलाल के शुभ गृह में उनकी सुपुत्री गीता से लबनी दवात व स्याही लेकर—मैंने यह लिखने वालों के लिए सम्पत्ति आधार, पढ़ने वालों का पापनाशक कहने वालों को सम्पत्ति देने वाला सुनने वालों को परम शुभद और चंचल बालकों को लीलास्पद तथा प्रसन्नता का स्थान, विप्रों को ब्राह्मण्य देने वाला क्षत्रियों को बलप्रद, वैश्यों को सुन्दर ही धन धान्य विधायिनी व्यावहारिक बुद्धि देने वाला, स्त्रियों तथा हरिजनों को गांधी गुरु द्वारा दर्शित गौरव देने वाला महामानव जीवन लिखा। इस प्रकार मेरा बाल प्रयास भी श्री जवाहर जीवन के गुण गाने से मिल कर सफल हो गया क्योंकि पारस से मिलकर तो लोहा भी स्वर्ण बन जाता है।

किंचिदात्म-परिचयः

सादापत्त्यां जयस्थाख्ये पुरे परमशोभने ।
वंश सारस्वतीयानां विप्राणामतिपावनः ॥१॥

तत्राभूदुत्तमोरामः पूज्यः पण्डित मण्डनः ॥
धार्मिक सत्य संकल्पो नित्यं सन्मार्ग दर्शक ॥२॥

तत्रातिपूज्यानां सद्ब्राह्मण-गुणाग्रगण्यानां श्रीमतामुत्तमरामाणां गृहे—श्री माणाराम, श्री ठाकुरदत्त, श्री श्रावणरामश्चेति पुत्र त्रयमुत्पन्नम् । तेषु—मध्यमानां विद्वद्धनानां, कर्म काण्ड कोविदानां, गीतोक्त—' शमो-दमस्तपः शौच क्षान्तिरार्जवमेव च । ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म-स्वभावजम् ।'' इति गुणविशिष्टानां, वित्ते सामान्यानामपि वृत्तेऽसामान्यानाम्, धृत्या साधारणानामपि धृत्यामाधारणानाम्, स्वभावेन शान्तानामप्य सद्भावेषु विक्रान्तानाम् प्रकृत्या सौम्यानामपि शास्त्रसम्मतमतपालनानुशासन-कठोराणाम् गुरु देव द्विजातिथिपूजनसद्व्यये सदोदाराणामपि व्यसनापव्यय-कृपणानाम्, धर्म-धुरन्धराणाम् अधर्म-विधुराणाम्, दीनजनोद्धारेऽहर्निश सयत्ना-नाम्, प्रतिक्षण हरि हर-स्मरणपरायणानाम्, सुर-वाण्यां गुरु गायत्र्याऽधिगतिवरा लब्ध रहस्यानाम्, श्रुति स्मृति दर्शन-धर्मशास्त्र राजनीतिशास्त्र अर्थशास्त्र श्रीमद्भागवत रामायण महाभारत ज्योतिषायुर्वेद — श्रीगुरग्रन्थ-साहित्य-काव्य-

---

परम सुन्दर जैतो नगरी की सादापत्ति मे सारस्वत ब्राह्मणो का अति पवित्र वश है । उस वश मे पण्डित मण्डल की शोभा, धार्मिक, सत्य-सङ्कल्प, नित्य-सन्मार्ग दर्शक पूज्य श्री उत्तमराम जी हुए । उनके घर मे श्री माणा राम जी, श्री प० ठाकुर दत्त जी तथा श्री प० श्रावण राम जी—नाम से तीन पुत्र उत्पन्न हुए । उन तीनो मे से मध्यम, विद्या धन से धनवान् कर्म काण्ड-कोविद, गीतोक्त शम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान विज्ञान, एव आस्तिकता-गुणो को धारण करनेवाले, सम्पत्ति मे सामान्य होते हुए भी चरित्रम असामान्य, वृत्ति मे साधारण होते हुए भी धृति मे असाधारण, स्वभाव से शान्त होते हुए भी असद्भावो मे आक्रमण शील, प्रकृति से सौम्य होते हुए भी शास्त्र सम्मत मत पालने के लिए अनुशासन मे कठोर, गुरु, देव, द्विज एव अतिथि पूजनार्थ सद्व्यय मे सदा उदार होने हुए भी व्यसनार्थ अपव्ययो मे कृपण, धर्म-धुरन्धर, अधर्म-रहित दीन-जनो के उद्धार मे रात दिन सचेष्ट, प्रतिक्षण हरि-हर स्मरण-

नाटक-साहित्येतिहास प्राचीनार्वाचीन प्रान्त्य नागरिक-भाषा ग्रन्थेषु च पारङ्गता-नाम्, पूज्यपादानां श्री प० ठाकुरदत्त शर्मणां गृहे—श्रद्धा-सागरस्य समा मम्यां पूज्यायां मातृदेव्यां पञ्चात्मजानां चतसृणामात्मजानां उत्पन्ना । ज्ञानचन्द्रानुजा पूर्णादेवी पञ्चभ्रातृणां स्वसा । तत्राग्रजा पूज्या श्री रामप्रसाद वैद्य शास्त्री देव-वाण्यां सुर-वाण्यां गुरु-वाण्यां गौर-वाण्यां च पारङ्गता एम ए, बी टी, इत्युपाधिधारिणः, इदानीं एम ए बी टी इत्युपाधि संयुक्तया स्वानुजया सर्ध पत्न्या निरञ्जनया सह दिल्ली शिक्षा सम्थाने शिक्षाध्यापनकार्येण शुभिमलं-कुर्वन्ति । तेषामनुजोऽहमस्मि ! मदनुजौ रामनाथ रामनारायणौ कृषि कर्मणा जीवतः । तदनुजन्मा श्री रामलाल हिन्दी प्रभाकर, विशारद, बी टी एम ए बी एड इत्युपाधिविशिष्ट, सुर-वाण्यां, गुरु-वाण्यां, गौर-वाण्यां पारङ्गतो मदपोऽनुजानुगतः भूमिमधितिष्ठति ।

पारायण, संस्कृत तथा गुरु-वाणी के ग्रन्थ-स्वाध्याय, श्रुति स्मृति, दर्शन, धर्म-शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, श्रीमद्भागवत, रामायण, महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, काव्य, नाटक, साहित्य, इतिहास, प्राचीन, अर्वाचीन, प्रान्त्य एवं नागरिक भाषा-ग्रन्थों में पारङ्गत, पूज्य पाद श्री प० ठाकुर दत्त शर्मा जी के घर श्रद्धा, सरलता एवं सहायता पूर्ण देवी-स्वरूपा माता हरदेवी में पांच पुत्र तथा चार पुत्रियां उत्पन्न हुईं । अब शेष बहिन पूर्णा देवी और पांच भाई हैं ।

तेऽयम् बाल्य एव गोपालने कृषिकर्मणि च संलग्नः सहैव-श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पर्यन्तां गुरु वाणीम् श्रीमद्भागवतपर्यन्तां च सुरवाणीं गृह एव परम-पूज्य-पितृपादेभ्यः पठन् उपाध्याय-कृत्यमपि चाकरवम्। तदनु अनेकासु संस्कृत पाठशालासु—बिरला संस्कृत-महाविद्यालये पिलान्याम्, देहरादूनस्थे श्री लक्ष्मण संस्कृत महाविद्यालये च परीक्षा-प्रणालीमनुसृत्याध्ययनं समाप्याधुनाध्यापनवृत्त्या वर्तमानः पञ्चाशद्वर्षीयोऽपि लेखन-कर्मणि बाल एवास्मिन् महत्प्रयासानुभवसाध्ये गुरुतर-कार्ये प्रवृत्तोऽस्मि। तथापि आशास्ते विश्वासो यत्—

एवं बाल-प्रयासोऽपि सुलभो भावयोगतः।
पारसं संगतो लोहः काञ्चनत्वं प्रपद्यते॥

ओ३म्

'शङ्कर शं करोतु वः'

इन्हीं मे से मै बचपन मे ही गोपालन तथा कृषि कर्म मे लगा हुआ साथ ही गुरु ग्रन्थ साहिब पर्यन्त गुरु-वाणी एवं श्रीमद्भागवत पर्यन्त सुरवाणी को घर मे ही पूज्यपाद श्री पिताजी से पढकर उपाध्याय-कार्य भी करता रहा।

उसके बाद अनेको संस्कृत पाठशालाओ मे—बिरला संस्कृत-महा-विद्यालय, पिलानी तथा श्री लक्ष्मण संस्कृत-महा-विद्यालय, देहरादून मे परीक्षा-प्रणाली से अध्ययन समाप्त कर अब संस्कृत अध्यापक के रूपमे पचास के पास पहुंचते हुए भी लेखन-कार्य मे बाल बुद्धि ही इस बड़े प्रयास एवं अनुभव साध्य गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त हुआ हूँ। फिर भी यह विश्वास बनाहुआ है कि मेरा यह बाल-प्रयास भी शुभ भावो के योग से सफल होगा, क्योंकि पारस से छूकर लोहा भी स्वर्ण बन जाता है।

ओ३म् भगवान् श्री शंकर आपका कल्याण करें!



आभार-प्रदर्शनम्

यो देव: सर्व-भूतेषु व्याप्त: सर्वत्र सर्वदा ।
नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमोनमः ।

मैं पञ्जाब राज्य में—उच्च विद्यालय का, अनेकों अभावों से ग्रस्त संस्कृत अध्यापक हूं। इसीलिए मेरी यह छोटी सी रचना भी—"वर्ष द्वय रहि मम गृह कोना, जैसे परम कृपन कर सोना ॥"

अब कुछ देश-भक्त, संस्कृति एवं संस्कृत के अनुरागी सज्जनों द्वारा प्रेरित तथा प्रोत्साहित इस प्रकाशन के गुरुतर कार्य में प्रवृत्त हुआ हूँ।

बड़ी ही शुभ-भावनाओं से चुन चुन कर कोषों में रखे हुए, भी इन शब्द-पुष्पों को अपने इष्ट स्थान पर पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ था, यदि मेरे कृपालु, सहृदय, सज्जन मित्र, सहयोगी एवं सहायक न बनते। सो मैं इन आदरणीय महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए अनन्त-शक्ति भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि इन के मन में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के पुनीत स्रोत, संस्कृत' के प्रति श्रद्धा प्रेम तथा शुभ कार्यों में सहयोग की सामर्थ्य भी निष्काम भावनाओं के साथ दिन दिन बढ़ती रहे।

जिन पूज्य समादरणीय, पुण्य विभूतियों ने शुभाशीर्वाद तथा बहुमूल्य सम्मतियें देकर कृतार्थ किया है, उन्हें अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक प्रणाम करता हूँ।

पुस्तक में दिये हुए चित्रों तथा नामों वाले सज्जनों के सद्भावों की पुण्याहुतियों के आश्रय से ही इस पुस्तक-प्रकाशन रूपी यज्ञ-कुण्ड से उठी पुण्य-पुञ्ज धूम-राशि विमत-विषाक्त विश्व को निर्विष, निर्दोष तथा सौरभान्वित करने में समर्थ होगी।

मान्यवर सहयोगी-वर्ग में मैं कुछ के नाम सादर लिख रहा हूँ :—

श्रीमन्त श्री त्रिभूषित परम पूज्य दादा जी श्री स्वामी वर्ण प्रकाश जी, पूज्य श्रद्धेय श्री प० माधुरामजी शास्त्री, दर्शनाचार्य, आराध्यगं-पूज्य प० श्री-काशीराम जी आयुर्वेदाचार्य, श्री मुकन्दीलाल जी शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, आयुर्वेदाचार्य, श्री ओम प्रकाशजी शास्त्री, एम० ए०, बी० टी०, श्री जगन्नाथ जी शास्त्री, ओ० टी०, श्री प० किशोरी लालजी शास्त्री, श्री वैद्य

धन्नू राम जी आयुर्वेदाचार्य, श्री पं० हरिदेव जी शास्त्री, वेदान्ताचार्य, श्री पं० मोहन लाल जी कालिया, एम० ए०, एल० एल० बी०, एम० पी० (राज०) प्र० अ० श्री सदानन्द जी, एम० ए०, बी० टी०, प्र० अ० श्री स० महेन्द्रसिंह जी, एम० ए०, बी० टी०, प्र० अ० श्री स० बलीर सिंह जी, एम० ए०, बी० टी०, श्री स० जानकी दास जी, श्री स० पञ्चम दास जी, श्रीमती दुर्गादेवी, धर्मपत्नी, मेजर डा० लालचन्द जी अग्रवाल, श्रीमती शकुन्तला देवी, धर्मपत्नी श्री दरबारी लाल जी एडवोकेट, प्रधान स० ध० कॉलेज, बरनाला, श्रीमती यशवन्त कौर, धर्मपत्नी, श्री स० हरनामसिंह जी आहलुवालिया, श्रीमती कला-देवी धर्मपत्नी, श्री प० ओम् जी अत्रि, ज्योतिषी, श्री डा० सन्तोषसिंह जी, श्री स० गुरु देवसिंह जी आहलुवालिया, पञ्चायत ऑफीसर, पंजाब, श्री मा० प्यारा-लाल जी, श्री ला० रामचन्द ऊधोराम जी, श्री नारायण दत्त जी, श्री जगदीशचन्द जी जौहर, भाई शान्ति लाल जी वनमाली सेठ, श्री पं० मुलखराज जी होजरीवाले, श्री बलदेव कृष्णजी जिन्दल एम०, ए० ।

अन्त में—इतना सक्रिय सहयोग होते हुए भी, इस पुस्तक के सम्पादन-कार्य को—अनेकों हिन्दी-अंग्रेजी गद्य-पद्य मय पुस्तकों के लेखक श्रद्धेय श्री ब्रह्मदेव जी शास्त्री विशेष व्यस्त रहते हुए भी, यदि अपने हाथ में न लेते तो दिल्ली पहुँच कर भी मेरे लिए दिल्ली दूर ही थी। ऐसी अवस्था में उन्हीं के कार्य के लिए मैं उनका हार्दिक धन्यवाद करते हुए अत्यन्त आभारी हूँ।

इन सज्जनों के पवित्र आश्रय होने पर भी यदि किसी पारदर्शी त्रिकालज्ञ महानुभाव को इस रचना में मेरी कवित्व-कामना, रचना-रुचि, एवं सामर्थ्य भावना की गन्ध आ जाय तो वहां पर तो केवल यही कहना युक्ति-संगत होगा कि—

दीप्यन्तं भास्करं श्रुत्वा खद्योतोऽप्याह गर्वितः ।
लोका मामपि पश्यन्तु सुप्रकाशमति द्युतिम् ॥

अर्थ—चमकते हुए सूर्य के तेजस्वी रूप की प्रशंसा सुन कर, अभिमान में आया हुआ जुगनू भी कहने लगा कि ऐ लोगो! आप मेरे सुन्दर प्रकाश एवं विशेष चमक वाले रूप को भी ध्यान से देखें!

ओ३म् नमोऽस्तु सर्व-विद्वद्भ्यः ।



लेखक (मध्य में) के साथ वैद्यराज श्री तोता राम (दायें), मिलखी राम चा आयुर्वेद मास्टर, भारती-भूषण धन्वन्तरि लाल सेठ औषधालय बरनाला मण्डर (बायें) पीछे चि० कुलदीपचन्द खड़े हैं।

आप आरम्भ से ही दयालु उदार, इस महान परम्परा भारतीय संस्कृति के मूल आधार संस्कृत के अनन्य उपासक और भक्त हैं। आपके सुपुत्र श्री ... आयुर्वेदिक प्रयोगों द्वारा ... जिनमें तथा अन्य अनाथ ... सेवा कर रहे हैं।

परम आदरणीय सर्वपूज्य तपोनिष्ठ श्री १०८
आत्मारामा कृष्णानन्दजी महाराज
उदासीन उदांग

आप ५० वर्षों से निरन्तर देश-सेवा समाज सुधार एवं अपने अचूक दिव्य आयुर्वेदिक प्रयोगों से दीन दुःखी रोगियों के उद्धार में संलग्न हैं। असहाय रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा के साथ अन्य उपयोगी सहायता भी देते हैं।





दानवीर श्री सेठ
छगनलाल जी, प्रधान
धा० स० स० ध०
गीता भवन समिति,
बरनाला (संगरूर)

आप सच्चे प्रभु भक्त देश सेवक विद्यानुरागी भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत के उपासक हैं। विश्वशान्ति के लिए आप अनेकों बड़े बड़े यज्ञ करा चुके हैं तथा प्रति वर्ष कराते रहते हैं।

श्रद्धेय स्व० पण्डित सन्त राम जी वैद्य-भूषण, बरनाला (संगरूर)

आपने आजीवन आयुर्वैदिक सिद्ध प्रयोगों द्वारा दीन-दुःखी, अनाथ रोगियों की सेवा की है। आपके ही अमृत-वर्षी योगों द्वारा आपके सुयोग्य पुत्र वैद्य श्री राकेश कमल जी तथा श्री मोहनलाल जी जन-सेवा कर रहे हैं।





श्री आत्माराम जी, चक्षु-रोग-विशेषज्ञ, मीरथी (बठिंडा)

आपने लाखों आंखों की रक्षा कर, अमित यश एवं पुण्य उपार्जन किया है। आप विशेष उत्साही, दयालु, देश-सेवक तथा विद्यानुरागी कार्यकर्ता हैं। पंजाब में आंखों के सफल चिकित्सकों में आपका नाम आदर से लिया जाता है।

श्रद्धय श्री प० भक्तराम जी प्रधान ब्राह्मण सभा बरनाला (सगरूर)

आप भृगु महिमा की चम कारी विद्या द्वारा न केवल भारतीयो को ही अपितु अनेकों विदेशियो को भी भ्रम के समाधान कारक फला देश से भारत एव भारतीय सस्कृति के अन य उपा सक बना चुके है ।





श्री पवन कुमार जी वासल प्रधान श्री कृष्णसकीतन मण्डल बरनाला (सगरूर) ।

आप विशेष उ साही देश धम सस्कृति एव सस्कृत क सेवक समाज सुधारक तथा विद्यानुरागी नवयुवक है । धार्मिक प्रचार कार्यों म आपकी लगन सराहनीय है कि।। व लगता म आपक ग ा म अगीम श्रद्धा भक्ति और गरा भावना का उत्प होता है ।